www.kobatirth.org

For Private And Personal Use Only

श्रीमद बुद्धिसागरजी ग्रन्थमाळा–ग्रन्थाक३५ くんうらんりょうしゅう जैनाचार्य श्रीमद बद्धिसागरजी सरीश्वर. प्रगटकत्ती पादरानिवासी वकील मोहनलाल चंदनी स्हायथी. श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ. (चंपागली-मुंबइ.) हा, लल्खभाइ करमचंद दलाल, दितीयावृत्ति. नकल, ५०० वीराव. २४४२ विकम सं. १९७२ सने १९१६ किंगत. ०–४−० からっとんりょくん

ભાવનગર–શ્રી આનંદ પ્રિન્દીંગ પ્રેસમાં શા. ગુલાયચંદ લલ્લુભાઇએ છાપ્યું.

निवेदन.

जिनेश्वर कथित शास्त्रोनो पार पामर जीवो पामी शके तेम नथी तेमां पण (१) गणितानु योग (३) चरणकरणानु योग (३) कथानुं योग अने (४) द्रव्यानुं योग ए चारे विभागमां द्रव्यानुयोगनो सर्वथा प्रकारे पार तो कोइक ज्ञानी विरल्ण पामी शके छे. आ विषयमां उंडा उतरवुं अने आत्माने आत्मस्व- रूपे अवलोकी, कैवल्य ज्ञान मगटाववुं ए घणुंज विकट कार्य छे. तेमां पण वर्त्तमान समये तथा प्रकारना ज्ञाननी रुचि यवी एतो महा पुण्यवंतनुं लक्षण जाणवु.

द्रव्यानुयोगना अनेक प्रन्थो छे ते सर्वनुं

व्यवसायी मनुष्यो वाचन, मनन करी शकता नथी. तेओने आ छघु ग्रन्थ वहे 'षह्द्रव्य ' नो अभ्यास थाय ते माटे सास्त्रविशारद गुरु-वर्य श्रीमद् बुद्धिसागर नीस्त्री श्वरे सं. १९५८ नी सालमां पादरा गामे आ ग्रन्थ रच्यो हतो अने तेने वकील मोहनलाल हेमचंदे पोते भगट कर्यो हतो. आ ग्रन्थनी पथम आदृत्ति खलास थवाथी अने अभ्यासीओने ते उपयोगी होवाथी फरीथी वकील मोहनलाल हेमचंदनी द्रव्य साहाय्यथी मंडलने ग्रन्थमालाना ३५ मा ग्रन्थ तरीके पगट करवानो शुभ प्रसंग मल्यो छे.

पथम आद्वाति करतां केटलेक स्थळे श्री-मदे स्वहस्ते सुधारो बधारो कर्यो छ अने तेमां पण खास करी समिकतितुं स्वरूप विशेष पकारे आलेख्युं छे. 4

आ छघु ग्रन्थ उपयोगी प्रसंगे पासे रही शके ते माटे आवी नानी साइझ राखी छे, अने २४० पृष्ट थवा उपरांत, कागळो वगेरेनी मोंघ-वारी छतां-मात्र ०-४-० नी किम्मत राखी छे.

आ प्रन्थमां द्रव्यना षद् भेद, तेना गुणो, तेना पर्याय, तेनुं स्वरुप, तेना क्षेत्र क्षेत्री, परमाणुओना भेद, वर्गणा, आत्मानुं नित्यपणुं, अनित्यपणुं, उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव शी वस्तु हे, ज्ञानना प्रकार—भेद—व्यवहारज्ञान अने निश्चयज्ञान, कर्मना प्रकार, तेनो कर्चा, कारण, द्रव्यना पक्ष, सप्तनय, प्रमाण, सप्तभंगीनुं स्वरूप ध्यानना प्रकार, वार भावना, अने समिकतनुं स्वरूप वगेरे वाबतो उपर विवेचन घणीज उत्तम अने सरळ रीते कर्यु हे, तेनो द्रव्यानुयोगना अभ्यासीओ पोते उपयोग करशे अने

Ę

बीजाओने ते मार्गे पेरशे, एवी आशा पूर्वक आ ग्रन्थना मगटार्थे द्रव्यनी स्हाय करनार व-कील मोहनलाल हेमचंदने धन्यवाद आपी विरमीए छीए.

मुंबाई.) छी. चंपागळी, अध्यात्म ज्ञानप्रसारक जेष्टवदि११) मंडळ.

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ.

(સ્થાપન–જ્ઞાનપંચમી–વીર સંવત્ ૨૪૩૫)

જો તમારે તત્વજ્ઞાનના ઉત્તમ સિહાંતા, સરલ અને પ્રીય શૈલીમાં સમજવા હાય અને પાતાનું હુદય નિર્મળ બનાવવું હાય, તાે મંડળ તરફથી પ્રગટ થયેલ:—

શ્રીમદ્ બુદ્ધિસાગરજ ગ્રન્થમાળા અવશ્ય વાંચા.

મજકુર બ્રન્થમાળામાં નીચલા બ્રન્થા પ્રગટ થયેલ છે, જે વાંચી, મનન કરી, તમારા આત્માને હ્ર-ચ શ્રેણીએ ચઢાવા. હત્તમ બ્રન્થા એજ અ પૂર્વ સત્સગ છે. ખચીત આ બ્રન્થાના મનનથી લશું જાણવા અને મેળવવા પામસા–ગુરૂશ્રીની લેખનશૈલી–માધ્યસ્થદષ્ટ હોવાથી, દરેક ધર્માવ-

₹

લંખીએા તેને પ્રેમપૂર્વક વાંચે છે. દરેક ગ્રન્થામાં અધ્યાત્મજ્ઞાન અને તત્ત્વજ્ઞાન સંબંધી વિવેચનછે.

વૈરાગ્ય, ઉપદેશક, અને બાધક, પદા–ભજના-તે તે વિષયમાં લિજ્ઞતા કરી નાખે છે. દરેક પદોના સાર વિચારણીય છે. અનેકાન્ત દૃષ્ટિથી, હુદયની વિશાળતાપૂર્વક અને પ્રિય તથા પથ્ય-વાણીથી હરેક જણને ઉત્તમ બનાવી શકાય છે અને તે મુજબ આ ગ્રન્થા છે.

માત્ર વાંચકાના હિતાથે, ઉદાર ગૃહસ્થાની સહાયવંડે, કાેઇપણ બ્રન્થપ્રકાશક મંડળ કરતાં ઓછામાં ઓછી કીંમત રાખવાની પહેલ આ મંડળેજ કરી છે—ઓછી કીંમત છતાં છપાઇ— કાગળ—ખંધાઇ વગેરે કામ સુંદર થાય છે, તદ્દ ઉપરાંત વધુ પ્રચારાથે—પ્રભાવના વિદાર્થીઓને ઇનામ, અને ભેંટ આપનાર માટે વધુ નકલા મંગાવનારને (શીલીકમાં હાેય તાે) બની શકતી એછી કીંમતે આપવામાં આવે છે.

3

જેઓને પ્રગટ થઇ ચુકેલા અને થવાના ગ્રન્થા પૈકી, કાઇપણ ગ્રન્થા પાતાના મુરુખી કે સ્નેહી અને ઉપકારીઓના સ્મરણાર્થ, પ્રગટ કરવાને ઇચ્છા હોય તેમને તે મુજબ મંડળ સગવડ કરી આપે છે.

પત્ર વ્યવહાર–મુંબઇ–ચંપાગલી, વ્યવ-સ્થાપક–**શ્રી અ^દયાત્મન્નાનપ્રસારક માંડળ** જોગ કરવા.

ગ'થાંક.

પૃષ્ઠ. રૂ. આ. પા.

૧ क લજન સંગ્રહ ભા ૧ લા. २०० ०-८-० ૧ અધ્યાત્મ વ્યાખ્યાનમાળા.. ૨૦૬ ૦-૪-૦ ૨ ભજનસંગ્રહ ભાગ ૨ જો... ૩૩૬ ૦-૮-૦ ૩ ભજનસંગ્રહ ભાપ ૩ જો... ૨૧૫ ૦-૮-૦

૪ સમાધિ શતકમ્	380 o-5-0
પ અનુભવ પ [િ] ચશી	२४८ ०-८-०
६ આત્મપ્રદીપ	394 0-८-0
૭ ભજસંગ્રહ ભાગ ૪ થાે	308 0-6-0
૮ પરમાત્મદર્શન	४३२ ०-१२-०
૯ પરમાત્મજયાતિ	५०० ०-१२-०
૧૦ તત્ત્વબિંદું	230 0-8-0
૧૧ ગુણાનુરાગ (આવૃત્તિ બીજી)	२४ ०-१-०
૧૨–૧૩ ભજનસંગ્રહ ભાગ પ	•
મા તથા જ્ઞાનદિપીકા	१८० ०-६-०
૧૪ તીર્થયાત્રાનું વિમાન (ચ્યા-	
વૃત્તિ ખીજી)	६४ ०-१-०
૧૫ અધ્યાત્મ ભજનસંગ્રહ	१६० ०-६-०
૧૬ ગુરૂએાધ	१७२ ०-४-०
૧૭ તત્ત્વજ્ઞાનદિપીકા	
૧૮ ગહુંલીસંગ્રહ	११२ ०-3- ०

પ

૧૯ શ્રાવક ધર્મસ્વરૂપ ભાગ ૧
લેા (આવૃત્તિ ત્રીજી) ૪૦ ૦–૧–૦
૨૦ શ્રાવક ધર્મસ્વરૂપ ભાગ ૨
જો (આવૃત્તિ ત્રીજી) ૪૦ ૦–૧–૦
ર૧ ભજન પદસંગ્રહ ભાગ ૬ ફ્રો. ૨૦૮ ૦-૧૨-૦
રર વચનામૃત ૩૮૮ ૦-૧૪-૦
ર૩ ચાેગદ્દીપક ૨૬૮ ૦-૧૪-૦
૨૪ જૈન ઐતિહાસિક રાસમાળા ૪૦૮ ૧–૦–૦
૨૫ આનન્દઘન પદસંગ્રહ ભા-
વાર્થસહિત ૮૦૮ ૨–૦–૦
ર¢ અધ્યાત્મ શાન્તિ (અા-
વૃત્તિ
રહ કાવ્યસંગ્રહ ભાગ ૭ માે ૧૫૬ ૦–૮–૦
ર૮ જૈનધર્મની પ્રાચીન અ ને
અર્વાચીન સ્થિતિ ૯૬ ૦–૨–૦
ર૯ કુમારપાલ ચ રિત્ર (હિંફી) ૨૮૭ ૦– ६ –૦

ξ

૩૦. ૩૧. ૩૨. ૩૩. ૩૪. સુખસા-ગર ગુરૂગીતા તથા પટ્ટાવ-લીસહ ગુરૂચરિત્ર વિભાગા. ૩૦૦ ૦–૪–૦ ૩૫ ષડ્દ્રવ્ય વિચાર (દ્વિતીયાવૃત્તિ)૨૪૮ ૦–૪–૦





થન્થો નીચલા સ્થળોથી વેચાણ મળશે.

- ૧. અમદાવાદ–જૈન બાેડીંંગ ઠે. નાગાેરીશરાહ.
- ર. મુંબઇ–મેસર્સ મેઘજ હારજની કું. ઠે. પાયધુણી.
- રૂ. ે, શ્રી અધ્યાત્મજ્ઞાનપ્રસારક મંડળ દે. ચંપાગલી.
- ૪. પુના–શા. વીરચંદ કૃષ્ણાજી ઠે. વૈતાલપેંઠ.





॥ ॐ नमः ॥

षड्द्रव्यविचार.

मङ्गलम्

नमो अरिहंताणं. नमो सिद्धाणं. नमो आ-रियाणं. नमो उवज्झयाणं. नमो लोए सन्व साहृणं. एसोपंचनग्रुकारो. सन्व पावप्पणास-णो. मंगलाणंच सन्वेसिं. पढमं हवइ मंगलम्

दुहा.

ब्राह्मी भगवती भारती, प्रणमी तेना पाय जिनवाणीना चार भेद, अनुयोगे करी थाय।१।

(२)

गणित चरण करण कथा, द्रव्य ए चार उदार; द्रव्य ए चारमां सार्छे, धरतां भवजल पार २ अति गहन द्रव्यानुयोग, उदाधि सम कहे जिन तेनो लेश हुं वर्णवुं, अति उत्कंटित दीन ३ भाग्यदशा जो आकरी, सदगुरु करुणा होय निर्मळ बुद्धयादिकथी, समजे विरलो कोय ४ योग्य जीवने एहनो, लागे मनमां रागः सम्पतिग्रंथे भाखीयं, ते साधु महा भाग ५ उदासीनता संपजे, धरतां एहतं ध्यान निर्मेल थावे आतमा. पामे केवलज्ञान द्रव्यतणा षडु भेद छे, धर्माधर्म विचार आकाश पुद्गल कालने, आतम ए मनोहार ७ पंच धुर ते हेय छे, आतम उपादेय गुण पर्याय छे तेहना, भविजन ने हेय हेय ८

(३)

पूर्व प्रणीत ग्रंथोद्धि, सम्मत्यादिक सार तेहनो लेश लही करी, वचन वदुं धरी प्यार ९ पंडितजन सुदृष्टिथी, देखे जो आ ग्रंथ सार विचारी धारीने, पामे शिवपुर पंथ १० दुर्जन देखी दोषने, मनमां माने हर्ष पंडित जन करें पारखुं, माने ते उत्कर्ष ११

आ चतुर्गति रूप संसारमां आत्मा अना-दि कालथी परिश्रमण करे छे, अने कर्मना योगे जन्म जरा मरणादिरुप दुःख भोगवे छे. कर्मना संयोगथी एकेंद्री वेरेंद्री तेरेंद्री चौ-रेंद्री अने पंचेंद्रीपणुं पामे छे. दश दृष्टांते दु-र्लभ मनुष्य जन्म पामीने पण श्रावककुल, सद्गुरु समागम, जिनवाणीनुं श्रवण तेनी सद्दृणा अने ते प्रमाणे वर्तवुं ए आदि उत्त-रोत्तर दुर्लभ छे.

(8)

ज्यां सुधी आत्मातुं शुद्ध स्वरूप ओ-ळलातुं नथी त्यांसुधी शुद्ध सदद्दणा थती नथी.

श्री जिनेश्वर कथीत वाणी सांभळवाथी आत्मानुं स्वरूप यथातध्य स्यजायछे, माटे ज्ञाननो घणो खप करवो ज्ञान विना जीव अजीव आदि पदार्थनुं सम्यक् ज्ञान थतुं नथी आत्मा नित्य केवी रीते छे; अनित्य केवी रीते छे; अतित्य केवी रीते छे; उत्पाद व्यय अने ध्व शी वस्तु छे तेनुं ज्यां सुधी ज्ञान थतुं नथी, त्यां सुधी जीव सम्यक् वस्तु जाणी शकतो नथी, अने हेय ज्ञेय अने उपादेय पण जाणी शकतो नथी सम्यक् वस्तुना ज्ञान थकी सम्यक्त्व माप्त थाय छे, माटे ज्ञाननी आवश्यकता छे.

ज्ञानना पण वे भेद छे १ व्यवहारज्ञान २ निश्चयज्ञानः

(4)

व्यवहारज्ञान-एटले अलंकार, व्याकरण, अन्य मतियोना ग्रंथ तथा गणितानुयोग,क-थानुयोग, चरणकरणानुयोगनुं जाणपणुं, ए सर्व व्यवहार ज्ञान छे. तथा उपयोग विना सूत्र सिद्धांतना अर्थ करवा ए पण व्यवहार ज्ञान छे. हठ समाधि ते पण व्यवहार ज्ञानछे. एमांथी मुक्ति मळती नथी, पण आत्माना स्वरुपनुं सम्यक् जाणवुं, षड् द्रव्यना गुण प-र्यायनुं जाणवुं,उत्पाद व्यय अने ध्रुवनुं जाणवुं, ते थकी निश्रय ज्ञान पूर्वक मुक्ति थाय छे. पांच द्रव्य त्याग करवा योग्य छे. एमां आ-त्मानी वस्तु कंइ नथी, ए पांचमां पण पुद्-गल द्रव्यना संयोग संबंधे आ परवस्त पोतानी मानी बेठो छे. पण वस्तुतः ते पोतानी नथी. ज्ञान वस्तु आत्मानी छे.

(६)

अनंत्ज्ञान, अनंत दर्शन, अनन्त चारित्र अने अनंत वीर्यनो भोक्ता आत्मा अरुपी असंख्य प्रदेशमयी छे. तेनुं जे ज्ञान तेने निश्चय ज्ञान कहे छे.

आत्मा वस्तु अनादि अनंत छे, तेने अ-नादिथी कर्मनो संयोग थयो छे, तेथी दुःखी थाय छे. भवी साथे कर्मनो संबंध अनादि सांत भांगे छे. अभवी साथे कर्मनो संबंध अनादि अनंतमे भांगे छे.

कर्मना आठ प्रकार छे-ज्ञानावरणीय, द-र्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम,गोत्र,अने अंतराय एम आठ कर्म छे, तेनी उत्तर प्रकृति १५८ छे. ते कर्मरूप जड वस्तु-नो प्रपंच विचित्र छे. जेम ब्राह्मीरूप जड औ-

(9)

वधिना भक्षण थकी ब्राद्धिनुं स्फ़रायमान पणुं थाय छे. तेम कर्म वस्तु जे जडरुपे छे, तेना संबंध थकी आत्मा विचित्र आकारे देखाय छे, अने जुदा जुदा प्रकारनां शरीरने धारण करे छे, तेम पांचइंद्री, मन, वचन अने काय-रुप पुद्गल वस्तुने धारण करे छे, ए सर्व कर्मना प्रपंच छे, ए कर्म पुद्गलास्तिकाय छे. जड छे. सक्रिय छे, तेमां आत्मापणुं नथी, एम ज्यारे ज्ञान थाय छे त्यारे तेनाथी मोह उतरे छे. पड् द्रव्यन्नं ज्ञान थवाथी स-मिकतनी प्राप्ति थाय छे ते षड् द्रव्य टेखाडे छे.

(१) धर्मास्तिकाय (२) अधर्मास्ति-काय (३) आकाशास्तिकाय (४) पुद्गला-

(6)

स्तिकाय (५) काळ (६) जीवास्तिकाय-ए छ द्रव्य शाश्वतां छे.

ए छ द्रव्यना अनुक्रमे गुण कहे छे.

१ धर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरुपी (२) अचेतन (३) आक्रिय (४) गतिसहाय

२ अधर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अ-रुपी २ अचेतन (३) अक्रिय (४) स्थितिसहाय

३ आकाशास्तिकायना गुण ४ (१) अ रुपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) अव-गाइनादान

४ पुद्गलास्तिकायना गुण४ (१) रुपी (२) अचेतन (३) सक्रिय (४) मिल्रण विख-रण पूरणगळन

५ कालद्रव्यना गुण ४ (१) अरुपी

(9)

(२) अचेतन (३) अक्रिय (४) मवापुराण वर्तना लक्षण

६ जीवद्रव्यना गुण ४ (१) अनंतज्ञान (२) अनंतदर्शन (३) अनंतचारित्र (४) अ-नंतवीर्य ए छ द्रव्यना गुण कह्या ते नित्य ध्रुव रुपे छे.

छ द्रव्यना अनुक्रमे चार चारपर्याय कहेछे.

१ धर्मास्तिकायना (१) खंध (२) देश

(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु

२ अधर्मास्तिकायना (१) खंध (२) देश

(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु

३ आकाशास्तिकायना(१) खंध (२) देश

(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु

८ पुद्गस्र द्रव्यना (१) वर्ण (२) गंध

(? 0)

३ रस (४) स्पर्श (अगुरुल-घु सहित)

५ कालद्रव्यना (१) अतीत(२)अनागत (३) वर्तमान(४)अग्ररु लघ

६ जीवद्रव्यना (१) अन्यावाध (२) अनवगाह (३) अमृतिक (४) अगुरु छत्रु ए छ द्रव्यना छ पर्याय कह्या.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्यायनुं साध-म्येकहे छे.

अगुरु लघु पर्याय छए द्रव्यमां सरखो छे. अरुपी गुणे करी पांच द्रव्यनुं साधम्ये छे. एक पुद्गल द्रव्यमां अरुपी गुण नथी. का-रण के पुद्गलद्रव्य रुपी छे. तथा अचेतन गुणे करी धर्मास्तिकायः अधर्मास्तिकायः आ-

(? ?)

काशः पुद्गल अने काल ए पांच द्रव्यतुं सा-धर्मिपणु छे. जीवद्रव्यमां अचेतन गुण नथी. 'चेतनालक्षणोजीव इति वचनात्' साक्रियगुणे करी जीव तथा पुद्गल ए वे द्रव्यनुं व्यव-हारथी साधम्ये छे. कर्म थकी रहीत सिद्ध जीवोमां सक्रिय गुण नथी, बाकीना चार द्रव्यमां सिक्रय गुण नथीः गति सहाय गुण एक धर्मास्तिकायमां छे. बाकीना पांच द्रव्य-मां नथी, स्थिति सहाय ग्रण एक अधर्मा-स्तिकायमां छे, बीजा पांच द्रव्यमां नथी. तथा अवगाहना गुण ते एक आकाशास्ति-काय द्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां न-थी. वर्तना गुण एक काल द्रव्यमां छे, बीजा पांच द्रव्यमां नथी, मिल्रण विखरण गुण पु-द्गळ द्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां नथी,

(१२)

तथा ज्ञानना गुण ते एक जीवद्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां नथी. ए मूल गुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मळता नथी.

एक धर्मास्तिकाय, वीजो अधर्मास्ति-काय, त्रीजो आकाश, ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण तया चार पर्याय सरखा छे, अने अरुपी, अचेतन, अकिय ए त्रण गुणे करी काल द्र-व्य पण ए समान छे.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्याय स्वरूप जाणवाने सूत्रपाट गाथा कहे छे.

्परिंणामि जीर्वे ग्रुचौ सपएसीं एंगे खिर्तं किरिआयँ ।। र्णिचं कारणे कर्ताः सव्वर्गये इयैरे अप्पैवेसे ।। १ ।।

अर्थः नयानिश्चये छए द्रव्य परि-

(१३)

णामी छे. कारण के धर्मास्तिकाय पोतानामां निश्चयनये परिणमी रह्यं छे, पण बी-जा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी. बीजुं अ-धर्मास्तिकाय द्रव्य पण निश्चयनये पो-ताना स्वरुपमां परिणमी रह्यं छे. पण बी-जा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी, आकाशा-स्तिकाय पण निश्चयनये पोताना रुपमांज परिणमे छे. काल द्रव्य पण निश्चय नये पोताना स्वरुपमां परिणमी छे. पण बीजा पांच द्रव्यमां निश्चयनये परिणमतुं नथी. जो निश्चयनये पुदगल द्रव्यमां परिणमेतो कोइकाले कर्म थकी रहीत थइ सिद्धिपद पामे नही. व्यवहारनये जीवनाटकीयानी पेठे एकेंद्रीः बेरेंद्रीः तेरेंद्रीः चौरेंद्रीः देवताः मनुष्यः तिर्यंचः

(\$8)

नारकी. अने सम्रार्छिप पंचेंद्रीरुप नवा नवा पुदगलना वेष पेहेरी नवां नवां नाम धरावी आत्मभान भूल्यो छतो चार गतिरुप सं-सार नगरना चोराशीलाख चउटामां अना-दिकाळथी अनेक दुःख सहन करतो भमतो फरे छे. ए रीते आ जीव कर्मरुप पुदगलमां परिणम्यो छतो भटक्या करे छे. परंतु नि-श्रयनये जीव सदा शाश्वतो छे, अने सत्ताए सिद्ध समान छे. व्यवहारनये जीव अने पुदगल ए वे द्रव्य परिणामी छे. तथा पुदगलास्तिकाय द्रव्यना पण निश्चय परमाणुआ सर्व पोताने स्वभावे रह्या छे, अने व्यवहार नये परमाणुआ मली खंध थाय छे, पण जो निश्चयनये खंध थातो होत तो कोइ

(१५)

काले ए खंध विखराइ जात नहीं. सदा का-ल खंध भावेज रहेत. परंत तेमतो रहेता नथी, माटे व्यवहारनये पुदगलना माणुञा मळी खंघ थाय छे. अने पाछा खंघ विखराइ पण जाय छे. निश्चयनये परमाणु-आओ पोतपोताने स्वभावे सदा शाखता छे. पण कोइ काले वधशे घटशे नहीं. बाळ्या बळशे नहीं, गाळ्या गळशे नहीं. ए रीते ए छ द्रव्य निश्चयनये पोतपोताने स्वभावे परिणामिक जाणवां, व्यवहार नये धर्मः अधर्मः आकाशः अने काल ए चार द्रव्य अपरिणामी छे. अने जीव तथा पुद्रगल ए वे द्रव्य परिणामी छे. केमके व्यवहार नयने मते जीव समये समये अनंतां कर्मरुप वर्ग-णानां दळीयां ले छे, अने समये समये अनंतां

(१६)

कर्मरूप वर्गणानां दळीयां खेरवे छे. पण जो नि-श्रयनये कर्मनुं ग्रहण जीव करतो होय तो कोड काले कमेथकी रहीत थाय नहीं. आत्मा राग अने द्वेषे परद्रव्यमां रिणमे छे, रागद्वेष रुप मोहनी अञ्चद्धताए पुदगल परमाणुआना स्कंधोने ग्रहण करे छे अने मनुष्य देवता नारकी तथा तिर्यंचना शरीर रूप खंध प्रते नीपजावे छे. ते खंध स्थिति प्रमाणे रहे छे, वळी पाछा खेरवे छे. वळी बीजा परमाणुआओने ग्रहण करी नवा शरीर रूप खंधने नीपजावे छे. केटलाएक पुर्गल परमाणुआ स्कंधरूपकर्मने ग्रहण करी पाछा खेरवे छे, एम व्यवहार नये अनादि काळथी जीव पुर्गलने परिणमनपणानी घ-टमाल समये समये चाली रही छे. शुभपु-

(१७)

द्गलनो संबंध थवाथी जीव सुख माने छे, अने अग्लभ पुद्गलनो संबंध थवाथी जीव दु:ख माने छे, ते पुण्य पापरूप जाणवुं पण ए स्ववस्तु नथी. एम व्यवहार नयथी जीव अने पुद्गल ए वे द्रव्य परिणामी छे.

हवे छ द्रव्यमां जीव द्रव्य अने अजीव द्रव्यनुं स्वरूप बतावे छे, नाणंच दंसणंचेव चरित्तंच तवोतहा, वीरियंजवओ-गोअ एअंजीअस्सलखणं. ॥ १॥

अर्थ-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य अने उपयोग जेनामां होय, तेने जीव कहे छे. अने बाकीनाने अजीव कहे छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशस्तिकाय, पुद्गला-स्तिकाय अने काल, ए पांच द्रव्य अजीव

(१८)

छे. कारण के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप वीर्य अने उपयोगरुप जीवनुं लक्षण तेमनामां नथी. जीव द्रव्य ते जीव छे. 'चेतनालक्षणो जीव इतिवचनात् '

छए द्रव्यमां पुद्गल द्रव्य मूर्तिमंत छे. अने शेष पांच द्रव्य अमूर्त छे. धर्म, अधर्म आकाश, अने काल ए चार द्रव्य अमूर्त छे. धर्म, अधर्म अमूर्त छे. जीवद्रव्यना वे भेद छे. सिद्ध अने संसारी, तेमां सिद्धना जीव अमूर्तिमंत छे. अने संसारी जीवो कर्मी-पाधिथी मूर्तिमंत छे. निश्चयनये जीव अरुपी छे माटे अमूर्ति कहेवाय छे. अने व्यवहारनये करी देवता, मनुष्य, तीर्यंच अने नारकी रुप जीवना पांचसे त्रेसट (५६३)

(१९)

भेद थाय छे, ते सर्वे मूर्तिरुपे जाणवाः व्यवहार नयथी पुद्गल द्रव्यना अनंता पर-माणुआ मळी खंध बने छे, त्यारे नजरे दीठामां आवे छे, माटे एने मूर्त कहेवाय छे. छ द्रव्यना स्वरुपमां मूर्त अमूर्तनो विचार कहो।

हवे समदेशी अने अमदेशीनो विचार कहे छे.

छ द्रव्यमां पांच द्रव्य समदेशी छे, अने एक कालद्रव्य अमदेशी छे, धर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशमय छे. अधर्मास्तिकाय अ-संख्य प्रदेशमय छे. आकाश द्रव्य अनंत प्रदे-शी छे. जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे. जीव द्रव्य अनंता जाणवा. तथा पुर्गल पर-माणुआ (उपचारथी) अनंत प्रदेशी छे,

(२०)

अने एकेक परमाणुआमां अनंता पर्याय रहा छे. परमाणुआ अनंत छे. ए रीते पांच द्रव्य समदेशी छे. अने कालद्रव्य अमदेशी छे, एनो गणित काल तो उत्पाद व्ययरूप पल-टण स्वभावे अटी द्वीप प्रमाणे जाणवो. ए रीते षड् द्रव्यमां समदेशी अने अपदेशीनो विचार कहाो.

षड् द्रव्यमां त्रण द्रव्य एक, अने त्रण द्रव्य अनेक जाणवां. कारणके धर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी, लोकव्यापी एक जाण-वुं. तेमज अधर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवुं. तेमज आ-काशास्तिकाय द्रव्य पण अनंत प्रदेशी लोका-लोकव्यापी एक जाणवुं, एम ए त्रण द्रव्य ते एक कहीए, अने जीव द्रव्य छे ते लोक

(२१)

व्यापी अनंतां जाणवां, ते एकेक जीवना अ-संख्याता प्रदेश छे, अने एकेक प्रदेशे अनं-ति कर्मनी वर्गणाना थोकडा छाग्या छे. तथा जीवथकी रहीत घटपट दंड प्रमुख बीजा पुद्गलना छुटा स्कंध पण अनं-ता छे, माटे जीव थकी पुदगल द्रव्य अनंत-गुणां जाणवां, अने एकेकी कर्म वर्गणामां अनंत पुदगल परमाणुआ रह्या छे ते परमा-णुआ द्रव्य थकी सदाकाळ शाश्वता छे,माटे एकेक परमाणुआमां अनंता उत्पाद व्ययरुप कालना समय अतीतकाले व्यतीत थइ गया, तथा हजी पण अनंता समय आवते काले व्यतीत थाशे, अने परमाणुआ तो तेना तेज सदाकाळ शाश्वता छे. माटे पुद्गलद्रव्य थकी पण काळद्रव्यना समय अनंता जाणवा,

(२२)

ए रीते जीव पुद्गल अने काल ए त्रण अ-नेक कहीए, ए रीते एक अनेकनो विचार षड्-द्रव्यमां कह्यो.

> हवे षड् द्रव्यमां क्षेत्र अने क्षेत्रीनो विचार दर्शावे छे.

छ द्रव्यमां आकाश द्रव्य, क्षेत्र छे अने बाकीनां धर्म, अधर्म, काल, पुद्गल, अने आत्मा, ए पांच द्रव्य आकाश क्षेत्रमां रहे छे, माटे क्षेत्री जाणवां ते केवी रीते रह्यां छे ते बतावे छे. आंखनी पांपणनो एक वाल ग्रहण करीने तेना खंड [भाग] एवा करी एके एक खंडना वे खंड न थाय. एवा स्र-क्ष्म खंड प्रमाणे आकाश क्षेत्र लड़ए, तेटला-मां आकाशना असंख्याता प्रदेश रह्या छे, अने

(२३)

तेटलामां धर्मास्तिकायना असंख्यात पदेश छे, तथा अधर्मास्तिकायना पण असंख्यात प्रदेश छे. अने निगोदीया गोळा पण असंख्याता रह्या छे. ते सर्व पड्या मुकीने तेमांहेलो एक गोळो लहीए ते एक गोळामां असंख्याती निगोद रही छे. ते असंख्याती निगोद पडती मुकीने ते मांहेथी एक छहीए, ते एक निगो-टमां पण अनंता जीव रह्या छे, ते जीवनी गणत्री बतावे छे. अनादि एक अतीतकाल छेडा रहीत. अनंतो काल गयो. अनागत काल ते पण छेडा रहीत छे. ते सर्वेना जेटला समय थाय, तेनी साथे वर्तमान का-लनो एक समय पण गणवो. एटले अतीत अनागत अने वर्तमानकालना जेटला समय थाय, ते सर्वने अनंतगुणा करीए एटलाजीव

(88)

एक निगोदमां रह्या छे. ते सर्व जीव पड्या मुकीने ते मांहेथी मात्र एक जीव लड्ए ते एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे. ते मध्ये एकेका प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणाओं लागी छे. ते सर्व वर्गणाओं पडती मुकीने ते मांहेथी एक वर्गणा लहीए, ते एक वर्गणामां अनंता पुद्गल परमाणुआ रह्या छे. ते बतावे छे.

प्रथम परमाणुआना वे भेद छे. एक छुटा प-रमाणु अने बीजा खंधना. वळी स्कंधना वे भेद छे. एक जीव सहीत खंध, अने बीजा जीव रहीत खंध, ते घटपट दंड प्रमुख अजीव खंध जाणवा. त्यां प्रथम जीव सहित खंधनो विचार छखीए छीए.

वे परमाणुआ भेला थाय ते वारे क्र्य-णुक खंध कहेवाय छे, त्रण परमाणुआ भे-

(२५)

ला थाय, तेवारे ज्यणुक खंध कहेवाय छे, एम असंख्याता परमाणुआ भेळा थाय, त्यारे अ-संख्याताणुक खंध कहेवाय छे, एटला पर-माणुञाना खंध थाय त्यां सुधीना खंध ते सर्वे जीवने ग्रहण करवा योग्य थता नथी. एटला परमाणुआना खंधने कोइ जीव ग्र-हण करी शकतो नथी. परंत अभव्य राशिना जीव चुम्मोत्तरमे बोले छे, ते थकी अनंत गु-णाधिक परमाणुआ ज्यारे भेळा थाय, ते वारे औदारिक शरीरने छेवा योग्य वर्गणा थाय छे. ते औटारिकनी वर्गणाथी अ-नंत गुणाधिक दलीओं जेवारे भेलां थाय तेवारे वैक्रिय बरीरने छेवा योग्य वर्गणा थाय छे. वैक्रियनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय. तेवारे आहारक

(२६)

शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे अने आ-हारकनी वर्गणाथी अनंतगुणााधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय तेवारे तैजस शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. तैजसनी वर्ग णाथी अनंतगुणाधिक दळीयां जेवारे भेळ थाय तेवारे एक भाषाने छेवा योग्य वर्गणा थाय छ तथा भाषानी वर्गणाथी अनंत गुणा-धिक दळीयां भेगां थाय, तेवारे एक श्वासो-च्छ्रासने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. ते श्वा-सोश्वासनी वर्गणाथी जेवारे अनंत गुणा-धिक दळीओं भेगां थाय, तेवारे एक मनने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे, ए सातमी मनो-वर्गणाथकी पण आठमी कार्मण वर्गणामां अनं-तगुणाधिक परमाणुआ स्कंध जाणवा. एवी जीवने रागद्वेषनी अग्रुद्धताथी अनंत कर्मनी

(२७)

वर्गणाओ लागी छे, तेथी जीवना ज्ञानादिक गुण दबाई गया छे. माटे जीव थकी पुदगल द्रव्य अनंत गुणा जाणवा. ते पुद्गलरूपी छे. अचेतन छे. सिक्रय छे. पूरणगलन छे. जीवे अनंती पुद्गल परमाणुआ रुपी अंठ वारंवार ग्रहण करी, तोपण तेथी तृप्ति पामतो नथी. पारकी वस्तु पोतानी मानी बेठो छे. अहो जीव द्रव्य अनंत शक्तिवाळुं छे तेने पु-द्गलद्रव्ये पोताना कबजामां लीधं छे, तेने संगे राच्यो माच्यो छे, माटे परवस्त उपरथी मोह उतारवो, अने पुद्गल द्रव्य अन्य वस्तु जाणी तेनाथी दूर रेहेवुं ए सार छे.

पूर्वे कहेली आठ वर्गणा जीवने अनादि काळथी लागी छे. औदारिक; वैक्रिय; आहा-

(२८)

रकः तेजसः ए चार वर्गणा बादर छे. तेमां पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस, अने आठ स्पर्श ए वीश गुण जाणवा. बाकीनी चार वर्गणा सूक्ष्म छे. तेमां शोल गुण छे. तथा एक परमाणुआमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने वे स्पर्श मळी पांच गुण छे. ते परमाणुआ वधशे घटशे नहीं. छे तेटलाने तेटला रहेवाना. ए प्रकारे जीवनी तथा अजीवनी वेहेंचण करतां धारतां विचारतां समिनितनी प्राप्ति थाय छे.

हवे ए छ द्रव्यमां सिक्रय केटलां अने अक्रिय केटलां ते बतावे छे.

निश्चयनये छए द्रव्य सक्रिय छे. अने व्यवहारनये चार द्रव्य अक्रिय छे, धर्मास्ति-

(२९)

काय, अधर्मास्तिकाय, आकाश द्रव्य, अने काल ए चार अक्रिय छे. जीव अने पुद्गल, ए वे द्रव्य सक्रिय, व्यवहार नये छे. धर्मा-स्तिकाय द्रव्य ते जीव अने पुदगल ए वे द्रव्यने चालवामां सहाय आपवा रूप क्रिया करे छे तथा निश्चयनये अधर्मास्तिकाय जीव द्रव्य अने पुद्गल द्रव्यने स्थिर थवामां सहाय गुणरूप क्रिया करे छे. निश्चयनये आकाशास्तिकाय द्रव्य जीव तथा अजीवने अवगाहना आपे छे. तथा निश्चयनये काल द्रव्य पण जीव अजीवरुप वस्तुमां पोतानी क्रिया करतो जाय छे. तथा निश्चयनये जीव द्रव्य पण पोताना स्वरुपमां रमवारुप क्रिया करतो जाय छे, कारणके जो निश्चय-

(30)

नये शुभाशुभ रुप विभाव दशामां र-मण करवारुप किया करतो होय तो कोइ काळे जीव मोक्ष पामेज नहीं. माटे निश्चय नये तो जीव पोताना स्वरुपमां रमवा रुपज किया करे छे. निश्चय नये पुद्-गल परमाणुआ पण अनादि काळना पो-तानी मळवा विखरवारुप किया करता जाय छे. ए रीते छए द्रव्य निश्चय नये पोत-पोतानी किया करे छे माटे सक्रिय छे.

व्यवहारनये धर्म, अधर्म, आकाश अने काळ, ए चार द्रव्य अक्रिय जाणवां. तथा जीव अने पुद्गळ ए वे-द्रव्य सिक्रय जाणवां. कारणके व्यवहार नयने मते जीव, रागद्वेषस्य अशुद्धताए करी समय समय अ-

(३१)

नंता पुद्गल परमाणुआस्कंधनुं ग्रहणस्प क्रिया करे छे अने पुद्गल परमाणु कर्मस्कंधनो जी-वने वळगवानो स्वभाव छे. पुद्गल परमाणुआ कर्मस्कंधो वलगवारुप क्रिया करे छे. अनादि-काळनां जीव अने पुद्गल ए वे द्रव्य मळवा वि-खरवारुप क्रिया करे छे माटे सक्रिय जाणवां.

हवे ए छ द्रव्यमां नित्य केटलां अने अनित्य केटलां ते बतावे छे. निश्चयनये छए द्रव्य नित्य छे. अने निश्चयनये छए द्रव्य अनित्य पण छे. तथा व्यव-हार नये तो चार द्रव्य नित्य जाणवां, अने बे द्रव्य अनित्य जाणवां. धर्मास्तिका-यना अरुपी, अचेतन, अक्रिय, अने चल्लण सहाय, ए चार गुण, अने पर्यायमां धर्मा-

(३२)

स्तिकायनो एक खंध, ए पांच नित्य जा-णवा. तथा देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा, अधर्मास्तिका-यना पण अरुपी, अचेतन, अक्रिय, अने स्थिति सहाय, ए चार गुण तथा पर्यायमां अधर्मास्तिकायनो खंध. ए पांच नित्य जाणवा अने देश, प्रदेश तथा अगुरु लघ. ए पर्याय अनित्य जाणवा. आकाशा-स्तिकायना अरुपी, अचेतन, अक्रिय अने चो-थो अवगाहना, ए चार गुण तथा पर्यायमां खंध, ए पांच नित्य जाणवा. तथा देश, प्र-देश अने अगुरु छघु, ए त्रण पर्याय आनित्य जाणवा. काळ द्रव्यना अरुपी, अचेतन, अ-क्रिय. अने वर्तना लक्षण. ए चारग्रण नित्य जाणवा. तथा अतीत, अनागत, अने वर्त-

(३३)

मान तथा अगुरुलघु ए चार पर्याय अनित्य जाणवा, पुद्गल द्रव्यना रूपी अचेतने,
सिक्रिय, पुरण गलने मिलन विखरण, ए चार
गुण नित्य जाणवा तथा वैर्ण गंधे रसे अने रूप्त्र
अगुरु लघु सिहत ए चार पर्याय अनित्य जाणवा. जीवद्रव्यना ज्ञान, दर्शने, चारिक्र, अने वीर्य
ए चार गुण, अने अव्यावाध, अमोर्तिक, अनवगाह, ए त्रण पर्याय एम सात नित्य जाणवा. एक अगुरु लघु पर्याय अनित्य जाणवो, ए रीते निश्चयनये करी छ द्रव्य नित्य
पण कहीए, अने अनित्य पण कहीए.

हवे व्यवहार नये धर्म, अधर्म, आकाश, अने काल, ए चार द्रव्य नित्य कहीए. तथा जीव अने पुद्गल ए वे द्रव्य अ-नित्य जाणवां. कारण के व्यवहार नये

(३४)

जीव चारगतिमां जन्म मरणे देवता, मनु-ष्य, तिर्थंच, अने नारकीरुप नवा नवा भव धारण करे छे, माटे अनित्य कहीए. तथा न्यवहारनये पुद्गल द्रव्यना खंध पण सर्व अनित्य जाणवा, कारण के पुद्गल द्रव्यना खंध बने छे, अने पाछा विखरे छे, माटे अनित्य जाणवा. द्रव्यास्तिकायना मते जीव असंख्यात पदेशी नित्य सदाकाल शाश्वतो छे, अने अशुद्ध अनित्य पर्याये जीव अशा-श्वतो जाणवो. कारणके अग्रद्ध अनित्य प-र्याये जीव चार गतिरुप संसारमां उत्पाद **च्ययरूप पलटण स्वभावे वर्ते छे.** ते आवी रीतेमनुष्य भवना पर्यानो व्यय थयो अने देवताना भवना पर्यायनो उत्पाद थयो.वळी तिर्यंच भवना पर्यायनो व्यय थयो. अने म-

(३५)

तुष्य भवना पर्यायनो उत्पाद थयो. एम जीव अशुद्ध अनित्य पर्याये उत्पाद व्ययरूप प-लटण स्वभावे चार गतिरूप संसारमां सदा-काल वर्ते छे, अने जीव एनो ए ध्रुवपणे शा-श्वतो छे, तथा जीवना जन्म मरण थाय छे ते सर्व उत्पाद व्यये थाय छे, माटे द्रव्या-स्तिकनये जीवने नित्य समजवो, अने प-र्यायास्तिक नये करी जीवने अनित्य सम-जवो. ए रीते षड् द्रव्यमां निश्चय व्यवहारे नित्यानित्यपणुं जाणवुं.

षड् द्रव्यमां जीव द्रव्यने पांच द्रव्यका-रण रुप जाणवां, अने जीव द्रव्य अकारण जाणवुं, जेमके जीवकत्तां अने तेने धर्मास्ति-काय कारण मळ्युं, तेवारे जीवने चालवा हालवा रुप कार्य थयुं. तेमज जीवकर्ता अने

(३६)

तेने अधर्मास्तिकाय रुप कारण मछ्युं, ते-वारे जीवने स्थिर रहेवा रूप कार्य नीपज्यं. तेमज जीवकत्ती अने तेने आकाशास्तिकाय कारण मळ्युं तेवारे जीवने अवगाहना रूप कार्य बन्धं. तेमज जीवकर्ता अने तेने प्रद-गलास्तिकाय रूप कारण मळ्युं तेवारे जी-वने समय समय अनंता कर्म स्कंधो लेवा खेरववा रूप कार्य नीपज्युं. तेमज जीव द्र-व्यकत्ती अने तेने काल द्रव्य कारण मळ्युं. तेवारे नवा प्रराणा वर्तनारुप कार्य नीपन्धं. ए रीते षड् द्रव्यमां जीवने पांचे द्रव्य कार-ण पणे जाणवा. अने जीव पोते अकारण छे.

घणी प्रतियोमां संक्षेपे एटलुं छे के छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य कारण छे, वाकीनां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति-

(३७)

काय, पुद्गलास्तिकाय, काल, ए पांच द्रव्य अकारण छे, ए बात पण घणी रीते मळती छे, माटे बहुश्रुत कहे ते खरुं. आगम सार ग्रंथकत्तीनी ध्यानमां तो एम आवे छे के जी-व द्रव्य कारण, अने पांच द्रव्य, अकारण एम संभवे छे.

निश्चयनये छ ए द्रव्य पोते पोताना स्वरुपनां कत्ता छे, अने व्यवहार नये अनेक नयनी अपेक्षाए जोतां तो एक जीव द्रव्य कत्ती, अने पांच द्रव्य अकर्ता जाणवां. ते आवी रीते व्यवहार नयना छ भेद छे. त्यां प्रथम गुद्धव्यवहारनये जीव गुद्ध निर्मल, कर्म थकी रहीत एवं पोतानुं स्वरुप नीपजाववं तेनो कत्ती जाणवो. एटले जे जे (चालु) गुणठाणानुं छोडवुं, अने उपरनां

(₹८)

गुणठाणांनुं स्रेवुं, तेने शुद्धन्यवहारनये कत्ती कहीये. पहेले गुणठाणे अनंतानुबंधिनी चोकडी हती ते खपावी अने चोथे गुणठाणे आव्यो त्यारे जीवने एक समाकित गुण प-काशित थयो. अने अपत्याखानीनी चोकडी खपावी त्यारे पांचम्रं गुणठाणुं प्राप्त करी देशविरति गुण प्राप्त कर्यो. तथा प्रत्याख्या-नीनी चोकडी खपावी तेवारे छट्टे सातमे गुणठाणे सर्वविरति गुण पाम्यो. अगीआ-रमे बारमे गुणठाणे पहोंची रागद्वेष रूप मो-हनीय कर्म खपावी बारमे गुणठाणे घाती-कर्मनो क्षय करी तेरमे ग्रणठाणे केवल-ज्ञान पाम्यो. ए रीते पूर्वनां ग्रुणटाणांत्र छोडवुं, अने उपरनां गुणठाणांतु ग्रहण करवं तेने श्रद्ध व्यवहार नय जाणवो.

(39)

जीव कर्मरुप अशुद्धताने टाळे, अने गुण रुप शुद्धताने नीपजावे, ते जीवमां शुद्ध व्यवहार नय जाणवो

हवे बीजा अशुद्ध व्यवहारनये जीव· मां अज्ञान रागद्वेष, अनादिकाळना शत्रु थइ लाग्या छे, तेथी जीवमां अञ्चद्धपणुं जाणवं. ए अञ्चद्धताए जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दलीआं सत्ताए लागे छे. ए अना-दिकालनी अञ्चद्ध जाणवी. ए अञ्चद्ध व्य-वहारनये जीवकर्त्ता छे तेनं स्वरूप जाणवं. इवे त्रीजा शुभ व्यवहार नये जीव दान.शी-ल, तप, भाव, पूजा, प्रभावना, सेवा, भक्ति साधर्म्यवात्सल्य, विनय, वैयाद्वत्य, उप-कार, करुणा, द्या, यत्ना, मीठं मनोहर व-चन वोलवं, अने सर्व जीवतं रुद्धं चिंतववं

(80)

ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने शुभ क-रणी जाणवी. ए शुभ न्यवहारनये जीव-कत्ती कहीये. चोथा अशुभ ध्यवहार नये जीव क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, क-षाय, हास्य, रित, अराति, भय, शोक, दु-गंछा, निद्रा, चाडी, ममता, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, अने परिग्रह, ए आदि अने-क प्रकारनी जीवने अशुभ करणी जाणवी. ए अशुभ न्यवहारनये जीवकर्त्ता जाणवी.

हवे पांचमा उपचरित व्यवहारनये घर, कुटुंब, परिवार, हाट, वखार,गाम, गरास,देश, चाकर, दास, दासी, वाणोतर, राज्य, वाडी, वन, आराम, कुवा अने सरोवर, ए आदि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोतानाथी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, तेने जीव अज्ञानपणे पोतानी करी

(88)

जाणे छे. तेने मारुं मारुं करतो फरे छे,तेनी हिद्ध देखी खुशी थाय छे, तेनो नाश देखी रहे छे, कुटे छे, शोक करे छे, अने तेने माटे पोताना प्राणनो पण नाश करे छे, तेने पोतानुं मानी तेना कर्जामानी जीव, पापनो अधिकारी पोते थाय छे, ए रीते उपचरित ब्यवहारनये जीवने कर्जा जाणवो.

हवे छहा अनुपचरित व्यवहारनये जीव शरीर आदि परवस्तु, जे पोताना स्वरूपथी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, पण परिणामिक भावे छोली भूतपणे एकठी मली रही छे, तेने जीव पोतानी करी जाणे छे. एवां शरीरने जीव अनंतिवार पाम्यो, अने अनंतिवार ते शरीरनो त्याग कर्यों, तोपण अज्ञानपणे जीव तेने पोतानुं करी जाणे छे, तेने वास्ते अ-

(88)

नेक प्रकारनी हिंसा करे छे, असत्य वचन बोले छे, अदत्त ग्रहण करे छे, पण अंते ते वस्तु पोतानी थती नथी, पणपाप करी जी-व भारे थाय छे. ए रीते अनुपचरित व्यव-हारनये जीवकर्त्ता जाणवोः ए रीते छ प्रकारे व्यवहारनयने मते जीवने कर्त्तापणुं देखाडयुं.

सन्वगयइयर-कहेतां सर्वगत एटले सर्वन्यापी द्रव्य केटलां अने इयर कहेतां देशव्यापी द्रव्य, छ द्रव्यमां केटलां पामीए ते कहे छे.

षड्द्रन्यमां एक आकाशद्रन्य, सर्वे लोकालोकन्यापी छे, अने पांच द्रन्यदेश न्यापी जाणवां, धर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी छोक न्यापी जाणवुं. अधर्मास्ति-

(83)

काय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी छोकव्यापी जाणवुं. तथा कालद्रव्य गणितकाल ते अढी-द्वीपव्यापा जाणवुं. तथा जीवद्रव्य पण छो-कव्यापी जाणवुं, तथा पुद्गलद्भव्य पण लोक व्यापी जाणवुं. अकेक जीवने, सत्ताए अ-नंता कर्मरूप पुद्गल परमाणुआ स्कंघ ला-ग्या छे. तथा ते: थकी बीजा छटा छोक-व्यापी पुद्गल परमाणुआस्कंध पण अ-नंता छे. ते सर्वे लोकव्यापी छे. ए रीते ए पांच द्रव्य देशव्यापी जाणशां. अने एक आ-काशास्तिकाय द्रव्य. अनंत प्रदेशी. सर्वव्या-पी जाणवुं. ए रीते छ द्रव्यमां सर्वव्यापी त-था देशव्यापीनुं स्वरूप जाणवुं.

छ ए द्रव्य अप्पवेसा-अपवेशी एटले कोइ द्रव्य बीजा द्रव्यमां प्रवेश करी भळी

(88)

जता नथी, अने एक बीजानुं कोइकोइनुं काम पण करतां नथी. जेम कोइ दुकान उपर पां-च वाणोतर रहेता होय ते सर्व पोतपोतानुं कार्य फरमाव्या मुजब कर्या करे, अने सहु सहुनी मर्यादामां चाले, तेम लोकमां छ द-व्य भेळां रह्यां छे. छ द्रव्य पोतपोतानी म-र्यादामां वर्ते छे, पण निश्चयनये कोइपण बी-जामां मांहेमांहे भळतां नथी, माटे अपवेशी-जाणवां. एरीते पड द्रव्यनुं स्वरूप बार भांगे भव्य जीवोए जाणवुं.

हवे एकेका द्रव्यमां आठ पक्ष कहे छे. आठ पक्षनां नाम-एक निर्देय, बीजो अनिर्देय, त्रीजो एक, चोथो अनेक, पांचमो सँत, छठो असँत, सातमो वक्तव्य, आठमो अवक्तव्य.

(84)

धर्मास्तिकायना चारगुण नित्य छे. तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो एक खंध नित्य छे. वाकीना देश, १देश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. अधर्मास्तिकायना चार गुण, तथा एक लोकप्रम∤ण खंध नित्य छे. अने बाकीना त्रण पर्याय आनित्य छे. आ-काशास्तिकायना चार गुण, तथा लोकालोक प्रमाण खंध नित्य छे, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे.का-लद्रव्यना चारगण नित्य छे अने चार प-र्याय आनित्य छे. पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य छे, अने चार पर्याय अनित्य छे. जीव द्रव्यना चार गुण, अने त्रण पर्याय नित्य छे, अने एक अगुरु लघु पर्याय, अनित्य छे. ए रीते नित्यानित्य पक्ष कहारे.

(४६)

हवे षड् द्रव्यमां एक अनेक पक्ष ब-तावे छे.

एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्ति-काय. ए वे द्रव्यना खंध लोकाकाश प्रमाणे एक छे अने गुण अनंता छे. आकाश द्रव्यनो लोकाकाश प्रमाण खंध एक छे. अने गुण अनंता छे. पर्चाच अनंता छे, प्रदेश अनंता छे. माटे अनेक छे. काल द्रव्यनो वर्तनारूप गुण एक छे, अने बीजा गुण अनंता छे, पर्याय अनंता छे. समय अनंता छे. केमके अतीतकाले अनंता समय गया, अने अना-गत काले अनंता समय आवशे, तथा वर्त-मानकाले समय एक छे माटे अनेक पक्ष छे. पुदगल द्रव्यना परमाणुआ अनंता छे. एक एक परमाणुमां अनंता गुणपर्याय छे

(80)

ते अनेकपणु छे, अने सर्व परमाणुमां पुद्गल-पणुं ते एकज छे. जीव द्रव्य अनंता छे, ए-केका जीवमां प्रदेश असंख्याता छे, तथा गुण अनंता छे. पर्याय अनंता छे ते अनेकपणुं छे, पण जीवितव्य सर्व जीवोमां एक सम् रखुं छे, माटे एकपणुं छे.

इहां शिष्य पुछे छे के-सर्व जीव एक सरखा छे तो मोक्षना जीव सिद्ध परमानंद् मयी देखाय छे, अने संसारी जीव कर्मवश पडया दुःखी देखाय छे, तेनुं केम १ तेने उ-त्तर आपे, छे, के-निश्चयनये तो सर्व जीव सिद्ध समान छे, माटेज सर्व जीव कर्म ख-पावी सिद्ध थाय छे, तेथी सर्व जीवनी सत्ता एक छे, वळी शिष्य पुछे छे के जो सर्व जीव सिद्ध समान कहो छो तो अभव्य जीव पण

(88)

सिद्ध समान छे एम ठर्यु, अने तेतो मोक्षे जाता नथी, तेनुं केम ? तेने उत्तर आपे छे के अभव्य ने कर्म चीकणां छे, अने अभ-व्यमां, परावर्त धर्म नथी, तेथी सिद्ध थता नथी. अभव्यने कर्मनो संबंध अनादि अ-नंतमे भांगे छे, तेथी कोइ काले ते मोक्ष जशे नहीं. भव्य जीवमां परावर्त धर्म छे माटे कारण सामग्री मळ्याथी पलटण पामे छे अने गुणश्रेणि चढीने सिद्ध थाय छे. आत्माना आठ रुचक प्रदेश, निश्चय नयथी भव्य तथा अभव्य सर्व जीवोना सिद्ध स-मान छे, माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सर-खी छे. ए आठ रुचक प्रदेशने कर्म बीछ-कुल लागतां नथी ते आचारांगसूत्रनी श्री शिलांगाचार्य कृत टीकाना लोकविजय अ-

(86)

ध्ययनमां प्रथमोद्देशके कह्यं छे.

हवे सत् तथा असत् पक्ष कहे छे. ए छ द्रव्य स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्व-भावपण सत् एटले छता छे. अने परद्रव्य परक्षेत्र, परकाल, अने परभावपणे असत् ए-टले अछता छे. तेनी रीत बतावन्नाने माटे ए षड् द्रव्यनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, अवे भाव, कहीये छीए.

दव्वंगुणसमुदान खित्तंओगाहवद्दणाकालो गुणपज्जाय पवत्ति भावोनिअवध्थुधम्मोसो॥१॥

धर्मास्तिकायनो मूल गुण चलण सहाय पणो ते स्वद्रव्य, अधर्मास्तिकायनो मूल गुण

(40)

स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य जाणवो आक्ताशितकायनो मूल गुण अवगाहपणो ते स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूल गुण वर्तना लक्षण पणो ते स्वद्रव्य जाणवो तथा पुद्गल द्रव्यनो मूलगुण पूरण गलनपणो ते स्वद्रव्य जाणवो जीव द्रव्यनो मूलगुण जानादिकचेतना लक्षणपणो ते स्वद्रव्य, ए छ द्रव्यनो स्वद्रव्यपणो कह्यो.

हवे षड् द्रव्यनो स्वक्षेत्र कहे छे-धर्मा-स्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनो स्वक्षेत्र असं-ख्यात प्रदेशमय जाणवो. आकाश द्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंत प्रदेशमय जाणवो. काल द्र-व्यनो स्वक्षेत्र समयरुप छे. पुद्गल द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक परमाणु छे. परमाणुआ अनंता छे. जीव द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असं-

(47)

ख्याता प्रदेश छे.

हवे स्वकाल ते षड्द्रव्यमां अगुरु लघु-नो छे. छए द्रव्यना पोत पोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो. सारांशके धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा अधर्मास्तिकायमां पण पोताना ज स्वद्रव्य, क्षेत्रकाल, भाव छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. आकाशास्ति कायमां आकाशना ज स्वट-च्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा काल द्रव्यमां कालना स्वद्रव्या-दिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. पुद्गल द्रव्यना स्वद्रव्यादि चार पुद्गल द्र-व्यमां छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा जीव द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चार ते जीव द्र-

(42)

व्यमां छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी।
"गुणपर्यायवद्द्रव्यम्—" द्रव्यथी अभेदपणे
गुणपर्याय होय तेने द्रव्य कहे छे तथा स्त्रधर्मनो आधारवंतपणो तेने क्षेत्र कहे छे, अने
उत्पाद व्ययनी वर्तना तेने काल कहे छे,
तथा विशेष गुण परिणति, स्वभाव परिणति, पर्याय ममुख ते स्वभाव कहीए.

अत्र एक-भेद स्वभाव, बीजो-अभेद स्वभाव, त्रीजो-भव्य स्वभाव चोथो-अभ-व्य स्वभाव अने पांचमो-परम स्वभाव, ए पांच स्वभाव जाणवा. तेमां द्रव्यना सर्व ध-भेने पोतपोताना स्व स्व कार्य करवेकरी भेद स्वभाव छे, अने अवस्थानपणे अभेद स्व-भाव छे. अणपलटण स्वभावे अभव्य स्व-भाव छे. तथा पलटण स्वभावे भव्य स्वभाव

(44)

छे. द्रव्यना सर्व धर्म ते विशेष धर्मने अनु-यायीज परिणमे ते माटे ते परम स्वभाव क-हीए. ए सामान्य स्वभाव जाणवा. ए रीते छए द्रव्य स्वगुणे सत् छे अने पर्गुणे अ-सत् छे.

हवे छए द्रव्यमां वक्तव्य तथा अवक्-तच्य पक्ष कहे छे.

ए छ द्रव्यमां अनंता गुण पर्याय ते वक्तव्य एटले वचने कहेवा योग्य छे, अने
अनंता गुणपर्याय ते अवक्तव्य एटले वचने
करी कही शकाय नहीं एवा छे. केवळ
ज्ञानी महाराजे ज्ञाने समस्त भाव दीटा
तेना अनंतमे भागे जे वक्तव्य एटले कहेवा
योग्य हता ते कहाा. वळी तेनो पण अनंतमो
भाग श्री गणधर देवे सूत्रमां गुंथ्यो. जे सु-

(५४)

त्रमां गुंथ्यो तेना असंख्यातमा भागे हाल आ-गम रह्यां छे. ए छ द्रव्यमां आठ पक्ष कह्या.

हवे नित्य तथा अनित्य पक्षयी चतुर्भंगी उपनी ते बतावे छे. जेनी आदि नथी
अने अंत नथी ते अनादि अनंत पहेलो भांगो जाणवोः तथा जेनी आदि नथी पण
अंत छे, ते अनादि सांत बीजो भांगो जाणवोः तथा जेनी आदि पण छे अने अंत
पण छे, ते सादि सांत त्रीजो भांगो जाणवोः
वळी जेनी आदि छे, पण अंत नथी, ते सादि
अनंत नामे चोथो भांगो जाणवोः

हवे ए चार भांगा द्रन्योमां केवी रीते उतरे छे, ते बतावे छे.

जीव द्रव्यमां ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनंत छे, नित्य छे. भव्य जीवने कर्म साथे

(44)

संबंध अनादि छे. पण सिद्ध थाय, त्यारे अंत आवे छे, तेथी ए अनादि सांत बीजो भांगो जाणवो. देवता, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी प्रमुखना भव करवा, ते सादि सांत भांगो छे, जे जीव कर्म खपावी मोक्षे गया तेनी मोक्षपणे आदि छे. अने पाछं संसा-रमां कोइ वखत आववुं नथी माटे अंत नथी, तेथी ते आश्रयी सादि अनंत भांगो छे. अ-भव्य जीव साथे कर्मनो संबंध अनादि अ-नंत छे. जीव द्रव्यना चार गुण अनादि अ-नंत छे. जीवने कर्म साथे संयोग ते अनाहि सांत छे. पण अभव्यने नहीं. अभव्यने कर्म संयोग अनादि अनंत छे.

धर्मास्तिकायमां चार गुण अने पांचमो खंध ते अनादि अनंत छे, तेमां अनादि सांत

(4६)

भांगो नथी. तेथी देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु ते सादि सांत भांगे छे. तथा सिद्धना जीवो, धर्मास्तिकायना जे प्रदेशे रह्या छे, ते प्रदेश आश्रीने सादि अनंत भांगो छे. एवीज रीते अधर्मास्तिकायमां पण चौभंगी जाणवी.

आकाश द्रव्यमां गुण तथा खंघ अनादि अनंत छे. बीजो भांगो नथी। तेना देश, प्र-देश, तथा अगुरु छघु, सादि सांत छे. तथा सिद्धना जीवनी साथे जे संबंध ते सादि अ-नंतमा भांगे छे. पुद्गल द्रव्यमां गुण, अ-नादि अनंत छे. जीव पुद्गलनो संबंध अभ-व्यने अनादि अनंत छे अने भव्य जीवने अ-नादि सांत छे. पुद्गलना खंध सर्व सादि सांत छे. जे खंध बंधाया ते स्थिति प्रमाणे रही खरे छे, वळी नवा बंधाय छे. सादि

(40)

अनंत भांगो पुद्गल द्रव्यमां नथी.

काल द्रव्यमां अनादि अनंतमा भांगे चार गुणो छे. पर्यायमां अतीत काल अनादि सांत छे. अने वर्तमानकाळ सादि सांत छे. तथा अनागत काळ सादि अनंत छे. ए कालनुं स्वरूप सर्व उपचारथी छे. ए रीते काल द्र-व्यमां चौभंगी जाणवी.

हवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भावमां चौ-भंगी कहे छे.

जीव द्रव्यमां स्वद्रव्यथी ज्ञानादिक गुण छे ते अनादि अनंत छे.

स्वक्षेत्रे जीवना प्रदेश असंख्याता छे. ते सादि सांत छे. तदुद्वर्तनापणे फरे छे, ए हेतु थी, अथवा अवगाहना माटे सादि सांत छे, पण

(4८)

छतिपणे तो अनादि अनंत छे. स्वकाल अ-ग्रर लघुनो अनादि अनंत छे, अने अगुरु लघु गुणनो उपजवो, तथा विणसवो ते सादि सांत छे. तथा स्वभाव ग्रण पर्याय ते अनादि अनंत छे अने भेदांतरे अग्रुरुलघ ते सादि सांत छे. धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्य जे चलण सहाय गुण ते अनादि अनंत छे, अने स्वक्षेत्र असंख्यात प्रदेश लोक प्रमाण छे ते अवगा-हनापणे सादि सांत छे. स्वकाल ते अग्ररू-छघुगुणे अनादि अनंत छे अने उत्पाद न्यय ते सादि सांत छे. तेमज अधर्मास्तिकायना पण चार भांगा जाणवा. आकाशास्तिकायमां स्वद्रव्य अवगाहनादानग्रण ते आनदि अनंत छे. अने स्वक्षेत्र लोकालोक प्रमाण अनंत पदेश ते अनादि अनंत छे. स्वकाल ते अग्रह

(48)

स्रघु गुण सर्वथापणे अनादि अनंत छे, अने उपजवे तथा विणसवे सादि सांत छे.

स्वभाव ते चार ग्रुण, तथा खंध अने अगुरु छघु ते अनादि अनंत छे, तथा देश प्रदेश ते सादि सांत छे. ते आकाश द्रव्यना वे भेद छे, एक चौदराज लोकनो खंध लो-काकाश प्रमाण ते सादि सांत छे, अने बी-जो अलोकाकाशनो खंध ते सादि अनंत छे.

काल द्रव्यमां स्वद्रव्य जे नवा पुराण-वर्तना गुण ते अनादि अनंत छे. स्वक्षेत्र स-मय ते सादि सांत छे. केमके वर्तमान समय एक छे माटे, तथा स्वकाल ते अनादि अ-नंत छे. स्वभाव ते गुणचार अने अगुरु लघु अनादि अनंत छे. अतीतकाल अनादि सांत

(60)

छे. वर्तमान काल सादि सांत छे. अनागत काल सादि अनंत छे.

पुद्गल द्रन्यमां स्वद्रव्य ने पूरण गलन-धर्म छे ते अनादि अनंत छे. अने स्वक्षेत्र परमाणु ते सादि सांत छे. स्वकाल अगुरु लघु ते अनादि अनंत छे. अगुरु लघुनो उ-पजवो विणसवो ते सादि सांत छे. स्वभाव ते गुण चार, अनादि अनंत छे. वर्णादि प-र्याय चार, वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श ते सादि सांत छे. ए द्रव्यादि चारनी पुद्गल द्रव्यमां चौभंगी जाणवी.

हवे छ द्रव्यना संबंध आश्रयीने चौ-भंगी देखाडे छे.

तेमां प्रथम आकाश द्रव्य छे. तेमां अ-

(६१)

लोकाकाश्चमां पांच द्रव्यमांनुं कोइ पण द्रव्य नथी. धर्मास्तिकायः अधर्मास्तिकायः पुद्ग-लास्तिकायः काल अने जीव, ए पांच द्रव्यो अलोकमां नथी.

लोकाकाशमां स्व सहित छ द्रव्य छे, लोकाकाश द्रव्य तथा धर्मास्तिकाय द्रव्य अ-ने अधर्मास्तिकाय ए त्रण द्रव्य ते अनादि अनंत छे. जे लोकाकाशना एकेक प्रदेशमां धर्म द्रव्य तथा अधर्म द्रव्यनो अकेक प्रदेश रह्यों छे, ते कोइ काले विछडशे नहीं. माटे अनादि अनंत जाणवो. लोकाकाश क्षेत्र अने जीव द्रव्यनो अनादि अनंत संबंध जा-णवो. संसारी जीव कर्म सहित तथा लोक-नाप्रदेशनो सादि सांत संबंध छे. लोकांत सि-द्धनेत्रना सिद्ध जीवोनो, आकाश प्रदेश साथे

(६२)

सादि अनंत संबंध छे. लोकाकाश अने पुद्गल द्रव्यनो अनादि अनंत संबंध जाणवो.
आकाश प्रदेशनी साथे पुद्गल परमाणुनो
सादि सांत संबंध जाणवो. एम आकाश द्रव्यनी पेठे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय
द्रव्यनो पण संबंध जाणवो. निश्चयनये
छ ए द्रव्य स्वस्वभावे परिणमी रह्यां छे ते परिणामीपणो सदा शाश्वतो छे ते माटे अनादि
अनंत छे.

जीव द्रव्य तथा पुद्गल द्रव्य वंने मळी संबंधपणाने पामे छे अने तेथी तेने परपरिणा-मीपणो छे. ते परपरिणामीपणुं अभव्य जीवने अनादि अनंत छे, अने भव्य जीवने अनादि सांत छे. पुद्गलनो परिणामीपणो ते सत्ताए अनादि अनंत छे अने पुद्गलनुं मळवुं वि-

(長 身)

खरबुं ते सादि सांत भांगे जाणबुं. जीव द्रव्य पुद्गल साथे मळेलो सिक्रय छे, अने पुद्गल द्रव्यथी रिहत थाय त्यारे जीव द्रव्य अक्रिय छे. पुद्गल द्रव्य सदा सिक्रय छे.

हवे एक अनेक पक्षथी निश्रय ज्ञान क-हेवाने नय कहे छे. सर्व द्रव्यमां अनेक स्वभाव छे, ते एक वचनथी कह्या जाय नहीं माटे मांहोमांहे नयोवडे संक्षेपपणे कहे छे.

मूळ नयना बे भेद छे. एक द्रव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक. तेमां उत्पाद व्यय पर्यायने गौणपणे अने प्रधानपणे द्रव्यनी गुण सत्ताने ग्रहे तेने द्रव्यार्थिक नय कहे छे तेना दश्च भेद छे.

१ सर्व द्रव्य नित्य छे ते नित्य द्रव्या-र्थिक.

(48)

२ अगुरु लघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न करे अने मूळ गुणने पिंडपणे ग्रहे ते एक दृग्यार्थिक.

३ ज्ञानादिक गुणे सर्व जीव एक स-रखा छे, माटे सर्व जीवोने एक कहे अने स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत्द्रव्यार्थिक जेम स छक्षणं द्रव्यम्

४ द्रव्यमां केहेवा योग्य गुण अंगीका-र करे ते द्रव्यार्थिक जाणवो.

५ आत्माने अज्ञानी कही बोलाववो ते अञ्जद्भ द्रव्यार्थिक नय जाणवोः

६ सर्वे द्रव्य गुण पर्याय सहित छे एम कहेवुं ते अन्वय द्रव्यार्थिकः

७ सर्व जीवनी मूल सत्ता एक छे ते परम द्रन्यार्थिक जाणवोः

(६५)

- ८ सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश नि-र्मल छे ते शुद्ध दृष्यार्थिक नय जाणवो.
- ९ सर्व जीवना असंख्याता प्रदेश एक सरखा छे ते सत्ताद्रव्यार्थिकनय जाणवी.
- १० गुण गुणी एक छे ते परमभाव ब्राहक द्रव्यार्थिक नय जाणवो. जेम आत्मा ज्ञानरुष छे.

इत्यादिक द्रव्यार्थिक नयना दश भेद-कह्या. हवे पर्यायार्थिक नयना छ भेद कहे छे.

जे पर्यायने ग्रहे तेने पर्यायार्थिक नय कहे छे, तेना छ भेद नीचे प्रमाणे.

एक द्रव्य पर्याय, बीजो द्रव्य व्यंजन पर्याय, त्रीजो गुणपर्याय, चोथो गुण व्यंज-न पर्याय, पांचमो स्वभाव पर्याय, छट्टो वि-भाव पर्याय ए छ छे।

(६६)

? जीवने भव्यपणुं तथा सिद्धपणुं क-हेवुं ते द्रव्यपर्याय.

२ जे द्रव्यना प्रदेशनुं मान ते द्रव्य व्यंजनपर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय. जेम घ-मीधमीदि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्यं-जनपर्याय कहीए.

५ स्वभाव पर्याय ते अग्रुरु छघु पर्या-यथी जाणवो. ए पांच पर्यायो सर्व द्रव्य-मां छे.

६ विभाव पर्याय ते जीव ग्रुद्गळ ए

(६७)

वे द्रव्यमां छे. जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय तथा पुद्गलमां खंधपणु ते विभावपर्याय जाणवो.

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे— एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्रव्य-नो मेरु प्रमुख. बीजो सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिक.

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समय-मां द्रव्य उपजे विणसे छे ते. "सादिसां-त पर्याया भव शरीराध्यवसायादयः" इति नयचक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे, ते वडे कहेवो. पांचमो उपाधि पर्याय ते कर्म संबंध छहो शुद्ध पर्याय जे मूळपर्याय, सर्व द्रव्यना एक सर-ला छे ते एवं पर्यायार्थिकनुं स्वरुप कहुं. नय

(६८)

चक्र तथा आगमसार कर्त्ताना मते बीजा पर्या-यना छ भेदमां तफावत पडे छे. तत्त्वकेविल-गम्यम्.

सातनय.

१ नैगम २ संग्रह २ व्यवहार ४ रुजुस् त्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत ए सात नयनां नाम जाणवां.

१ नैगमनयः

नथी एक गमो ते जेनो तेने नैगमनय कहे छे, गुणनो वा कार्यनो एक अंश उप-न्यो होय तो ते नैगम नय कहीए, जेम कोइ मनुष्यने पाली छाववानुं मन थयुं त्यारे ते वगडामां छाकडां छेवा चाल्यो, तेने रस्ता-मां बीजो कोइ माणस भेगो थयो, तेणे पूछ्युं

(६९)

के, तुं क्यां जाय छे ते वारे तेणे कहां के हुं, पाली लेवा जाउं छुं. ते पाली तो हजु घडी नथी पण मनविषे चिंतव्युं ते थइ एम गण्युं. तेम नैगम नय सर्व जीवने सिद्ध समान कहे छे. कारण के सर्व जीवोना आठ रुचक प्रदेश निर्मळ सिद्ध समान छे, तेथी एक अंशे सिद्ध छे, ते माटे सिद्ध समान सर्व जीव कहा. ते नैगम नयना त्रण भेद छे. अतीत नैगम, अनागत नैगम, अने वर्त्तमान नैगम. आ प्रमाणे आगमसार ग्रंथमां कथ्युं छे.

नयचक्र वालावबोधमां नैगमनयना त्रण भेद कह्या छे. १ आरोप २ अंश ३ सं-कल्प. तथा विशेषावश्यकमां चोथो भेद पण उपचारपणे कहे छे. नथी एकगमो—अ-

(%)

भिमाय ते जेनो तेने नैगमनय कहे छे. नै-गमनय अनेक आशयी छे, ते नैगमनयना चार भेद छे. नैगमना भेद पैकी आरोप नै-गमना चार प्रकार छे.

? द्रव्यारोप, २ गुणारोप, ३ कालारो-प, ४ कारणाद्यारोप.

१ गुणादिकमां द्रव्यपणो मानवो ते द्रव्यारोप. जेम वर्तना परिणाम ते पंचा- स्तिकायनो परिणमन धर्म छे, तेने काल द्रव्य कहीने बोलाव्यो ए काल ते भिन्न पिंड रूप द्रव्य नथी, पण आरोपे द्रव्य छे, माटे द्रव्यारोप जाणवो. द्रव्यने गुणनो आ- रोप ते जेम ज्ञान गुण छे, पण ज्ञानी तेज आत्मा एम ज्ञानने आत्मा कह्यो, ते गुणा- रोप जाणवो. तथा जेम श्री महावरि स्वा-

(98)

मीनुं निर्वाण थयां घणो काळ गयो छे, पण आज दीवालीना दीवसे वीरनिर्वाण छे, एम जे कहेवुं ते वर्तमानकालमां अतीत कालनो आरोप कर्यो जाणवो. तथा आज श्री पद्मनाभ मञ्जनो निर्वाण छे, एम जे कहेवुं ते वर्तमान काळमां अनागतकालनो आरोप. एवी रीते अतीतना वे भेद छे. तथा अना-गतना वे भेद छे तथा वर्तमानना पण वे भेद छे ते सर्व मळी कालारोपना छ भेद जाणवा. चोथो वळी कारणविषे कार्यनो आरोप करवो ते कारणाद्यारोप जाणवो.

ते कारण चार छे. १ उपादान कारण. २ निमित्त कारण. ३ असाधारण कारण. ४ अपेक्षा कारण. तेमां वाह्यद्रव्य क्रिया ते साध्य सापेक्षवाळाने धर्मनुं निमित्त कारण

(৩২)

छे तोपण तेने धर्मकारण कहीए. तेमज श्री तीर्थंकर मोक्षनुं कारण छे, तेथी तेमणे 'तारयाणं' कह्या ते कारणमां कर्त्ता-पणानो आरोप कर्यो. एम आरोपता अनेक मकारे छे ते कारणाद्यारोप.

वळी संकल्प नैगमना वे भेद छे १ स्व-परिणामरुप वीर्य चेतनानो जे नवो नवो क्षयोपश्चम छेवो ते. २ कार्यांतरे नवे नवे कार्ये नवो नवो उपयोग थाय ते. ए वे भेद थया. तथा अंश नैगमना पण वे भेद छे. १ भिन्नां श्च ते जुदो अंश, स्कंधादिकनो, बीजो आभि-न्नांशते जे आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविभाग इत्यादिक ए सर्व नैगमनयना भेद जाणवा.

(७३)

(२) संग्रहनय.

सामान्यवस्तुसत्ता संग्राहक संग्रहःसदिविधः सामान्य संग्रहः विशेषसंग्रहश्च सामान्य संग्रहो दिविधः मूलतजत्तरतश्च मूलतोऽ
स्तित्वादिभेदतः षड्विध उत्तरतो जाति सम्
दायभेदस्यः जातितः गवि गोत्वं, घटे घटत्वं,
वनस्पतौ वनस्पतित्वं, समुदायतो सहकारात्मके वने सहकारवनं, मनुष्यसमूहे मनुष्य
वृंद, इत्यादि समुदायरूपः अथवा द्रव्यमिति
सामान्य संग्रहः जीव इति विशेष संग्रहः

अर्थः सामान्ये करी मूल सर्वे द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्या जे धर्म तेनो जे संग्रह करे तेने संग्रहनय कहे छे.

तेना वे भेद छे. १ एक सामान्य सं-ग्रह २ बीजो विशेष संग्रह.

(88)

सामान्य संग्रहना वे भेद छे. १ मूल सामान्यसंग्रह २ उत्तर सामान्यसंग्रह. वळी मूळ सामान्यना आस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, सत्त्व, अगुरुलघुत्व ए छ भेद छे तथा उत्तर सामान्यना वे भेद छे.

१ जाति सामान्य २ समुदाय सामान्यः तत्र गायना समुहमां गोत्वरुप जाति छे तथा घट समुदायमां घटत्व अने वनस्पतिमां वनस्पतिपणो ते जाति सामान्य कह्योः आंबाना समूहने अंब वन कहे, तथा मनुष्यना समुहमां मनुष्य ग्रहण थाय ते समुदाय सामान्यः ए उत्तर सामान्य ते चक्षुदर्शन तथा अचक्षुदर्शन तथा अचि क्षुदर्शन तथा अचि क्षुदर्शन तथा केवः विद्र्शन तथा केवळ दर्शनथी ग्रहवाय छे.

अथवा छ द्रव्यना समुदायने द्रव्य के-

(৩५)

हवुं, ए सामान्य संग्रह, अने जीवने जीव द्रव्य कही अजीव द्रव्य थकी जुदो पाडवो, ते विशेष संग्रह. विशेषावश्यकमां संग्रहन-यना चार भेद कह्या छे. १ संग्रहीत संग्रह २ पिंडित संग्रह ३ अनुगम संग्रह ४ व्यति-रेक संग्रह.

१ सामान्यपणे वहेंचण विना ग्रहण थाय एवो जे उपयोग अथवा एवं जे वचन अथवा एवो धर्म कोईपण वस्तुने विषे होय तेने संग्रहित संग्रह कहीए.

२ एक जाति माटे एकपणो मानीने ते एक मध्ये सर्वनो ग्रहण थाय जेम "एगे आया" "एगे पुग्गले" इत्यादि वस्तु अनंति छे पण जाति एक

(७६)

माटे ग्रहण थाय छे ते बीजो पिंडित संग्रह-नय कहीए.

३ जे अनेक जीवरूप अनेक व्यक्ति छे ते सर्वमां पामीए, जेम " सिचन्मय आ-त्मा" एटले सर्व जीव तथा सर्व प्रदेश अने सर्व गुण ते जीवनां लक्षण छेृते अनुगम संग्रह नय कहीए.

४ जेना ना कहेवाथी तेनाथी इतरनो सर्व संग्रहपणे ज्ञान थाय ते जेम अजीव छे तेवारे जे जीव नहीं ते, अजीव कहीए. ए-टले कोइक जीव छे एम व्यतिरेक वचने ठर्यो. तथा उपयोगे जीवनो संग्रह थाय छे, ते व्यतिरेक संग्रह कहीए.

एक नाम लीधाथी सर्व गुण पर्याय प-रिवार सहीत आवे ते संग्रहनय जाणवी.

(00)

दृष्टांत—जेम कोइक मन्युष्ये प्रभाते दा-तण करवाने अर्थे पोताना घरना बारणे बे-श्रीने चाकरने कह्युं के दातण छेइ आवो ! तेवारे चाकर पुरुष, पाणीनो छोटो, रुमाछ, दातण एम सर्व चीज छइ आव्यो शेठे तो एक दातण नाम छइने मंगाव्युं हतुं पण स-वनो संग्रह करी चाकर छइ आव्यो तेरीते संग्रहनय जाणवो

(३) व्यवहारनय.

संग्रहग्रहीतवस्तु भेदांतरेण विभजनं व्यवहरणं, प्रवर्तनं वा व्यवहारः सद्विविधः शुद्धोऽशुद्धश्रा।

संग्रहनये ग्रहीत जे वस्तु तेने भेदांतरे वेहेचचुं, तेने व्यवहारनय कहे छे. जेम द्रव्य

(७८)

एवं सामान्य नाम कहां. तेमां वली वेहेंचण करीए जे द्रव्यना वे भेद छे. एक जीव द्रव्य, तथा बीज़ं अजीव द्रव्य. तेमां पण वहेंचण करीए जे जीवना वे भेद छे. एक संसारी. बीजा सिद्ध, वळी तेमां पण संसारीना बे भेद छे. एक स्थावर, बीजो त्रस. तेमां स्थाव-रना प्रथ्वीकाय, अपूकाय, तेउकाय, वायुकाय, अने वनस्पतिकाय ए पांच भेद छे. त्रसना चार भेद छे. बेरेंद्री, तेरेंद्री, चौरेंद्री, अने पंचेंद्री. पञ्चेन्द्रियना देवता. मनुष्य. तिर्यंच अने नारकी एम चार भेट छे. एम उत्तरो-तर जीवना ५६३ भेदनी वेहेचण करवी इ-त्यादिक सर्व व्यवहारनयनो स्वभाव जा-णवो. अथवा प्रवर्तन व्यवहारना वे भेट छे १ श्रद्ध व्यवहार २ अश्रद्ध व्यवहार.

(99)

सर्व द्रव्यनी स्वरूप शुद्ध प्रदृति-जेम धर्मास्तिकायनी चल्लण सहायता तथा अध-मीस्तिकायनी स्थिति सहायता तथा जी-वनी ज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगत शुद्ध व्य-वहार कहीए.

द्रव्यनो उत्सर्ग नीपजवा माटे जे रत्न-त्रयिनी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणि आरोहणरूप ते साधन शुद्ध व्यवहार कहीए.

अशुद्ध व्यवहारना वे भेद छे. १ सद्भूत व्यवहार २ असद्भूत व्यवहार. तेमां जे क्षेत्रे अवस्थाने अभेदे रह्या जे ज्ञानादिगुण तेने परस्पर भेदे कहेवा ते सद्भूत व्यवहार. तथा हुं क्रोधी छुं, हुं मानी छुं, अथवा दे-वता छुं, मनुष्य छुं, इत्यादि देवतापणे ते हे-तुपणे परिणमतां ग्रह्यां जे देवगति विपाकी

(60)

कर्म तेने उदयरुप प्रभाव छे ते पण यथार्थ ज्ञान विना भेद ज्ञानग्रन्य जीव ते एक करी माने छे ते असद्भूत अशुद्ध व्यवहार कहीए. तेना वे भेद छे.

१ आ बरीर मारुं छे, हुं बरीरी छुं, इत्यादि केहेवुं तेने संश्लेषित असद्भूतव्यव-हार जाणवो.

२ आ पुत्र मारो, आ स्ती, कुटुंब, धन-धान्यादिक नवविध परिग्रह मारो छे, एम जे कहेंबुं ते असंश्लेषित असद्भूत व्यवहारनय-थी जाणबुं. ते असंष्लेषित असद्भूत अञ्जद्ध व्यवहारना वे भेद छे. एक उपचरित अने बीजो अनुपचरित.

विशेषावश्यक महाभाष्यमां व्यवहार-नयना मूळ वे भेद छे.

(82)

- १ वहेचणरुप व्यवहार,
- २ प्रवृत्तिरूप व्यवहारः

प्रवृति व्यवहारना त्रण भेद छे. वस्तु-प्रवृत्ति, साधनप्रवृत्ति, लेकिकप्रवृत्ति. तेमां साधन प्रवृत्तिना त्रण भेद छे.

- १ जे अरिहंतनी आज्ञाये शुद्ध साधन मार्गे इह लोक संसार पुद्गल भोग आसं-सादिदोष रहीत जे रत्नत्रयिनी परिणति, परभव त्याग सहित ते लोकोत्तर साधन प्र-दृत्ति नामे पेहेलो भेद जाणवो.
- २ स्याद्वाद विना मिथ्याभिनिवेष स-हित साधन प्रवृत्ति ते दुःपावचनिक साधन प्रवृत्तिः
- ३ लोकना स्व स्वदेश कुलनी चाले प्रदात्ति ते लोक व्यवहार प्रदत्ति ए त्रण प्र-

(८२)

कारनी प्रवृत्ति जाणवी.

वाह्य स्वरूप देखीने भेदनी वेहेंचण करे अने जे बाह्य देखाता गुणनेज माने पण अं-तरंग सत्ताने न माने तेने व्यवहारनय कहे छे, आ नयमां आचार क्रिया गुरूय छे. व्यवहारनये जीवनी अवस्था अनेक प-कारे छे.

वळी व्यवहारनयना छ भेद छे.

१ शुद्ध व्यवहार. ते पूर्वना गुण ठा-णातुं छोडवुं अने उपरना गुणठाणातुं ग्र-हण करवुं, तेने शुद्ध व्यवहारनय कहे छे. अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण ते निश्चय नये एक रूप छे, पण ते शिष्यने समजाववा-ने जुदा जुदा भेद कहेवा ते शुद्ध व्यवहारन-य जाणवो.

(\$ 5)

२ जीवमां अज्ञान रागद्वेष लाग्या छे ते अञ्जद्धपणो छे माटे अञ्जद्ध व्यवहार जाणवो,

३ पुण्यनी क्रिया करवी वा ग्रुभपरि-णति पृष्टत्ति ते ग्रुभ व्यवहार.

४ पापनी क्रिया करवी वा अग्रुभ प-रिणति पृष्टत्ति ते अग्रुभ व्यवहार.

५ धन कुटुंब प्रत्यक्षपणे पोतानाथी जुदा छे पण जीवे पोताना करी जाण्या छे ते उपचरित व्यवहार.

६ शरीर, लेश्या, योग अने इंद्रिय इत्यादि वस्तुओ पोताना आत्मा थकी जुदी छे तेने आपणी करी जीव माने छे ते अनु-पचरितव्यवहारनय मतथी जाणवुं.

्इत्यादि व्यवहारनयनुं स्वरूप जाणवुं.

(82)

४ ऋजुसूत्रनय.

ऋज कहेतां सरल छे, श्रुत कहेतां बोध ते जेनो तेने ऋज सूत्र नय कहे छे. ऋज शक्रे-अवक एटले समो छे श्रुत ते जेने ते ऋज सूत्र नय कहीए. अथवा ऋज्-अवक-पणे वस्तुने जाणे, कहे, तेने ऋजुसूत्रनय कहे छे.

जे अतीतकाल अने अनागत कालनी अपेक्षा न करे पण वर्त्तमान कालमां जे वस्तु जेवा गुणे परिणमे वर्ते ते वस्तुने तेवा ज परिणामे माने तेने ऋजुसूत्रनय कहे छे. ए नय परिणामग्राही छे. जेम कोइ जीव गृहस्थ छे, पण अंतरंग साधु समान परि-णाम छे, तो ते जीवने ए नय साधु कहे छे.

(८५)

अथवा कोइक जीव साधुने वेषे छे, पण मनना परिणाम विषयाभिलाषा सहित छे, तो ते जीव अवती छे. एम ऋजुसूत्र नयनो मानवो छे. ते ऋजुसूत्र नयना वे भेद छे. एक सूक्ष्म ऋजुसूत्रनय, अने बीजो स्थूल ऋजुसूत्र नय एम वे भेद छे.

सदाकाल सर्व वस्तुमां एक वर्तमान समय वर्ते छे. एटले जे जीव अतीतकालने विषे अज्ञानी हतो अने अनागतकाले अ- ज्ञानी थशे, एम वे कालनी अपेक्षा राख्या विना वर्त्तमान समये जे जेवो होय तेने तेवो कहे, तेने सुक्ष्म ऋजुसूत्रनय कहे छे.

मोटा बाद्य परिणामने जे ग्रहे तेने स्थूल ऋजुसूत्रनय कहे छे. ए ऋजुसूत्रना वे भेद दिगंबर कहे छे.

(८६)

ऋजुसूत्रं वर्तमानग्राहकं तद् वर्तमानं नामादि चतुष्पकारं ग्राह्यं. नय चक्र कर्ता ऋजुसूत्रनयमां नाम, स्थापना, द्रव्य, अने भाव ए चार निक्षेपा ग्रहण करे छे.

५ शब्दनय.

जे वस्तु गुणवंत, तथा निर्गुणवंत होय,
तेने नाम कही बोलावीए. जे भाषा वर्गणाथी शब्दपणे गोचर थाय, ते शब्दनय. जे
कारणथी अरुपी द्रव्य वचनथी ग्रह्मा जाय
नहीं, पण वचनथी कहेवा ते शब्दनय कहीए.
अहीं जे शब्दनो अर्थ ते पणो जे वस्तुमां
वस्तुपणे पामीए, त्यारे ते वस्तु शब्दनये
कहीए. जेम घटनी चेष्टाने करतो होय ते
घट कहेवाय. ए शब्दनयमां व्याकरणथी

(05)

नीपन्या, अने बीजा पण सर्व शब्द लीधा. आगमसार ग्रंथ कर्त्ता शब्दनयमां चार निश्ले-पा ग्रहण करे छे.

१ पहेलो नामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहित वस्तुने नाम कही बोलावे, तेने नामनिक्षेपो कहे छे. जेम एक लाकडीने लेइने कोइए तेने जीव एवं नाम कहां, ते नाम जीव जाणवो. एवी रीते नाम तप, अथवा नाम सिद्धः जेम वड ममुखने सिद्धवड एम कही बोलावे छे, ते नाम निक्षेपो.

२ जेम कोइ वस्तुमां कोइ वस्तुनो आकार देखीने तेने ते वस्तु कहे. जेम चित्रा-मण अथवा काष्ठ पाषाण प्रमुखनी मूर्त्ति तेने घोडा हाथी कहेवाय ते स्थापना निक्षेपो

(66)

जाणवो. ए स्थापना निक्षेपो नाम निक्षेपा स हित होय छे. जेम स्थापनासिद्ध जिनप्रतिमा प्रमुख ते सदभाव स्थापना अने असदभाव स्थापना पण होय छे. अकृत्रिम जिनमतिमा ते नंदीश्वरद्वीप प्रमुखमां अने जे अत्रनी प्रतिमा ते क्रित्रिम ते सर्व स्थापना जाणवी. जेम चित्रामणनी स्त्री ज्यां होय त्यां साध रहे नहीं. कारण के स्थापना स्त्री छे ते स्त्री तुरुय जाणवी. तेमज जिनप्रतिमा जिन सरखी जाणवी. काली दोरीने सापनी बुद्धि-थी हणतां सापनी हिंसा लागे छे, तेम जिन-प्रतिमाने जिननी बुद्धिए पूजतां मानतां आत्महित जाणवुं.

चित्रामनी मूर्तिने हिंसाना परिणाम थकी फाडे तेने हिंसा लागे छे तेमज जिन-

(८९)

वर ध्याने, जिनमतिमा पूजतां लाभ थाय छे.

३ जेनं नाम होय तथा आकार स्था-पना गुण पण होय अने लक्षण पण होय पण आत्मानो उपयोग मळे नहीं, तेने द्रव्य-निक्षेपो जाणवा. अज्ञानी जीव ते जीव स्व-रूपना उपयोग विना द्रव्यजीव छे. " अण्र-वओगोदव्वम् " इति अनुयोगद्वार वचनात् वळी कहूं छे के सिद्धांत वांचतां पुछतां पद, अक्षर, मात्रा, शुद्ध अर्थ करे छे, अने गुरु मुखे सहहे छे ते पण शुद्धानिश्रयनये पोतानी स-त्ता ओल्रख्या विना सर्व द्रव्यनिक्षेपमां छे. जे भावविना द्रव्यपणुं छे ते प्रण्यबंधनुं कारण छे पण मोक्षनुं कारण नथी. एटले जे धर्म करणीरूप कष्ट तपस्या करे छे, पण नीव, अजीव पदार्थनी सत्ता ओळखतो नथी,

(90)

तेने भगवती सूत्रमां अव्रती तथा अपच्च-खाणी कह्या छे. आ कथन जे बाह्यभावमां राचे छे अने आत्मस्वरूप जाणवा खप क-रता नथी तेने फटका तरीके छे. एकांत जिन-वचन नथी. दान, पूजा, तप अने क्रिया प्रमुख सापेक्षबुद्धिथी मोक्षनुं कारण छे. कारणे कार्य नीपजे इति वचनात्. ॥

आत्मानुं स्वरूप ओळखवाने बहु उद्यम करवोः मुनिपणुं आत्मानुं स्वरूप जाणवा-थी थाय छे. जेम जेम आत्मानुं स्वरूप प्र-हाय छे, तेम तेम परभावनो त्याग थाय छे. श्री उत्तराध्ययन सूत्रमां कहुं छे के '' न-मुणीरस्नवासेणं " जंगळमां वसवाथी कंइ मुनिपणुं प्राप्त थतुं नथी, पण '' नाणे-

(5?)

णय मुणी होइ "-आत्मस्वरूपनुं जे ज्ञान ते थकी मुनि थाय छे. इत्यादि द्रव्य निक्षे-पानुं स्वरूप जाणवुं. विशेष गुरुगमथकी जिज्ञासुओए तन्त्व जाणवुं. आ वात एकांत समजवी नहि, आ संबंधी गुरुगमताए विशेष अधिकार जाणवो.

४ नाम, स्थापना, द्रव्य, ए त्रण नि-क्षेपा भाव विना अशुद्ध छे. नाम तथा आ-कार लक्षण गुण सहित वस्तु ते भावनि-क्षेपो जाणवो. " उवओगोभावइतिव-चनात् " पूजा, दान, शील, तप क्रिया, अने ज्ञान, ए सर्व भावनिक्षेपा सहित ला-भन्नं कारण छे. अत्र कोइ कहेशे जे मनना परिणाम दृढ करीने जे करीए, तेने भाव क-

(९२)

हीए. पण एम कहेबुं ते योग्य नथी, ए प्र-माणे तो सुखनी वांछाए मिध्यात्वी पण घ-णा करे छे, पण सूत्रनी साखे वीतरागनी आज्ञाए हेय तथा उपादेयनी परीक्षा करवी, अजीवतत्त्व, तथा आस्त्रवतत्व तथा बंधतत्त्व उपर त्याग भाव, अने जीवना स्वगुण जे संवर निर्जरा अने मोक्ष तत्त्व उपरे उपादेय परिणाम तेने भाव कहे छे, ए चार निक्षेपा कहा.

शब्दनयमां भावनी मुख्यता छे एम पण छे.

६ समभिरूढनय.

जे वस्तुना केटलाक गुण प्रगटया छे अने केटलाक गुण प्रगटया नथी पण अवश्य प्रगटके एहवी वस्तुने जे वस्तु कहे तेने सम-

(९३)

भिरुद्धनय कहे छे. ते वस्तुना एक पदार्थवाच्य नामांतरे भिन्नार्थ जाणे. भिन्नभिन्न शब्दनो भिन्नभिन्न अर्थ माने जेम जीव, चेतन, आत्मा, एनो एक अर्थ करी न सहहे, परंतु भिन्न अर्थ करे तेने समभिरुद्ध नयकहे छे. ए नय एक नय ओछी वस्तुने पूरेपूरी कहे छे. समभिरूद्धनय, तेरमे गुणठाणे वर्तता केवळीने सिद्ध कहे छे.

७ एवंभूतनय.

जे वस्तु पोताने गुणे संपूर्ण छे अने पोतानी क्रिया करे छे, तेने जे वस्तु करी बो-लावे छे तेने एवं भूतनय कहे छे. मोक्षस्था-नकमां जे जीव पहोंच्या तेने ते सिद्ध कहे छे. पाणीथी भरेलो स्त्रीना माथा उपर आ-वतो जल धरण क्रिया करतो जे घटतो होय छे तेने एवं भूतनय घट कहे छे.

(88)

प्रमाण.

हव प्रमाण बतावे छे.-प्रमाणना वे भेद छे (१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२) परोक्ष प्रमाण.

? जे जीव पोताना उपयोगथी साक्षात् द्रव्योने जाणे, तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे. जेम केवळी छ द्रव्य प्रत्यक्षपणे जाणे छे, तथा देखे छे, ते माटे केवलज्ञान सर्वथी प्रत्यक्ष ज्ञान छे. मनःपर्यव ज्ञान ते मनोवर्गणा प्र-त्यक्ष जाणे तथा अवधिज्ञान ते पुद्गल-द्रव्यने प्रत्यक्ष जाणे छे माटे ए वे ज्ञान देश प्रत्यक्ष छे.

२ मतिज्ञान अने श्रुतज्ञाननो उपयो-ग ते परोक्ष प्रमाण छे.

परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद छे.

(९५)

१ अनुमान प्रमाण, २ आगम प्रमाण, ३ उपमान प्रमाणः

१ कोइक सहीनाण-चिह्न देखीने जे ज्ञान थाय. जेम यत्र तत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः जे जे ठेकाणे धूम होय ते ते ठेकाणे अग्नि होय. एटले धूमने देखीने जे अग्निनुं अनुमा-न थयुं, ते अनुमान प्रमाण.

२ शास्त्रनी साक्षीथी जे वात जाणी-ए. जेम देवलोक, नरक, निगोद विगेरेनो विचार आगमथी जाणीए छीए, ते आगम प्रमाण छे.

कोइक वस्तुनो दृष्टांत आपीने वस्तु ने ओळखाववी ते उपमान प्रमाण जाणवुं.

(९६)

सप्तभंगीनुं स्वरूप.

१ स्यात् अस्ति स्यात् कहेतां अने कान्तपणे सर्व अपेक्षा छेइने जीवद्रव्यमां आपणो द्रव्य, आपणो क्षेत्र, आपणो काल, तथा आपणो भाव, एम स्वगुण पर्याये जीव छे, तेम सर्व द्रव्य आपणे गुण पर्याये छे. ते स्यात् अस्ति नामनो पहेलो भांगो जाणवो.

२ स्यान्नास्ति. जीवद्रव्यमां बीजा पांच द्रव्यना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, ते पर द्रव्यना गुणपर्याय जीवद्रव्यमां नथी, एटले पर द्रव्यना गुणनो नास्तिपणो जीव द्रव्यमां छे ए स्यात नास्ति नामे बीजो भांगो थयो.

३ स्यात्अस्ति नास्ति द्रव्य स्वगुणे अ-स्ति अने परगुणे नास्ति ए वे भांगा एक

(99)

- जाणवो (२) तेनो ज्ञाता जीव (३) ज्ञेय ते सर्व द्रव्य.
- (१) ध्यान ते जावना स्वरूपनुं (२) ध्याननो ध्याता जीव (३) ध्येय ते आत्मा-नुं स्वरूप. आत्माना त्रण भेद छे, १ बाहि-रात्मा २ अन्तरात्मा ३ परमात्माः
- ? शरीर, मन, लेक्या अने इंद्रियादि वस्तुने अज्ञानी जीव आत्मबुद्धिए माने ते पहेलो बहिरात्मा जाणवो. दुहा—पुद्गलमां राची रहे, पुद्गल सुखनिधान, तस लाभे लोभ्यो रहे, बहिरातम अभिधान ॥ १॥ पु-द्गलथी न्यारो नहीं, आतम एवी बुद्धि, बहिरातम सुख शुं लहे, मगटे नहीं स्व-शुद्धि ॥ २॥
 - २ देह सिहत जीव छे पण निश्चय

(९८)

सत्ता गुणे सिद्ध समान छे एटले पोतान। जीवने सिद्ध करी ध्यावे ते अंतरात्मा जा-णवो. पुदगल वस्तु पोताना आत्मानी नथी. आत्माथी शरीर, इंद्रिय, अने लेक्या वगेरे भिन्न छे. आत्मा अरूपी छे. प्रदगल (कर्मरुप) रूपी छे, आत्मा चेतना सहीत छे, कर्म जड छे, आत्माने चार गतिमां भ-टकवानं कारण कर्म छे. ते मारी वस्त नथी, पण पर वस्तु छे. अरे हुं ए पर वस्तुने पो-तानी मानी बेठो छुं अने तेथी हुं दुःखी थाउं छं. हे चेतन ! तं अरूपी अनंत गुणनो भोक्ता छे. आठ कर्मना नाश्यी तं परमा-त्मा ञ्चद्धात्मा स्वरूप थड्डा. कर्म रहित जेवा सिद्धना जीवो छे, तेवो सत्ताए तुं पण छे. कर्मना आवरणथी तारा गुण दबाइ गया

(९९)

छे. इत्यादि पोताना आत्माने सिद्ध समान ध्याववो ते अन्तरात्मानुं छक्षण छे.

३ सर्व कर्म खपात्री केवलज्ञान पा-म्या तेवा अरिहंत तथा सिद्ध सर्व परमा-त्मा जाणवा

हवे द्रव्य मध्ये छ सामान्य गुण कहे छे.

१ अस्तित्व-ते छ द्रव्य आपणा गुण-पर्याय प्रदेशे करी अस्ति छे तेमां धर्म, अ-धर्म, आकाश अने जीव ए चार द्रव्यना असंख्याता प्रदेश खंध छे अने पुद्गलमां खंध थवानी शक्ति छे माटे ए पांच द्रव्य अस्तिकाय छे अने छट्टो काळ द्रव्यनो स-मय छे ते कोइ कोइथी मळतो नथी. कार-णके एक समय विणश्या पछी बीजो समय आवे छे माटे काल अस्तिकाय नथी. ए द्र-

(१००)

व्यमां अस्तित्व कह्यो.

२ वस्तुत्व-एटले छ द्रव्यमां वस्तुपणो कहे छे. ते द्रव्य एकठा एक क्षेत्र मध्ये रह्या छे. एक आकाश प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रहा छे. तथा अधर्मास्तिकायनो पण एक प्रदेश रह्यो छे. आगमसार कत्तीना मत प्रमाणे जीव अनंताना अनंत प्रदेश रह्या छे एम लख्युं छे. आकाशना एक प-देशे आत्माना सर्व प्रदेशो रही शंकता नथी एम अन्यागमोथी जणाय छे. पुद्गल पर-माण्रुआ अनंता रह्या छे. ते सर्व पोतानी सत्ता लेइने रह्या छे, पण कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य साथे मळी जतं नथी ते वस्तुपणुं जाणवं.

३ द्रव्यत्व-कहेतां द्रव्यपणो ते सर्व

(१०१)

समये द्रव्यमां छे. जे समयमां शुद्ध स्वगुणनी अस्ति छे तेज समयमां परगुणनी
नास्ति पण छे. यस्मिन् समये शुद्ध स्वगुण
स्य अस्तिता आत्मिन तस्मिन् समये
एव परगुणस्य नास्तिता आत्मिन बोध्या.
माटे अस्ति नास्ति ए बे भांगा एक समयमां भेला छे ते स्यात्अस्तिनास्ति त्रीजो
भांगो थयो.

४ स्यात् अन्वक्तव्य. अस्ति अने नास्ति ए वेड भांगा एक समयमां छे, तो वचने करी अस्ति एटछुं बोलतां असंख्याता समय लागे, तेथी नास्ति भांगो तेज वखते कहेवाय नहीं, अने जो नास्ति भांगो कहो तो अस्तिपणो आव्यो, माटे एकज अस्ति कहेतां थकां नास्तित्व तेज स-

(१०२)

मये द्रव्यमां छे, ते कहेवाणो नहीं. माटे मृषावाद लागे, तेमज नास्ति कहेतां अस्तिनो मृषावाद लागे, माटे वचने करी अगोचर छे. एक समयमां वे भांगा वचने करी कहा। जाय नहीं. कारण के एक अक्षर बोलतां असंख्याता समय लागे छे. माटे वचनथी अगोचर छे, ते स्यात् अवक्तव्य चोथो भांगो जाणवी.

५ अवक्तव्यपणो वस्तुमां अस्तित्व-नो पण छे. माटे स्यात् अस्ति अवक्त-व्य ए पांचमो भांगो जाणवो.

६ नास्तित्वनो पण अवक्तव्य पणो वस्तु मध्ये छे माटे स्यात् नास्ति अव-क्तव्य ए छद्दो भांगो जाणवो.

(१०३)

७ अस्तित्व तथा नास्तित्व एटले अस्तिपणुं तथा नास्तिपणुं एम वे धर्म एक
समये वस्तुमां छे, पण वचन थकी कह्या
जाय नहीं, माटे स्यात् आस्ति नास्ति
युगपत अवक्तठ्य ए सप्तमो भांगो
जाणवो.

नित्यानित्यत्वादि अनेक धर्ममां सप्त-भंगी लागु पडे छे.

१ स्यात् नित्यम् २ स्यात् अनित्यम् ३ स्यात् नित्यानित्यं ४ स्यात् अवक्तव्यं ५ स्यात् नित्यं अवक्तव्यम् ६ स्यात् अनित्यं अवक्तव्यम् ६ स्यात् अनित्यं अवक्तव्यम् ७ स्यात् नित्यानित्यं युगपत् अवक्तव्यम् ए सात भांगा जाणवा.

तेमज एक अनेकना सात भांगा जा-

(१०४)

णवा. तथा गुणपर्यायमां पण कहेवा. के-मके सिद्ध मध्ये नयनथी तोपण सप्तभंगी तो छे. ए सप्तभंगीमां आद्य त्रण भांगा स-कला देशी छे अने बाकीना चार भांगा वि-कला देशी छे.

" त्रिभङ्गी "

त्रण दशा बतावे छे १ बाधक २ सा-धक ३ सिद्धः

- ? मिथ्यात्व दशा ते वाधक दशा जा-णवी. २ समिकत गुणटाणाथी मांडीने अ-योगी केवळी गुणटाणा सुधी साधक दशा जाणवी. ३ सर्व कर्मथी रहित सिद्ध दशा जाणवी.
 - (१) ज्ञाननो जाणपणो ते जीवनो गुण

(१०५)

द्रव्य पोतपोतानी क्रिया करे छे. धर्मास्ति-कायमां चलन सहाय गुण ते सर्व प्रदेश मध्ये छे. सदा पुद्गल तथा जीवने चलन स्वभाव रुप क्रिया करे छे.

मश्र-लोकांतसिद्ध क्षेत्रमां धर्मास्ति-काय छे. ते सिद्धना जीवोने चलाववामां सहाय क्रिया केम करतुं नथी?

उत्तर-सिद्धना जीवो अक्रिय छे, माटे चालता नथी. पण ते क्षेत्रमां सूक्ष्म निगोद-ना जीव तथा पुद्गल छे; तेने धर्मास्ति-काय चलन सहाय आपे छे. पण सिद्धना जीवो अक्रिय छे, तेथी तेमने चलणसहाय, धर्मास्तिकाय आपतो नथी. पुद्गल सिद्ध य छे, पण पुद्गल संग त्यागी जे सिद्ध थया ते तो अक्रिय छे अने अक्रिय एवा

(१०६)

सिद्धना जीवो चाली शकता नथी। जे वस्तु सिक्रिय होय छे, गित करी शके छे, तेने धर्मास्तिकाय चालवामां सहाय आपे छे, पण अक्रिय एवा सिद्धना जीवो गित करता नथी, तेथी तेमने चालवामां धर्मास्तिकाय सहाय; आपी शकतुं नथी। सिद्धात्माओ अक्रिय छे, माटे धर्मास्तिकाय चलण सहाय आपतो नथी। ते सिद्धना जीवो निश्चल स्वस्वरुपी छे.

अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुद्गलने स्थिर राखवानी क्रिया करे छे. तथा आ-काश द्रव्य ते सर्व द्रव्यने अवगाइना गुण रुप दान आपे छे.

पश्च-अलोकाकाशमां वीजुं कोइ द्रव्य नथी तो अलोकाकाश क्या द्रव्यने अवगा-

(१०७)

हना दान आपे छे?

उत्तर-अलोकाकाशमां अवगाहना दान देवानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज छे, पण त्यां अवगाहना दान लेनार कोइ द्रव्य नथी, माटे अवगाहना दान करतुं नथी. तेथी अलोकाकाशमांथी अवगाहना गुण शक्ति, जे स्वभावे छे तेनो नाश थतो नथी. अलोकाकाशमां अवगाह गुणमां अगुरु लघुपर्याययोगेषड्गुण हानि द्रद्धिचक्र चाली रह्यं छे.

पुद्गलद्रव्य मिलवा विखरवारूप क्रियां कर्या करे छे. कालद्रव्य वर्तनारूप क्रिया कर्या करे छे. जीव द्रव्य ज्ञानलक्षण उपयो-ग रूप क्रिया करे छे. ए द्रव्यपणुं पड्• द्रव्योमां कहुं.

(२०८)

४ प्रमेयत्वं-ए प्रमेयपणो छ द्रव्यमां छे. तेनो प्रमाण केव**ली पोताना ज्ञान**थी करे छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाश ए अकेक द्रव्य छे. अने जीव द्रव्य अनंता छे. तेहनी गणतरी बतावे छे. संज्ञी मनुष्य संख्याता छे. असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे. नारकी असंख्याता छे. दे-वता असंख्याता छे. तिर्थंच पंचेंद्रिय असं-ख्याता छे. द्विन्द्रिय असंख्याता छे. त्रीन्द्रिय असंख्याता छे. चतुरिन्द्रिय असंख्याता छे. ते थकी प्रथ्वीकाय असंख्याता छे. अपकाय असंख्याता. तेजकाय असंख्याता. वायुका-य असंख्याता. प्रत्येक वनस्पति जीव अ-संख्याता. ते थकी सिद्धना जीव अनंता. ते थकी बाढर निगोदना जीव अनंतग्रणा.

(१०९)

बादर निगोद ते कंद, मूळ, आदु, सूरण, शकरीयां, मुळा, पमुख एना सूइना अग्र-भाग जेटला भागमां अनंता जीव रह्या छे. ते सिद्धना जीवथी अनंतगुणा छे अने सूक्ष्म निगोदना जीवो, सर्वथी अनंतगुणा छे.

सूक्ष्मनिगोद.

लोकाकाशना जेटला प्रदेश छे, तेटला निगोदना गोला छे. ते एकेक गोलामां असंख्यासी निगोद छे. अनंता जीवोनुं पिं-डभूत एक शरीर तेने निगोद कहे छे. ते-मांथी एक निगोदमां अनंता जीव रह्या छे. अतीत कालना सर्व समय तथा वर्तमानका-लनो एक समय तथा अनागतकालना सर्व समय, ते सर्वने भेला करीए. अने तेने अ-

(११०)

नंत गुणा करीए तेटला एक निमोदमां जीव रह्या छे. एटले एक निगोदमां अनंता जीव रह्या छे. तेमांथी एक जीव ग्रहण करीए. तेना मदेश असंख्याता छे अने एकेका म-देशे अनंति कर्मनी वर्गणा लागी छे. ते ए-केक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गल प्रमाणुआ छे. एम अनंता प्रमाणुआ, जीवनी साथे लाग्या छे. ते थकी अनंतगुणा पुद्गल पर-माणु जीवथी रहित छूटा छे.

गाथा.

गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोए इवइ गोलो, इकिकमिनिगोए, अणंता जीवा मुणेयन्वा. ॥१॥

अर्थ-स्रोकमांहे असंख्याता गोळा छे.

(१११)

एकेका गोळा मध्ये असंख्याती निमोद छे. अने एकेक निगोदमां अनंता जीव छे.

गाथा.

सत्तरस समिहिआ, किरइगाणु पाणिम हुंति खुडुभवा, सगितससयितिहुत्तर, पाणुं पुणइग मुहुत्तंमि.

अर्थ-निगोदिया जीव मनुष्यना एक श्वासोच्छ्वासमां सत्तर भव झाझेरा करे छे. एक मुहूर्तमां २७७३ त्रण हजार सातसो तोतेर श्वासोच्छ्वास थाय छे. तेटलामां नि-गोदिया जीव केटला भव करे ते बतावे छे.

पणसहिसहस्सपणसय, छत्तिसा इग मु-हुत्त खुड्डभवा, आविष्ठयाणं दोसय, छप्पन्ना एगखुड्डभवे.

(११२)

अर्थ−एक ग्रुहूर्तमां निगोदना जीव ६५५३६ भव करे छे. निगोदनो एक भव २५६ आवलीनो छे. क्षुछक भवनो ए प्र-माण छे.

गाथा-अध्य अणंताजीवा, जेहिनप-त्तोतसाइ परिणामो. उववज्जंति चयंतिय, पु-णोवि तथ्थतथ्येव ॥ निगोदमां अनंताजीव एवा छे के जे जीवो, त्रसपणो कोइ वखते पाम्या नथी. अनंतोकाल पूर्वे गयो तो पण जे जीवो वारंवार त्यांज उपजे छे, अने च्यवे छे. एम एकनिगोदमां अनंताजीव छे. ते निगोदमां वे भेद छे. १ एक व्यवहार राशिनिगोद. अने बीजो अव्यवहार राशि-निगोद. तेमां जे बादर एकेन्द्रियपणो भावे त्रसपणो पामीने पाछा निगोदमां जइ पड्या

(\$ \$ \$)

छे. ते निगोदिया जीवने व्यवहार राशिया कहीए. अने जे जीव कोइपण काळे निगो-दमांथी नीकळ्या नथी, ते जीव अव्यवहार राशिया कहीए.

इहां मनुष्यपणामांथी जेटला जीव कर्म खपावीने मोक्षे जाय छे, तेटला जीवो तेज समये अव्यवहारराशिस्ट्रह्मिनगोदमांथी नी-कळीने उंचा आवे छे. जो दश्चजीव मोक्षे जाय तो दश्चजीव नीकळे. कोइक वेळाए भव्यजीव ओछा नीकळे तो एक बे अभ-व्य नीकळे पण व्यवहार राशिमां कोइ जीव वधेघटे नहीं. एवा निगोदना असंख्याता गोला लोक मांहे छे. घटे न राश निगोदकी वधे न सिद्ध अनन्त.

छदिशिना आच्या पुद्गलस्कंधो आहा-

(११४)

पणे जे लेखेः ते सकलगोला कहेवाय छे, अने लोकांतना भदेशे जे निगोदना गोला रह्या छे, तेने त्रण दिशिना आहारनी स्पर्शना छे भाटे ते विकल गोला कहेवाय छे. ए सूक्ष्म निगोदमां अनंतु दुःख छे. तेनुं उदा-हरण वतावे छे. सातमी नरकनुं आउखुं तेत्रीश सागरोपमनं छे अने ते तेत्रीश साग-रोपमना जेटला समयो थाय तेटला वखत सातमी नरकमां तेत्रीश सागरोपमने आउखे कोइ जीव उपजे तेटला भवमां ते जीवने जेटलुं छेदन भेदननुं दुःख थाय ते सर्व ए-कठं करीए, तेथी अनंतग्रण दःख निगोदिया जीवने एक समयमां थाय छे. जेम कोइ दे-वता साडात्रणक्रोड लोढानी सोयो वीने एकदम कोइ मनुष्यना शरीरे चोंपे

(११५)

तेथी तेने जे वेदना थाय छे, तेथी अनंतगुणी वेदना निगोदिया जीवने एक समयमांज थाय छे. भव्य जीवने निगोद प्राप्त थवातुं कारण अज्ञान छे. माटे तेहनो त्याग करवो ए हित-शिक्षा छे. सर्व प्रभेयनो प्रमाता आत्मा ते पोताना ज्ञान गुणे प्रमेयनो प्रमाण करे छे. ए प्रमेयत्वपणो कहो।

५. सत्व कहेतां सत्वपणो ते छ ए द्रव्योमां छे. द्रव्यमां एक समयमां उत्पाद-व्यय थाय छे, अने तेज समयमां स्थिरपणे वर्ते छे. उत्पादव्यय, अने ध्रुवपणो तेही ज सत्पणो छे. " उत्पाद्व्ययध्रुवयुक्तं—सत् इति तत्त्वार्थ वचनात् " तेने विस्तारथी बतावे छे.

६ धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश

(११६)

<mark>छे. त्यां एक प्रदेशमां</mark> अगुरु छघु असंख्या-ता छे, अने बीजा मदेशमां अगुरु लघु अनं-तो छे. त्रीजा प्रदेशमां संख्यातो अगुरु लघु छ एम असंख्याता प्रदेशमां अगुरु लघु पर्याय घटतो वधतो रहे छे, ते अग्रुरु छघु पर्यायचल छे. ते जे प्रदेशमां असंख्यातो छे, तेज प्रदेशमां अनंतो थाय छे. अने अनं-ताने ठेकाणे असंख्यातो थाय छे. अने असं-ख्याताने डेकाणे संख्यातो अगुरु छघु पर्याय थाय छे. एम लोक प्रमाण असंख्यात प्रदे-शमां सरखो समकाले अगुरु लघु पर्याय फरे छे. जे प्रदेशमां असंख्यातो फिटीने अ-नंतो थाय छे, ते प्रदेशमां असंख्यातपणानो विनाश छे अने अनंतपणानो उपजवो थाय छे, अने छ द्रव्यमां अगुरुलघुपणे गुण ध्रुव

(११७)

वर्ते छे, एम उपजवी. विणसवी. अने ध्रुव ए त्रण परिणाम छे, तेने उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव कहे छे.

अधर्मास्तिकायमां उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवरूप त्रणे परिणाम असंख्याता प्रदेशे सदा समय समयमां परिणमी रह्या छे. तेमां पण उपजवुं विणसवुं अने स्थिर रहेवुं, एज सत्य जाणवुं.

आकाशना प्रदेशमां पण एक समये त्रण परिमाण परिणमी रह्या छे. जीवना असंख्याता प्रदेश छे. तेमां पण उत्पाद, व्य-य, अने ध्रुव, ए त्रण परिणाम समये २ परिणमा रह्या छे. तथा पुद्गल परमाणुआमां पण सदा समय समय, उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव, ए त्रण परिणाम परिणमी रह्या छे.

(११८)

काछनो वर्तमान समय मटीने अतीतकाल थाय छे, तो ते समयमां वर्तमानपणानो वि-नाश छे, अने अतीतपणानो उपजवो छे, तथा काळपणे ध्रुव छे, ए स्थूलथकी उत्पाद व्यय अने ध्रुवपणो कह्यो अने वस्तुपणे मूल-पणे ज्ञेयने पलटवे ज्ञाननो पण ते भासनपणे परिणमवो थाय छे, तेमां पूर्वपर्यायना भास-ननो व्यय, अने अभिनवज्ञेय पर्यायना भा-सननो उत्पाद, तथा ज्ञानपणानो ध्रुव, ए रीते सर्वग्रणना धर्मनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय श्री सिद्ध भगवंतमां पण समये २ थइ रह्यो छे.

ए धर्मास्तिकायना प्रदेशे जे क्षेत्रगत अ-संख्याता पुद्गल तथा जीवने पहेले समये च-लण सहायीपणो परिणमतो हतो, तेज पदे-

(११९)

शमां बीजा समयमां अनंत परमाणुआ तथा अनंतजीव प्रदेशने चल्लणसहायीपणो थयो. तेवारे असंख्याता चलणसहायनो व्यय. अने अनंता चल्रणसहायनो उपजवो. अने चलणसहाय गुणपणे ध्रुव एम धर्म द्रव्य-मध्ये उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवपणो थइ रह्यो छे. ते प्रमाणे अधर्म, आकाशादि द्रव्यमां जाणवुं. तथा वली कार्य कारणपणे उत्पाद. व्यय तथा अगुरु लघुपर्यायना चलननो उ-त्पाद, व्यय, पंचास्तिकायमां कहेवो. तथा कालद्रव्य ते उपचारथी द्रव्य छे. तेनं सर्व स्वरूप उपचारथीज कहेवुं. ए रीते सर्व द्र-व्यमां सतुपणो छे, जो अग्रुरु छघुनो भेद न थाय, तो प्रदेशोनो माहोमां हे भेद थाय नहीं. माटे अगुरु लघुनो भेद सर्वमां छे.

(१२०)

॥ अग्ररु लघु ॥

अग्ररु लघुपणो कहे छे.

जे द्रव्यनो अगुरु लघु पर्याय छे, ते छ प्रकारनी हानि दृद्धि करे छे.

? अनंतभाग दृद्धि. २ असंख्याता-भाग दृद्धि. ३ संख्यातभाग दृद्धि. ४ सं-ख्यातगुण दृद्धि. ५ असंख्यातगुण दृद्धि. ६ अनंतगुण दृद्धि.

ए छ पकारनी द्वद्धि कही. हवे छ प-कारनी हानि बतावे छे.

? अनंतभाग हानि. २ असंख्यातभाग हानि. ३ संख्यातभाग हानि. ४ संख्यात गुण हानि. ५ असंख्यातगुण हानि. ६ अ-नंतगुण हानि.

(१२१)

ए छ प्रकारनी हानि समजवी.

सर्व द्रव्यमां ए छ प्रकारनी हानि तथा दृद्धि सदा समये समये थइ रही छे. उप-जवो (उत्पाद) अने हानि कहेतां (व्यय) कहीए. ए अगुरु लघुत्व कह्युं. अगुरु लघु गुणने गोत्रकर्म रोके छे. ए अगुरु लघु स्वभाव सदा समये समये द्रव्यमां परिणमे छे.

ए छ द्रव्यमां जेटला सरखा गुण छे, तेने सामान्य गुण कहे छे.

जे गुण एक द्रव्यमां छे अने ते गुण बीजा द्रव्यमां नथी, तेने विशेष गुण कहे छे.

जे गुण कोइक द्रव्यमां छे, अने को-इक द्रव्यमां नथी, तेने साधारण असाधारण गुण कहे छे.

(१२२)

ए छ द्रव्यमां अनंतगुण, अनंतपर्याय, अने अनंतस्वभाव सदा शाश्वता छे. जेवी रिति श्री केवली महाराजे मरूप्या. ते सर्व जे रीते छे, ते रीते छुद्ध सददणापूर्वक यथार्थ उपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथी यथार्थपणे जाणवा, सदद्दवा. एवं निश्चयज्ञान ते मोक्षमाप्तिनं कारणीभूत छे. जे जीव ज्ञान पाम्यो, ते जीव विरति करे छे. तेज चारित्र जाणवं ज्ञाननं फळ विरतिपणं छे, ते मोक्षनं कारण छे.

४ चार ध्यान.

- ? आर्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्म-ध्यान ४ ग्रुक्रध्यान.
- १ आर्तध्यान अने २ रौद्रध्यान ए वे दुर्गतिहेतुभूत छे. ए वे ध्यान अशुभ छे.

(१२३)

भव्य पाणीयोने ए बे ध्यान त्याग करवा योग्य छे. धर्मध्यान अने शुक्रध्यान ए बे शुद्ध उपास्य छे.

आर्तध्यान.

मनमां आहट्ट दोहट्टना परिणाम ते आर्तध्यान कहीए. आर्तध्यानना चार पाया छे.

आर्तध्यानना ४ पाया छे १ इष्टवियोग २ अनिष्टसंयोग ३ रोगचिंता ४ अग्रशौच.

? इष्टिवयोग-पौद्गालिक वस्तु जे म-नने आल्हादकारी लागे छे तेनो पोताथी वियोग थवाथी जेजे आहट दोहटना परि-णाम थाय छे,तेने इष्ट वियोगनामा आर्तध्या-न कहे छे. भाइ, मित्र, सज्जन, माता, पिता, स्त्री, पुत्र अने धन प्रमुख इष्ट वस्तुनो

(१२४)

वियोग थवाथी जीव विलाप करे छे, ते इष्ट वियोगनुं लक्षण छे.

२ अनिष्टसंयोग—अनिष्ट एटले दुःख-नां कारणभूत, शत्रु, दिरिद्रिपणुं. तथा कुभा-र्या, कुभोजन, कुपुत्र, आदिनो संयोग एट-ले संबंध थवों. ते थकी मनमां जे दुःख-चिंता उपजे, ते अनिष्ठसंयोग नामा बीजो पायो आर्तध्याननो जाणवोः

३ रोगचिंता-शरीरमां अनेक प्रकारना रोगो रह्या छे. मनुष्यना शरीरमां साडात्रण कोटि रोम राजि छे. एकेका रोममां पोणा बचे रोग रह्या छे. तेमांथी केटलाक रोगो उदये आवे छते जीवने चिन्ता थाय छे. हाय हाय हुं हवे शी रीते जीवी शकीश. अरे माराथी आवुं दुःख खमातुं नथी. अरे

(१२५)

हुं मरी जाउं छुं. अरे जो पहेलोथी में द-वाओ करावी राखी होत, तो आ वस्तते खावाथी मारो रोग मटी जात. अरे हुं हवे दुःख सहन कर्या करतां मरी जाउं तो सारुं. अरे कोइ सारा वैद्यने बोलावी मारा रोग-नी शांति थाय तेम करुं. आवा प्रकारनी रोग संबंधथी जे चिंता करवी, ते रोगांचें-ता नामनो आर्तध्याननो त्रीजो पायो जाणवो.

४ अग्रशौच-अग्र एटले आगळ भवि-ध्यकाल संबंधी शौच-एटले शोक विचार, चिंतवन, शोच करवों ते अग्रशौच कहीए. जो आ वर्षमां अग्रक काम करशुं तो आवता वर्षमां अग्रक लाभ थशे. दान, शीयल, अने तप वगेरेनुं फल मागे के जो में तप, दान, शीयल पाळ्युं होत, तो आवता भवमां दे-

(१२६)

वता थात, वा अम्रुक थात, चक्रवर्ति थात, राजा थात अने अम्रुकनो नाश करनार थात एवी आगला भवनी जे वाञ्छा तेने अम्रशौ-च कहे छे.

आर्तध्यानना चार पाया थकी जीव तिर्येचनी गतिमां जाय छे. माटे भव्य प्राणि-योए ए ध्यानथकी दूर रहेवुं, आर्तध्यान रूप शत्रुनो मनमां वास करवा देवाथी आ-त्मानी अनंतिऋद्धिनो नाश थाय छे. आत्मा, खरेखर आर्तध्यानथी अनादिकाळथी रज-ळ्यो अने हजी जो एनो संग नहीं मुके तो घणा भव भटकशे. जे आर्तध्यानने शत्रुह्तप जाणे छे, ते तेनाथी दूर रहेवा अंतःकरणथी महेनत करे छे. संसारमां भूंडनी पेठे रच्या पच्या थका दुर्ध्यान ध्यावे छे, ते पामरो अ-

(१२७)

थोगतिने सेवे **छे. संसारमां को**इ कोइनुं नथी. चेतन पर जड वस्तुने पोतानी मानी अनंता दुःख भोगवे छे. खरो शत्रु दुध्यीन छेः ए दध्यीने पसन्नचंद्रराजिं सातमी नरकनां दलीयां संचाव्यां. (एकटां करा-व्यां) पण धर्मध्यान रूपी योद्धाए आवी दर्ध्यानने हठावी, मोक्षरुप स्त्रीनो मेळाप क-रावी आप्यो. आश्चर्य एटलंज थाय छे के जीव पोते हित तथा अहितने जाणे छे, छतां अहितमां वर्ते छे. निर्श्रंथ महात्माओ हृदय-रूप महेलमां चंडाल सरखा आर्तध्यानने प्र-वेश करवा देता नथी. आत्महितैषियोए हुं कोण छुं, क्यांथी आन्यो, क्यां जाइश्व, तारु कोण, तुं कोण, ए वाक्यनो उपयोग पूर्वक विचार करी त्याज्य वस्त्रनो त्याग करवो,

(१२८)

एज हितकारक छे. वारंवार आ मनुष्यज-न्म पामवो दुर्लभ छे. भन्यो!!! जो धर्म-सामग्री पामी प्रमाद करशो, तो घणा भव भटकशो. अघोर दुःखमांथी छूटवानो आ उत्तम अवसर छे. एम ज्ञानीओ पुस्तक द्वारा जणावे छे.

आर्तध्यानना परिणाम पांचमा तथा छद्दा गुणठाणा सुधी होय छे. कारण के छद्दं गुणठाणुं प्रमत्त छे, माटे त्यां ए ध्या-ननो परिणाम संभवे छे.

२ रोद्र ध्यान.

१ हिंसानुवंधीरोद्रध्यान २ मृषानुवंधी-रोद्रध्यान ३ अदत्तानुवंधीरोद्रध्यान ४ परि-प्रहानुवंधीरोद्रध्यान

(१२९)

१ जे हिंसा करीने हर्ष पामे, बीजो कोइ हिंसा करतो होय तेने देखी खुश थाय. अ-थवा युद्धनी अनुमोदना (प्रशंसा) करे, तेने हिंसानुबंधी रौद्रध्यान होय छे.

२ जुठुं बोली मनमां हर्ष पामे. अहो में केवुं कपट कर्युं के-मारा जूटापणानी कोइने खबर पडी नहीं. एवो मृषावादरूप परिणाम, ते मृषानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

३ चोरी करी, ठगाइ करी, मनमां राजी थाय, अने चिंतवे जे मारा जेवो कोण बळवान छे, के जे पारको माल खाय छे. चोरोने चोरी करवामां सहाय आप-वाना परिणाम अने चोरी करनारनी प्रशं-सारूप परिणाम ते अस्तेयानुवंधी रौद्रध्यान जाणवुं.

(१३०)

४ धन, धान्य, खेत्र, वास्तुं, रूप सुवर्ण क्ष्य अने द्विपद नव जातनो परिग्रह वधारवानी घणी दृष्णा होय अने तेनी दृद्धिना उपायोत्तुं चिंतवन करे, कुढुंबना माटे गमे तेवुं पाप करे वा घणो परिग्रह मळवाथी अहंकार करे, अने जगत्ने तृणवत् माने. तथा परिग्रह रक्षण करवानी चिंता ए आदि परिणामने परिग्रह हानुवंधी रौद्रध्यान कहे छे.

ए चार प्रकारना ध्यान थकी जीव नरकनी गतिमां जाय छे. माटे भव्यात्मा-ओए चार प्रकारनुं रौद्रध्यान ध्यानुं नहीं. महा रौरव भयंकर दुःखनुं कारण रौद्रध्यान छे. रौद्रध्यान पांचमा गुणठाणा सुधी छे. छहे गुणठाणे पण एक हिंसानुबंधी रौद्रध्या-नान परिणाम कोइक जीवने होय छे. रौद्र-

(१₹१)

ध्यान रूप सर्प जेने करडे छे. तेने चतुर्गतिरूप भवभ्रमण करवुं पडे छे. जेम मनुष्यने सर्पनो भय लागे छे, तेम वैरागीओने रौद्रध्यान रूप सर्पनो भय लागे छे. मंत्रवडे मंत्रवादीओ जेम सर्पनं झेर उतारे छे, तेम धर्मध्यानरूप मंत्रवडे वैरागीयो पापरुप झेर उतारे छे. सर्प जेम अनिष्ट लागे छे तेम ज्ञानीओने रौद्र-ध्यानरूप सर्प अनिष्ट लागे छे. जनसमृह सर्पने पासे आववा देतो नथी, तेम ज्ञानीओ रौद्रध्यानरूप सर्पने पासे आववा देता नथी. एटलं विशेष छे के. सर्पडंसथी एकवार मरवं पढे छे पण रौद्रध्यानरूप सर्पढंशथी अनंति-वार जन्म मरण करवुं पढे छे. रीद्रध्यान अघोर रात्री समान छे. अघोर अंधारी रा-्त्रीमां जेम माणस अंध समान बनी जाय

(१३२)

छे, तेम माणस रौद्रध्यानरुप अंधारी अघोर रात्रीमां अज्ञानी बनी जाय छे. अघोर रा-त्रीमां जेम चोरोनो प्रचार थाय छे, अने तेओ खातर पाडे छे, तेम रौद्रध्यानरूप अ-घोर रात्रीमां राग, द्वेष, मोह, माया अदे-खाइ, निंदा, क्रेश, चाडी, अने असत्यरूपी चोरो, आत्मानी अनंत ऋद्धि छंटे छे. रौद्र-ध्यानमदिरा अत्यन्त बेभान कर्ता छे तथा अनंत दुःखनो हेतुभूत छे. हे चेतन !!! तुं आपोआप विचार के रौद्रध्यानरूप शत्रु तने हितकत्तों छे के अहितकर्ता छे? हितकर्ता तो कदापिकाले कही शकाय अने अहित करनार तो पत्यक्ष देखवामां आवे छे छतां तं केम तेनो संग छोडतो नथी ? क्युं ? तने कंड़ पैसा बेसे छे ना तेम

(₹₹\$)

पण नथी. द्रढमहारी जेवा हिंसके पण ए शत्रुनो संग त्याग कर्यो त्यारे ते सुख पा-म्यो. हे चेतन!!!तं विचार के ए रौद्रध्यान-रूप शत्रुना वशमां पडेलो मुम्मण शेठ, तथा संभूम चक्रवर्ति नरकनां महा रौरव दुःख भोगवे छे, तेम छतां केम तुं कंइपण मनमां विचार करतो नथी. सूर्यने तथा चंद्रने जेम राह घेरे छे, तेम तने रौद्रध्यानरूप राहु प्र-हण करे छे. जेम कोयला खावायी काळं मुख थाय छे, तेम रौद्रध्यानथी समजवं. लाखो शत्रुओने जीतनाराओ पण रौद्रध्या-नरूप शत्रुने जीती शकता नथी, एवं अञ्चभ, आत्मघाती, मलीन, रौद्रध्यान छे. एनो खंत पूर्वक त्याग करवो, एज हितकारी शि-क्षण छे. ए वे ध्याननो त्याग करवो जो-

(8\$8)

इए. त्यारे इवे कोनो स्वीकार करवो तेवी आकांक्षा थतां धर्म ध्याननो स्वीकार करवो, एम शास्त्रकार जणावे छे.

३ धर्मध्यान.

दुर्गतिमांपडता प्राणियोने धारण करी राखे अर्थात् दुर्गतिमां पडवा दे नहीं अने उच्च गति आपे तेने सामान्य प्रकारे धर्म-ध्यान कहे छे.

१ आज्ञाविचय २ अपायविचय २ वि-पाकविचय ४ संस्थानविचय एवं धर्मध्यान-ना चार पाया छे.

आज्ञाविचय-वीतराग देवनी आज्ञा साची करी सदद्दे, भगवंते छ द्रव्यनुं स्वरूप नयप्रमाण निक्षेपा सद्दित सिद्ध स्वरूप तथा

(१३५)

निगोद स्वरूप जेवी रीते कहुं छे, तेवी रीते हृदयमां धारे, यथातथ्य करी माने. सहहे, वीतरागनी आज्ञा नित्यानित्यपणे तथा निश्चय व्यवहारपणे माने, श्रद्धा करे, तथा उत्सर्ग अपवादपणे माने, श्रद्धा करे, ते आज्ञा प्रमाणे जेने यथार्थ उपयोग भासन थयो, तेना हर्षथी ते उपयोग मध्ये, निराधार, भासन, रमण, अनुभवता, एकता, तेमां तन्म-यपणुं जेने थाय छे तेना ध्यानने आज्ञा विचय धर्मध्यान कहे छे.

२ अपायिवचय-जीवमां जे अग्रुद्धप-णाथी कर्मना संयोगे संसारी अवस्थामां अनेक प्रकारनां अपाय कहेतां दृषण छे. ते अज्ञान, राग, द्वेष, अने कषाय अने आस्त्रव, ते मारा नथी. तेना थकी हुं अनंतोकाल रझळ्यो,

(१३६)

अने अनेक प्रकारनी आकृतिने धारण करी चारगतिमां भम्या करुं छुं. ते अज्ञान. राग. द्रेष. मारो घात कत्ती छे. ते माराथकी भिन्न छे. हुं ते थकी जुदो छुं. अनंतज्ञान, अनंत-दर्शन, अनंत चारित्र अने अनंत वीर्यमयी छुं. शुद्ध, बुद्ध, अविनाशी छुं, अज, अनादि, अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल्ल, अ-कल, अमल, अगम्य, अनामी, अबंधक, अकर्मी, अरूपी, अछेदी, अभेदी, अवेदी, अ-लेशी. अयोगी. अभोगी. अरोगी. अकषायी. अखेदी. अशरीरी, अनाहांरी, अन्याबाध, अनवगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अयोनि, अ-प्राणी. अतींद्रिय. अपर. अपर, अपरंपर, अन्यापी, अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अ-शोकी, असंगी, छोकाछोकज्ञायक, ग्रद्ध अने

(१३७)

चिदानंदमय मारो आत्मा छे. एवो एकाग्रताः रुप जे ध्यान, तेने अपायविचय धर्मध्यान कहे छे.

३ विपाकविचय-पूर्वोक्त विशेषण युक्त मारो जीव छे, पण अनादिकालथी कर्मनो संबंध आत्मानी साथे लोलीभ्रतपणे छे तेथी जीव अनंतां दुःख भोगवे छे. कर्मवशे जीव दःखी छे. कर्मनो विपाक चितवे जे-जीवनो ब्रानगुण ते ज्ञानावरणीय कर्मे दाब्यो छे.जी-वनो दर्शन ग्रण ते दर्शनावरणीय कर्मे दा-ब्यो छे, अव्यावाध ग्रुण ते वेदनी कर्मे रोक्यो छे. क्षायिक गुण ते मोहनीय कर्मे रोक्यो छे. अक्षयस्थितिरूप जे ग्रुण ते आयुष्य कर्मे दा-ब्यो छे. जीवनो अरूपी गुण ते नामकर्मे दा-व्यो छे, अगुरु लघु गुण ते गोत्र कर्मे दाब्यो

(255)

छे, अने अनंत वीर्य गुण ते अंतराय कर्में रोक्यों छे. एम आत्माना आठ गुण ते आठ कर्में रोक्या छे. आ संसारमां भमतां थकां जे जीवने मुख दुःख थाय छे ते कर्मथी थाय छे मोट पौद्गलिक मुख उत्पन्न थये छते खुशी थवुं निह, अने दुःख आवे छते शोक करवो नहीं. कर्म स्वरूपनी मकृति, स्थिति, रस, अने मदेशनो बंध, उदय, उदीरणा, तथा सत्ता चितववानों जे एकाग्रतारूप परिणाम, तेने विपाकविचय धर्मध्यान कहे छे.

४ संस्थानविचय—चौद राजलोकनो स्वरूप आ प्रमाणे विचारे. आ लोक चडद-राज प्रमाण ऊंचो छे. ते मध्ये सातराज अभोलोक छे. वचमां अहारसो योजन मनु-ष्य क्षेत्र तिर्छो लोक छे. ते उपर कंइक उंणुं

(१३९)

सातराज उर्ध्वलोक छे. तेमां सर्व वैमानि-क देवता वसे छे, अने ते ऊपर सिद्ध-शिला छे. तेनी ऊपर एक योजनना चो-वीस भाग करीए तेमांना त्रेवीश भाग नीचे मकी उपरना चोत्रीसमा भागे सिद्धक्षेत्र छे. ए रीते छोकनं प्रमाण छे. ए छोकनं संस्थान वैशाख छे. अनंतकाल पर्यंत जीवे संसारमां भगतां सर्व लोकने जन्ममरणवडे स्पर्क्यों छे. एवं जे लोकतुं स्वरूप चिंतववुं तथा लोकमां रहेला धर्मास्तिकाय, अधर्मी-स्तिकाय आदि पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथा परिणमन तथा द्रव्य मध्ये गुणपर्यायनं अवस्थान तथा द्रव्य मध्ये रहेला उत्पाद. व्यय अने भ्रवनं सत्पणुं तेनो जे एकाग्रता-ए तन्मय चिंतवन, परिणाम, तेने संस्थान

(\$80)

विचय धर्मध्यान कहे छे.

आ आरामां भव्य प्राणीयोने धर्मध्या-ननो आधार विशेष छे. माटे तेने विषे त-त्पर थवुं ते सुखकारी छे. धर्मध्यान चोथा गुणटाणाथी मांडीने सातमा गुणटाणा सुधी होय छे.

४ शुक्रध्यान.

शुक्क कहेतां निर्मेल शुद्ध परआलंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मयपणे ध्यावबुं तेने शुक्रध्यान कहे छे. तेना पाया ४ चार छे.

१ पृथक्त्व वितर्क समिवचार (२) एकत्व वितर्क अमिवचार (३) सूक्ष्म क्रिया अमितपाति (४) अच्छित्र क्रिया निष्टत्ति ए चार शुक्रध्यानना पाया छे.

(\$8\$)

१ वितर्क समविचार-पृथक्त्व कहेतां जीवथी अजीव जुदा करवा. स्वभाव तथा विभावनी जुदी पृथक्पणे वहेंचण करवी. स्वरूपने विषे द्रव्य तथा पर्यायनो पृथ-कृत्व एटळे जुदा पणे ध्यान करी पर्याय ते ग्रणमां संक्रमावे, अने ग्रण ते पर्यायमां संक्र-मावे ए रीते स्वधर्मने विषे धर्मांतर भेद ते प्रथकत्व कहीए, अने तेनो वितर्क ते जे श्रु-तक्काने स्थित उपयोग, अने सप्रविचार ते सविकल्प उपयोग एटले एक चिंतच्या पछी बीजो चिंतववो, तेने समविचार कहीए. एटले निर्मल विकल्प रहित पोतानी सत्ता-ने ध्यावे, ते पथक्त्व वितर्क सप्रविचार ना-मनो पहेलो पायो जाणवो. ए पहेलो पायो आठमाथी अगीयारमा गुणठाणा सुधी

(१४२)

होय छे.

२ एकत्ववितर्क अप्रविचार-जे जीव आपणा आत्माना गुण पर्योयनी एकता करी ध्यावे. ते आवी रीते के=जीवना ग्र-णपर्याय अने जीव ते एकज छे. मारो जीव सिद्ध स्वरूप एकज छे. एवो एकत्व स्वरूप तन्मयपणे अनंता आत्मधर्मनो एकत्वपणे ध्यान-वितर्क कहेतां श्रुतज्ञानालंबीपणे अने अप्रविचार कहेतां विकल्प रहित दर्श-नज्ञाननो समयांतरे कारणता विना रत्नत्र-यीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान, वीर्य उपयोगनी एकाप्रता ते एकत्व-वितर्क अमविचार जाणवो. ए बीजो पायो बारमा ग्रुणठाणे ध्यावे. ए वेड पायामां श्रु-तज्ञानालंबीपणो छे, पण अवधि मनःपर्यव

(\$8\$)

क्षानोपयोगे वर्ततो जीव कोई ध्यान करी शके नही. कारणके ए वे क्षान परातुयायी छे माटे, ए ध्यानथी घनघातीयां चार कर्म खपावे. निर्मल केवलक्षान पामे. पछी तेरमे गुणठाणे ध्यानंतरीए रहे. तेरमाने अंते अने चलदमे गुणठाणे नीचे ममाणे वे पाया ध्यावे.

३ स्रक्ष्मिक्रयाअप्रतिपाति—स्रक्ष्म मन वचन कायाना योगरुंधे. शैलेशी करण करी अयोगी थाय. अप्रतिपाति निर्मल वीर्य अ-चलतारूप परिणाम ते स्रक्ष्म किया अप्रति-पाति ध्यान जाणवुं. इहां सत्ताए ८५ प्रकृति रही हती, तेमांथी ७२ ख्यावे.

४ उच्छित्र क्रियानिष्टत्ति-जे योगरूं-

(888)

धन कीधा पछी शेष तेर प्रकृति खपाने अ-कर्मी थाय, सर्व क्रियाथी रहित थाय ते स-मुछिन्न कियानिष्टत्ति शुक्तलध्यान जाणवुं. ए ध्यान ध्यावतां शेष कर्मप्रकृति दललरण-रूप क्रिया जलेदे. अवगाहना, देहमानमांथी त्रीजो भाग घटाडे, शरीरनो त्याग करी अहींथी सातराज ऊपर लोकने अंते जड़ सिद्ध थाय.

हवे वीजां चार ध्यान कहे छे. (१) पदस्थ (२) पिंडस्थ (३) रूपस्थ (४) रूपातीत.

१ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपा-ध्याय अने साधु ए पंचपरमेष्टीना गुणने संभारे, तेनुं हृदयमां ध्यान करे ते पदस्थ ध्यान जाणवुं.

(१४५)

२ शरीरमां रह्यों जे आपणो जीव तेमां अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, अने साधुपणाना सर्व गुण छे एहवुं जे ध्यान ते पिं- इस्थ ध्यान कहीए. अथवा गुणीना गुण- मध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान जाणवुं.

३ शरीरकर्मादि रूपमां रह्यो थको पण मारो आत्मा अरुपी अनंतगुणी छे, शरी-रमां रहेला आत्मामां ध्यान वडे तल्लीन थवुं, ब्रह्मरन्ध्रादि स्थानोमां ध्यान धरवुं, तेने पिं-इस्थध्यान कहे छे. ए त्रण ध्यान धर्म ध्यान नमां गणवां.

४ रूपातीत, निराकार, निःसंगी, नि-र्मल, संकल्प विकल्प रहित, अभेद, एक, शुद्ध, सत्तारूप, चिदानन्द, असङ्ग, अखंड,

(१४६)

अनंतग्रण पर्याय रूप आत्मस्वरूपनुं ध्यान, ते रूपातीत ध्यान जाणवुं. अहींयां मार्गणा, गुणठाणां नय, प्रमाण, मति आदिक ज्ञान, क्षयोपश्मभाव, सर्व त्याग करवा योग्य छे. ए रूपातीत ध्यान कह्युं. विशेष चार ध्याननुं स्वरूप योगशास्त्र आदिथी जाणवुं.

त्रीजुं धर्म ध्यान तेनी चार भावना कहे छे.

चार भावना.

(१) मैत्री भावना (२) प्रमोद भा-वना (३) कारुण्य भावना (४) गाध्य-स्थ्य भावना

मैत्री भावना.

सर्व जीव साथे मित्रता चिंतववी. कोइ

(\$80)

जीव मारो दुइमन नथी. सर्वे जीवना आ-त्माओ सिद्ध समान सत्ताए छे. अने कर्मना वश्यी संसारमां सुखी दुःखी देखाय छे, ते सर्व जीव मारा सजातीय भाइ छे. एके-न्द्रियादिथी पञ्चेन्द्रिय सर्व जीव सजातीय छे, ते मारा बांधव छे. मित्र छे. तो तेम-ना उपर मारे द्वेष करवो न जोइए. तेमनं भद्धं चितववुं मार्ह खराब करवाने समर्थ नथी. कर्मनोज ए प्रपंच छे. कर्म ए जड वस्तु छे. अचेतन छे, रूपी छे; कर्म वस्त्र विजातीय छे. ए थकी मारे दर रहेवं जोइए अने एना प्रपंचमां फसावं मारे योग्य नथी. अनादिकालथी कर्म जड वस्त मने चार गतिमां भटकावे छे, अने पोतानं स्वरूप ओळखवा देतं नथी.

(385)

दारु सारा माणसने पण वेभान वनावी दे छे अने तेना गुणनो नाज्ञ करे छे, तेम कर्मे मारा गुणनो नाज्ञ कर्यो छे.

जेम कोइ पांच मित्रो हळीमळीने टर-रोज एकटा रहे छे अने एक बीजा साथे सारी रीते मित्रता राखे छे. परस्पर भछं वांछे छे. एक दिवसे पांच मित्रोए दारु पीधो, ते दारुनी नीशा खुब चढी, त्यारे ते परस्परस गाळो देवा लाग्या, अने एक बीजाने मारवा लाग्या. तेमां ए सर्वे प्रपंच-नुं कारण दारु छे. हवे ज्यारे ए दारुनो नीशो उतरी गयो त्यारे ते एक बीजा साथे हळीमळीने वातो करवा लाग्या, अने मित्र-पणे वर्तवा लाग्या. तेम कर्मरूपी ढारुना जुस्साथी सर्व जीवो एक बीजाने शत्रु दु-

(\$8**\$**)

भन भाइ बेन वगेरे प्रपंच तरीके माने छे, पण तेमां जीवोनो कांइ वांक नथी। ए स-वेंचुं कारण कर्म छे. कर्मवडे जीव बीजा जीवने दुभ्मन तरीके धारे छे, पण तेमां कोइ जीव कोइनो दुभ्मन नथी. कर्म थकी रहीत थएला सिद्ध महाराजनुं कोइ खराब करवा समर्थ नथी तेम हुं पण ज्यारे कर्म रहित थइश, त्यारे कोइ मारुं खराब करी शकवा समर्थ नथी, कर्म तेज दुःखका-री छे.

कुतराने कोइ माणस कांकरो मारे तो ते कांकराने करडवा दोडे छे. सिंहने कोइ माणस गोळी मारे तो ते गोळी तरफ नहीं जतां ए गोळी कोणे मारी एम लक्षी मारनार सामो दोडे छे. तेम केटलाक प्राणी कूतरा

(१५०)

अने केटलाक सिंहनां जेवा होय छे. कोइ माणसे कंइ तेनुं बगाडयुं होय तो ते माणसे मारुं बगाडयुं, अरे ए मारो शत्रु छे, अरे ए गारो वैरी छे. एम धारी तेन्नं ग्रंडं करवा तत्पर थाय छे, अने द्वेष करे छे, पण विचारतो नथी के जो मारे ग्राभक-र्मनो उदय वर्ततो होत तो मारुं ग्रुंडुं शी रीते करवाने समर्थ थात. हाल माठा कर्मनो विपाक उदये आच्यो छे, तेथी अन्य मनुष्य निमित्त कारणभूत थयो छे. पण तेमां कंइ तेनो दोष नथी. ए अग्रभ कर्म में कर्या छे तेनो ए दोष छे. माटे हे चेतन!!! तं कर्मबंध रहीत था !!! अने कर्मनी जाळमां फसाइश नहीं. जेटलां कर्म कर्या छे, तेटलां भोगववां पढशे. तं बीजा माणस उपर द्रेष शामाटे

(१५१)

करे छे पण ए आत्मा होवाथी तारो मित्र छे. तारुं बगाडवा ए समर्थ नथी, एम मैत्रीभावना भाववी.

सिंह जेम गोळी तरफ नहीं दोडतां गोळी मारनार कोण छे. एम विचारी मार-नार सामो दोडे छे. तेम सिंह जेवा प्रुरुषोए दुःखना निमित्त कारण उपर दृष्टि नहीं देतां एम चिंतवबुं के ए दुःख थवानुं मुख्यए कारण कर्म छे. ज्ञानी कर्म दूर करवाना उ-पायो शोधे छे. जो में माठा वा सारां कर्म कर्या हजे. तो ते प्रमाणे मारे ग्रभाग्रभ वि-पाक भोगववा पडशे. तेमां बीजो जीव मारुं भूंडुं करवा वा सारुं करवा समर्थ नथी. सर्व कर्मथी दुःख थाय छे, माटे सिंह समान पुरुषो कर्मनो नाश थाय तेम वर्ते छे, पण

(१५२)

कोइ जीव उपर द्वेषभाव करता नथी.

मारा आत्माने जेम कर्म छाग्यां छे, तेम बीजा जीवोने पण कर्म छाग्यां छे पण आत्माओ तो सर्वना सरखा छे. मारो आत्मा अरूपी, अनंतज्ञान, अनन्त दर्शन अने अनन्त चारि-त्रनो भोक्ता छे. सर्वे जीवो गुणोवडे एक सरखा छीए. सजातीय छीए. माटे सर्वे जीवो मारा मित्र छे. एवी भावनाने मैत्री भावना कहे छे. सर्व जीव उपर हितबुद्धि राखवी तेने मैत्री भावना कहे छे.

२ बीजी प्रमोद भावनाने कहे छे. ग्रुण-वंत अने ज्ञानादिक उपर राग तेने प्र-मोद भावना कहे छे. धर्म करता जीवोने देखी खुशी थवुं. ज्ञानवंत वैरागी ग्रुनियोने देखी हर्ष धरवो, तथा दश हष्टांते दोहीलो

(१५३)

मनुष्य जन्म पामीने श्रावक कुल अवतार आदि धर्मनी जोगवाइ पामी हर्ष धरवो, तेने प्रमोद भावना कहे छे.

३ धर्मवंत उपर राग अने मिथ्यात्वी उपर द्वेष पण नहीं तेने माध्यस्थ भावना क-हे छे. हिंसक जीव उपर पण उत्तम जीवने करुणा उपजे. उपदेश देवा थकी जो सारा मार्गे आवे तो तेने शुद्ध मार्गे आणवो. क-दाचित् मार्गे न आवे तो पण द्वेष न करवो. केमके ते अजाण छे. एम जाणवुं ए माध्य-स्थ्य भावना.

४ सर्व जीवने पोताना तुल्य जाणी दयापाले. कोइने हणे नहीं, तथा जे दुःखी होय, धर्महीन होय, तेना उपर करुणा लावे, अने तेनुं भछं करवा चाहे. तथा धर्महीन

(१५४)

मनुष्य देखीने एम इच्छे के आ मनुष्य क्यारे धर्म पामशे ? यथार्थ आत्मतत्त्वनुं स्व-रूप धर्मने क्यारे अवलंबशे. एवो जे परिणाम तेने चोथी कारुण्य भावना कहे छे.

बार भावना,

अनित्य भावना.

१ इदुंब, धन, पुत्र अने परिवारादि सर्व विनाशी छे. मत्यक्ष देखाय छे ते शरीर पण एक दिवस नाश पामशे. जीवनो मूलधर्म अविनाशी छे. जे जे नजरे देखवामां आवे छे ते सर्वनो नाश थाय छे एम विचारचुं ते पहेळी अनित्यभावना.

(१५५)

२ अशरणभावना.

२ संसारमां जीवने मरण समये शरण राखवा कोइ समर्थ नथी। माता, पिता, भाइ, बेन अने पुत्रादि जोतां शरीर मूकी जीव परछोक प्रयाण करे छे ते कोइनाथी रखातो नथी। राजा होय वा रंक होय, कीडो होय वा इंद्र होय, तो पण मृत्यु कोइने ने मूकतुं नथी। चार गतिना जीवोने मरण थकी रक्षण करी शरण राखवा कोइ समर्थ नथी। एम विचारबुं ते बीजी अशरणभाव-ना जाणवी.

३ संसारभावना.

३ कर्मना योगे जीव चारगतिरूप सं-सारमां अनादिकाळथी जन्म मरण करे छे,

(१५६)

अने असब दुःख भोगवे छे. संसार बळता अग्नि (दावानळ) समान छे. उत्तम पुरुषो-ए चारित्र ग्रहण करी संसारनो त्याग कर्यो छे. अरे हुं महा पापी संसारमां राच्यो माच्यो छुं. हुं हवे दुःखमय संसारथी क्यारे छुटीश. आ प्रमाणे विचारणा ते संसारभा-वना जाणवी.

४ एकत्व भावना.

जीव एकलो आव्यो छे, अने अहींथी एकलो बीजी गतिमां जाय छे. धन धान्यादिक परिग्रह, पुत्र, अने कलत्र, वगेरे साथे आववानुं नथी. कुटुंबनुं पेट भ-रवा सारू हिंसा, असत्य, चोरी-कूड कप-ट्यी हुं लक्ष्मी पेदा करुं छुं, पण तेथी थए-ला पापमांथी कोइ भाग लेनार नथी. क-

(१५७)

रेल कर्म मारे एकलाने भोगववं पडक्रे. सगां. वहालां, वहालीस्त्री, पुत्र अने दीकरीओंने जन्मती वखते साथे लाव्यो नहोतो. पूर्वभ-वना संबंधथी मारे तेमनो मेळाप थयो छे. पण अंते सर्व मृकी मारे एकछुं जबुं पडशे. जे जे प्रमाणे अहीं हुं धर्म वा अधर्म करुं छुं ते ते प्रमाणे परभवमां सुख दुःख पा-मीश. परने मारुं मानी हुं मलकाउं छुं, पण वस्तुतः कोइ मारुं नथी. संबंधे करी सर्व भेगुं थयुं छे, ते सर्वनो एक दिवस वियोग थाय छे. चोराशीलाख जीवयोनि भमतां दश दृष्टांते दोहीलो मनुष्य जन्म पामी, हे चेतन !!! इवे केम प्रमाद करे छे. आखो दिवस घांचीनी घाणीना बळदनी पेठे पाप काममां लागी रह्यो छे, पण जाणतो नथी के, मृढ ! अंते अनंतु

(१५८)

दुःख भोगववुं पडशे. देखाता शरीरनी पण अंते खाख थइ जवानी छे. काया माटीमां माटीरूप थड जशे. आ वखते जेवी धर्मनी सामग्री मळी छे. तेवी वारंवार मलनार नथी. माटे हे चेतन !!! चेत! चेत! माथे काळ झपाटा देत. तुं क्यांथी आव्यो*.* क्यां जा-इश्व. तुं कोण छे. तारुं कोण छे. एनो वि-चार कर. राम, रावण, पांडव, कौरव अने लक्ष्मण जेवा वीरपुरुषो एकला गया. तो तं केम मोहराजानी घेंनमां उंघे छे. जाग! जाग[‡] एकत्वपणुं धारः इत्यादि विचारणा ते एकत्व भावना जाणवी.

> ५ अन्यत्वभावना. भा संसारमां कोइ कोइनुं नथी. सौ

(१५९)

स्वार्थनं सग्नं छे. ज्यारे आपणाथी बीजानो स्वार्थ सरतो नथी. त्यारे अन्योतं आपणा जपरथी हेत जतरी जाय छे. हे चेतन! तारी नजरे जे जे पदार्थी देखाय छे, ते ताराथी जुदा छे, अने तुं तेनाथी जुदो छे. माता, पिता, भाइ, बेन, स्त्री, पुत्र अने धन ए सर्वे हे जीव ताराथी जुदुं छे, दृश्य शरीर छे ते पण हे चेतन! ताराथी जुदूं छे, लेक्या, योग, पांच संस्थान, पांच शरीर, तथा पांच संघयण, दस प्राण, अने पांच इन्द्रियो. ए सर्व हे चेतन! ताराथी जुदुं छे. तेनामां पो-तापणुं मानीश नहीं. एम विचारवं ते अ-न्यत्व भावना जाणवी.

> ६ अशुचिभावना. श्वरीर अपवित्र मळ मृत्रनी खाण छे.

(१६०)

अशुचिमय छे, पुरुषनां नव अने स्नीनां बार द्वारथी सदा अशुचि नीकळे छे, हाल शरी-र पित्रत्र लागे छे, पण रोग थए छते दुर्गंधी यक्त थइ जाय छे. मांस, रुधिर, मेद अने हाडकां वगेरेथी शरीर बन्धुं छे, तेने देखी हे चेतन! तुं शुं राचे छे. गर्भावासे कीडानी पेठे नवमास मळमां रह्यो, सूर्यनो प्रकाश आवे नहीं, अने उंधे मस्तके रहेवुं एहवां गर्भनां दुःख चेतन शुं तुं विसरी गयो ? अशुचिमय काया देखी मोह पामी शुं राचे छे? एम विचारवुं ते छठी अशुचिमावना.

७ आस्रवभावनामिध्यात्व, अविरित, कषाय, अने योगथकी जीव आस्रवनुं ग्रहण करे छे. ग्रुभाग्रुभ कर्मनां दळीयां आववानो जे रस्तो तेने आस्रव कहे छे. ग्रुभ दळी-

(१६१)

यांने पुण्य कहे छे, अने आत्मानी साथे लागेलां जे कर्मनां अञ्चभ दलीयां तेने पाप कहे छे, हिंसा, असत्य, चोरी, मैथन अने परिग्रह रूप आस्त्रवंशी कर्मनो बंध थाय छे. राची माचीने पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय सेववाथकी आस्रवनो बंघ थाय छे. प्रमा-दना वशथकी तेम मन वचन कायाना दुः-प्रणिधानथी तेमज क्रोध. मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, दुगंछा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुंसकवेद, ए आ-दिथी आत्मानी साथे आसवनो संबंध थाय छे. जीव अनादि काळश्री आस्रवना ग्रहण करवाथी चार गतिमां भम्या करे छे. अने तेथी अनेक प्रकारनां दुःख पामे छे. ए आ-स्रव महा दु:खदायी छे. आत्मानं अहितका-

(१६२)

रक आस्रव छे, माटे तेनाथी है चेतन ! तुं दूर रहे, एम विचारवुं ते आस्रवभावनाः आस्रवनो संबंध अभवी जीवने अनादि अ-नंत छे अने भवी जीवने अनादि सांत छे.

७ सम्वरभावनाः

आस्रवनो जेनाथी रोध थाय तेने संवर कहे छे. जीव भावना भावे के—इर्या-समिति, भाषासमिति, एषणासमिति इत्या-दि पांचसमिति अने त्रणगृप्ति शुद्ध क्यारे पाळीश, अने बाबीस परिसहने समभावे क्यारे सहीशः चेतन! विषयाभिलाषथी मन पाछुं वाळ. क्षांत्यादि दश्चविध यतिधर्म शुद्ध पाळवा उद्यम कर के जेथी आत्महित थायः यतिधर्म भवोभवनां दुःख टालनार छे, अने पंचमी गति जे मोक्ष तेने आपनार छे. धन्य

(१६३)

छे ते ग्रानिवरनेके के जे मान अने अपमानने चित्तमां सम गणे छे, सोनं अने पाषाण चि-त्तमां समगणे छे, शत्रु मित्र उपर समद्दष्टि राखे छे. पांच प्रकारनां चारित्र हे जीव तने क्यारे प्राप्त थशे. क्यारे एकाकी अप्रतिबद्ध विहार करीश्च. हे चेतन कोइपण जीव साथे वैर विरोध करीज्ञ नहीं, कारण के तेथी भवोभव दुःख पामीशः कपट कर नहीं. वि-श्वासघाती थाइश नहीं. संसाररूप समुद्रमां बुडाडनार नव प्रकारनो परिग्रह छे. तेनो त्याग कर! मूर्छा-ममता राखवाथी जन्म मरण करवां पडे छे, तो साक्षात नवविध परिग्रह केवां केवां दुःख पमाडशे, तेनो वि-चार करी परिग्रहनो त्याग कर. विषयने विष (ब्रेर) सरखो जाण. एकेक इंद्रियना

(१६४)

विषयथी, भमरो, पतंग, मृग अने मीन दुःख पामे छे, तो जे पांचे इंद्रियोना विषयोना वश्रमां थइ गया छे, तेनी शी गति थशे. अ-नादि काळथी संसारमां उंचनीच कळमां जीव उत्पन्न थाय छे. पुण्यना योगे उंच कुळमां अ-वतरे छे. नीच कळमां उत्पन्न थएलानी निंदा करी पाछो नीच कुळमां उत्पन्न थयो. एम हे चेतन!!!तुं अनंतिवार उंचपणुं तथा नीचपणुं पाम्योः बटाटा, शकरीयां, गाजरीयां, मूळा, आद अने लसणमां जीव अनंतिवार उत्पन्न थयो. तो ते वखते जीवतुं उंचपणुं क्यां गयुं हतुं. एम समजी आठ मदने करीश नहीं। ए आठमद आत्माना गुणोनो नाश करनार छे. स्थुलिभद्र, मरीचि अने सनत्कुमार आदि, एकेक मद करवाथी कड़क विपाकने पाम्या

(१६५)

छे, माटे ए आठ मदनो त्याग कर. कर्मवस्तु थकी तुं जुदो छे. तुं अनंत रत्नत्रयीनो भो-क्ता छे. तुं अरूपी छे, अज छे, अविनासी छे, अकषायी छे, अरोगी छे, अमायी छे, अवेदी छे अने अछेदी छे, इत्यादि संवरभा-वना जाणवी.

९ निर्जरभावना.

९ निर्जरा=जेनाथी कर्म निर्जरे (दूर थाय) तेने निर्जरा कहे छे. हे चेतन!!! तुं निर्जरभावनाने हृदयमां धारण कर, अने व्रत-पच्यवाणनो आदर कर. ज्ञान सहित क्रिया करवी ते निर्जरानुं कारण छे. बारभेदे तप-श्र्या करवाथी निर्जरा थाय छे. निकाचित कर्म पण तप थकी दूर थाय छे. सुकोश्रळ

(१६६)

म्रुनि, ढंढणकुमार अने गजसुकुमाल जेवा मु-निश्वरोने धन्य छे के जेओए उग्र तपश्चर्या करी छे. हुं पण ज्यारे तेवी रीते तपश्चर्या करीश, त्यारे धन्य दिवस मानीशः इत्यादि विचारणा ते निर्जर भावना जाणवी.

१० लोकस्वरूप भावना.

चउदराज लोकतुं स्वरूप विचारवुं ते लोक स्वरूप भावना जाणवी. एनुं स्व-रूप पूर्वे लखवामां आव्युं छे तेथी अहीं नथी लख्युं.

११ बोधिदुर्रुभभावना.

संसारमां भमतां जीवने समकितनी प्राप्ति थवी दुर्रुभ छे. समकित पाम्या छतां पण चारित्र प्रहण करवुं दुर्रुभ छे. इ-

(१६७)

त्यादि विचारणा ते बोधिदुर्रुभ भावना जाणवी.

१२ धर्मना कथक सद्ग्रहनी दुर्छभता.

धर्मना कथन करनार सद्गुरु तथा जिनेश्वर भगवान्नी स्याद्वादमय वाणी सां-भळवानी सामग्री पामवी दुर्छभ छे, धर्मगुरुनी प्राप्ति दुर्छभ छे. ते बारमी धर्मदुर्छभ भावना जाणवी.

ए बार भावनानो विस्तार, अत्र ग्रंथ गौरवना भयथी कर्यो नथी. विशेष अधि-कार बीजा ग्रंथोयकी जाणवो. मनुष्य जन्म पामी आलस्य, विषय, कषाय अने पर-भावमां जो आयुष्य गाळीश तो हे चेतन!!! दुर्गतिमां जाइश्च. आत्मखरूप ओळखवुं

(१६८)

घणुं दुर्लभ छे. चिंतामणि रत्न पामवुं ते स-हेल छे पण स्याद्वाद रीते आत्मज्ञान थवुं मुक्केल छे. मारो आत्मा शाक्वतो छे, पण कर्मना प्रपंचथी चतुर्गतिरूप संसारमां भटके छे. हे चेतन!!! तं ज्ञान, दर्शन अने चारित्र-रूप रत्नत्रयी सहित छे. धन, क्रदंब, इंद्रि-य, शरीर, लेक्या अने योग, ए सर्व परव-स्त छे. एमां तारुं कंइ नथी. जीव पोते धन, प्रत्र, अने स्त्रीना मोहमां फसाइ तेने पोतानुं मानतो अनंत दुःखनी परंपरा पामे छे. संयोगी वस्तु, धन, अने कुटुंब, ए सर्व ताराथकी अत्यंत भिन्न छे. हुं चेतन छुं, ए पुद्रगल अचेतन जड छे. तेनी संगतिथी हं पण जह जेवो थयो छं. हुं अमूर्त छं, अने पुदगल मृतिं छे. हुं शुद्ध निर्मल छुं.

(१६९)

बुद्ध छुं, ज्ञानानंदी छुं. हुं विकल्प संकल्प थकी रहित छुं. मारुं स्वरूप अलक्ष्य छे. हुं कर्म रोग थकी रहित, अरोगी छुं. हुं छले-क्याथी रहित अलेकी छं. हुं चार प्रकार-ना आहार थकी रहित अनाहारी छं. हं अव्याबाध सुखनो भोगी छूं, हुं अगुरु लघु छुं. अने आ सर्व प्रपंच कर्म थकी छे. एम आत्मार्थी आत्मस्वरूपनी भावना भावे छे अने खगुण रमणताने आदरे छे. जेम जेम संसारथकी उदासीनपणं थाय छे. तेम तेम तेम संवेगरंगे रंगीत आत्मा थाय छे. आ काळमां भव्य प्राणीओने ज्ञाननो आ-धार छे. ज्ञानवडे आत्मानं यथातथ्य स्वरू-प जणाय छे, माटे ज्ञाननो घणो करवो एज हितकारी छे.

(१७०)

समिकत सहित ज्ञान, दर्शन, चारित्र ते मोक्षनुं कारण छे. ज्ञान सहित चारित्र न ग्रहण थइ शके, तो पण श्रेणिक राजानी पेठे सद्दहणा शुद्ध राखवी. जो समकित ग्रद्ध छेतो मोक्ष आसम्र छे. कहां छे के दंसण भट्टोभट्टो,दंसण भट्टोइन्थ्यि निव्वाणं, सिज्झंति चरण रहिया, दंसण रहिया न सिज्झंति ॥ १ ॥ वळी आगममां कह्यं छे के-जंसकईतंकीरइ, अहवा नसकई तयंमिसद्दहणा; सद-हमाणो जीवो,वच्चइ अयरामरंठाणं॥ अर्थ-रे जीव तुं करी शकें तो कर अने जो न करी शके तोपण जेवो वीतराग भगवंते धर्म स्याद्वादरूप उपदेश्यो छे, ते प्रमाणे ह-

(१७१)

दयमां शुद्ध श्रद्धा राखा श्रद्धा धरनार अनु-क्रमे मोक्षस्थानक पामे छे जीवाजीवा पुण्णं, पावासवसंवरो य निज्झरणा, बंधो मुख्खो य तहा, नव तत्ता हुंति नायठवा—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आ-स्रव, संवर, निर्जरा, वंध, अने मोक्ष, ए नवतत्त्व जाणवा योग्य छे.

हेया बंधासव पुण्ण पावा, जी-वाजीवाय हुंति विन्नेया, संवर नि-ज्झर मुखो, तिन्निवि ए उवादेया ॥ १ ॥ वंध, आसव, पुण्य अने पाप ए चार तन्त्व त्याग करवा योग्य छे, जीव अमे अजीव तन्त्व जाणवा योग्य छे, संवर,

(१७२)

निर्जरा अने मोक्ष ए त्रण तत्त्व आदरवा योग्य छे.

जीवो संवर निजर, मुखो च-सारि हुंति अरुवी, रुवी बंधासव-पुण्ण पावा,मिस्स हुंति अजीवो— जीव, संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए चार तन्त्र अरूपी छे. बंध, आस्रव, पुण्य अने पाप ए चार तन्त्ररूपी छे, अने अजीव तन्त्र रूपी पण छे, अने अरूपी पण छे. धर्म, अधर्म, आका, श अने काळ ए चार द्रव्य अजीव तथा अ-रूपी छे अने पुद्गल द्रव्य अजीव रूपी छे.

छ द्रव्यना अगीआर ११ सामान्य स्वभाव कहे छे.

१ आस्तिस्वभाव २ नास्तिस्वभाव ३

(१७३)

नित्यस्वभाव ४ अनित्यस्वभाव ५ एकस्व-भाव ६ अनेकस्वभाव ७ भेद स्वभाव ८ अभेदस्वभाव ९ भव्यस्वभाव १० अभव्य-स्वभाव ११ परमस्वभाव ए अगीआर सा-मान्य स्वभाव छे.

छ द्रव्यना दश विशेष स्वभाव कहे छे.

१ चेतन २ अचेतन २ मृतिं ४ अमृतिं ५ एक प्रदेश ६ अनेक प्रदेश ७ शुद्ध ८ अशुद्ध ९ विभाव १० उपचरित स्वभाव ए दश विशेष स्वभाव छे. ते श्री केवळी भगवान केवळज्ञानथी जाणे छे अने देखे छे ए दश विशेष स्वभाव ते कोइक द्रव्यमां छे. अने कोइ द्रव्यमां नथी. ए सर्व स्वभाव सिद्ध भगवान ज्ञानवहे जाणी रह्या छे. एवा अनंत गुणी सिद्ध भगवान समान पौताना आ-

(१७१)

त्माने जाणी उपादेय करी ध्यावे, तेने सम-कित जाणवुं.

चउदराज लोकनो खंध लोकाकाश सा-दिसांत छे. ते आवी रीते के लोकना मध्य भागे आठ रुचक प्रदेशथी मांडीने सादि छे. अने चउदराज लोकनो अंत आवे त्यां सांत तथा एक चउदराज लोकनो छेलो प्रदेश मु-कीने पछे अलोकनी आदि लेवी, पण अ-लोकनो अंत नथी. माटे सादि अनंत कह्यों छे.

छ द्रव्यना यथार्थ ज्ञानपूर्वक पांच द्रव्य-नो त्याग परिणाम अने जीव द्रव्य आदरवानो परिणाम तेने समिकत ज्ञान कहे छे. ते सम-कित ज्ञानथी भछंज थाय छे. कहां छे के-नायम्मि गिन्हियव्वे अगिह्नियव्वेअ इच्छ

(१७५)

अच्छिम जइवमेवइजो सोउपएसो तओनाम. भावार्थ-ज्ञानथी छ द्रव्य जाणीने आदरवा योग्य होय ते आदरे. अने त्यागवा योग्य त्याग करे. एवो जे ते नय उपदेश जाणवो.

इवे समिकतनी दशरुचि कहे छे.

१ निसर्गरुचि ते निश्चयनये जीवादि नवतन्त्व जाणे. आस्रवने त्यागे अने संवरने सेवे, वीतरागनां कहेला छ द्रव्यने द्रव्य, क्षेत्र, काळ, अने भावथी जाणे, नामादि चार निक्षेपा जिनाज्ञा पूर्वक पोतानी बुद्धि-थी जाणे, सदहे. वीतरागे कहेला भाव सत्य छे, एम जाणवुं ते सम्यक्त्व छे.

२ उपदेशरुचि-नवतत्त्व तथा छ द्रव्यने गुरु उपदेशथी जाणीने सदहे ते.

३ आज्ञारुचि-वीतराग भगवंते कहे-

(१७६)

ली आज्ञानुं मान्यपणुं तेने आज्ञारुचि कहे हे.

४ सूत्रहाचि—वर्तमानकालमां विध-मान, पिस्तालीश आगमादि मूलसूत्र, तथा निर्धुक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका ए पंचांगीनां वचन माने ते जीव सूत्रहाचिमंत कहेवाय छे. आगम भणवानी तथा सांभळवानी धणी चाहना होय ते सूत्रहाचि जाणवी.

५ बीजरुचि-गुरु मुख्यी एक पदनो अर्थ सांभलीने अनेक पद सद्दे. ते बीज-रुचि.

६ अभिगमरुचि-सूत्र-सिद्धांत अर्थ सहित जाणवानी इच्छाने अने अर्थ विचार सां-ळवानी पणी चाहनाने अभिगमरुचि कहे छे.

७ विस्ताररुचि-पड्द्रव्यना गुणपर्याय-

(१७७)

ने चार प्रमाण तथा सातनये विस्तारथी जाणवानी रुचिने विस्ताररुचि कहे छे.

८ क्रियारुचि-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय, वैयावच, समिति, ग्रिप्ते, चरण सित्तरी अने करण सित्तरी सहित, आत्म-धर्म साथे जे रुचि तेने क्रियारुचि कहे छे.

९ संक्षेपरुचि-अर्थझान थोडुं कहे छते घणुं जाणीने कुमातिमां पडे नहीं, ते संक्षेप-रुचि जाणवी.

१० धर्मरुचि-पांच अस्तिकायनुं स्व-रूप जाणवानी तथा श्रुतज्ञाननो स्वभाव अंतरंग सत्ता सदद्दवानी रुचिने धर्मरुचि कहे छे समिकतना सदशट बोल जाणी, आदरे, ते जीव समिकती कहेवाय छे. हे भन्यो! पूर्व पुण्ययोगे मनुष्य जन्म पाम्या

(१७८)

छो, माटे गुद्धदेव, ग्रुद्धगुरु, अने ग्रुद्धधर्म तेने आदरो. सामायक-पूजा, प्रभावना, पडिकमण, पोसह, श्रावकनां बारत्रत, सा-धुनां पंचमहात्रत, तीर्थयात्रा, सद्गुरुवाणी, जीर्णोद्धार अने ग्रुद्धित्रयानो खप धर्मकर-णीने हृदयमां धारण करो के जेथी अनुक्रमे शिवसुख पामो.

> समिकितनुं स्वरूप. । तत्त्वार्थश्रद्धानंसम्यगृदर्शनम् ॥ (तस्वार्थसूत्र)

देवत्वधीर्जिनेष्वेव,मुमुक्षुषुयुरुत्वधीः धर्मधीराईतांधर्मे,तत्स्यात्सम्यक्त्व-दर्शनम् ॥ १ ॥ (उपदेशमासाद)

(१७९)

भावार्थ-राग द्वेषने जीतनारा जिन क-हेवाय छे ते नामजिन, स्थापनाजिन, द्रव्य-जिन. अने भावजिन एम चार प्रकारे जिन छे. ते जिनेश्वरोमांज देवबुद्धि राखवी तथा भव (संसार) थकी पोताना आत्माने मुक्त करवाने इच्छनार जे मुम्रक्ष पुरुषो तेमांज गुरु-पणानी बुद्धि राखवी, तेमज दुर्गतिमां पड-ता जीवोने धारण करनार जिनेश्वर प्रणीत धर्ममां धर्मपणानी श्रद्धा राखवी तेने सम्य-ग्दर्शन कहे छे. ते सम्यक्त्व स्वभावथी अथवा गुरुना उपदेशथी एम वे प्रकारे प्राप्त थाय छे.

स्वभावथी एटले गुरु विगेरेना उपदेश-नी अपेक्षा रहित स्वभावथी (क्षयोपश्रमथी)

(१८०)

जे प्राप्त थाय छे तेने निसर्ग सम्यक्तव कहे छे अने गुरु उपदेशथी जे सम्यक्तव थाय छे तेने अधिगम सम्यक्तव कहे छे.

न्याय्यश्चसित सम्यक्तेऽणुत्रतप्र-सुखप्रहःजिनोक्तत्त्वेषुरूचिः शुद्ध-सम्यक्त्व मुच्यते ॥ अंतोमुहुत्तमि-त्तंपि, फासिय हुज्जजेहिं सम्मत्तं' ते-सिंअवहुपुग्गल-परियद्दोचेवसंसारो॥ सम्मदिठीजीवो,गच्छइनियमावि-माणवासीसु जइनविगयसम्मत्तो, अहवनबद्धाउओ पुठिंव ॥

(१८१)

सम्यक्त्व पाप्त करनार त्रणकरण करे छे. त्रण करणनुं स्वरूप.

(१) अनादिकाळथी चाल्या आवता संसाररूप सागरमां पडेलो पाणी, भव्यत्व-ना परिपाकयोगे पर्वतपरथी नदीमां पढेला पध्यरना न्याये (ते पध्यर अथडातो क्रटातो गोळ थाय छे तेम) अनाभोगपणाथी यथा प्रवृत्तिकरण करे छे. अध्यवसाय विशेष रूप ते यथा प्रवृत्तिकरण छे. तेवहे एक आयुकर्म विना "आयुवर्जित साते कर्मनीजी; सागर कोडाकोडी हीणरे, स्थिति पढम करणेक-रीजी; वीर्य अपूरव मोगर लीधरे ॥ सम-कित ।। ? ॥ " " बीजा ज्ञानावरणीयादि सात कर्मोंने पल्योपमना असंख्यातमा भागे

(१८२)

न्यून एवा एक सागरोपम कोटाकोटिनी स्थितिवाळा करे छे. अहींया जीव कर्मथी उत्पन्न थएल अत्यंत निविड रागद्वेषना परिणामरूप कर्कश अने दुर्भेद्य एवी ग्रंथि सुधी आवे छे. आ ग्रंथीदेशसुधी तो अभव्यजीवो चारित्र लड्डने पण संख्याती वा असंख्यातीवार आवे छे. आ यथा प्रदृत्तिक-रणनो काळ अंतर्सुहूर्तनो जाणवो.

अनाद्यनन्तसंसाराऽऽ वर्त्तवर्त्तिषुदे-हिषु । ज्ञानदृष्ट्यावृत्तिवेद-नीया-न्तरायकर्मणाम् ॥१॥ सागरोपम-कोटीनां,कोटय स्त्रिंशत्परास्थितिः। विंशतिगींत्रनाम्नोश्च मोहनीयस्य-

(१८३)

सप्ततिः ॥ २ ॥ ततोगिरिसरिद्माव घोलनान्यायतः स्वयम् । एकाब्धि-कोटिकोट्यूना, प्रत्येकंक्षीयते स्थि-तिः ॥३॥ शेषाब्धिकोटिकोटयन्तः स्थितौसकलजन्मिनः यथा प्रवृत्ति-करणाद्म्रन्थिदेशंसिमर्यति॥४॥रा-गद्वेषपरीणामो दुर्भेदोयन्थिरुच्यते। दुरुच्छेदोद्दढतरः काष्टादेरिवसर्वथा ॥५॥ यन्थिदेशंत्रसंप्राप्ता रागादि-प्रेरिताः पुनः । उत्कृष्टबन्धयोग्याः स्य श्रुतुर्गतिजुषोऽपिच ॥६॥

(२) अपूर्वकरण=पूर्वे कोइ पण वखत

(\$28)

निह प्राप्त थएला एवा आत्माना परिणाम थाय छे ते परिणामवडे रागद्वेषनी जे गांठ छे के जे समकित पामवामां अंतरायभ्रत छे ते गांठने छेदी शकाय छे, अहींयां भव्य-जीव रसघात-स्थितिघात-गुणश्रेणि अने अपूर्वबंध ए चार वानाने करे छे तथा अ-नंतानुबंधी कषायना जे दलीयाओ उदय आव्या छे तेने क्षय करे छे अने जे हवेपछी थोडा वखतमां उदयमां आववाना छे, तेनी उदीरणा करीने उदयमां लावी उपशमावे छे, क्षय करे छे. आ अपूर्वकरणनो काळ अंत र्म्रहर्तनो जाणवो.

तेषांमध्येतुयेभव्या भाविभद्राः श-रीरिणः आविष्कृत्यपरंवीर्य मपूर्व-

(१८५)

करणेकृते ॥७॥ अतिकामन्तिस-हसा। तंत्रन्थिदुरातिकमम् । अति-कान्तमहाध्वानो घट्टभूमिश्मिवा-ध्वगाः ॥ ८॥

(३) अनिष्टत्तिकरण=जे करण याने वीर्य-शक्ति प्राप्त थया बाद जेनी निष्टात्ति थती नथी अथीत् सम्यक्तव प्राप्त थया विना जेनी नि-द्वत्ति थती नथी। तेने अनिद्वत्ति करण कहे छे आ करणना केटलोक काल गये थके अने एक भाग बाकी रहे थके मोटी जे स्थिति तेना बे विभाग करे छे. एक नानी स्थिति अने बीजी मोटी स्थिति. नानी स्थितिने आ करणमां भोगवी क्षय करे छे अने मोटी स्थितिमांथी जे दलीयाओ थोडा स-

(१८६)

मय पछी उदय आववाना छे तेनी उदीरणा करी उदयमां लावी (एटले नानी जे स्थि-ति छे तेनी अंदर मेळवी भोगवी क्षय करे छे) आनी उदीरणा वे आवलीका वाकी रहे थके टळी जाय छे. अहींया मिध्यात्वना केटला-एक दलीयाओ क्षय थइ जाय छे. अहींयां पण जीव, रसघात-स्थितिघात, गुणश्रेणि अने अपूर्वबंध ए चारने करे छे. अहींयां जीव, अंतरकरण करे छे. शेष एक आव-लीका बाकी रहे थके त्रण पुंज करे छे. मि-ध्यात्वना चौठाणीया रसवाळा दलीयाओ छे ते<mark>मांना केटलाएकने उच्चपरिणामव</mark>डे एकठाणीया करे छे अने केटलाएकने वे ठा-णीया अने त्रण ठाणीया रसवाळा करे छे. केटलाएक तेवाने तेवा चौठाणीया रसवाळा

(१८७)

दलीया रहे छे एटले ते रसने सत्तामांने स-त्तामां हीन करे छे. त्रण पुंज थया पछी जीव उपशम समकित पामे छे. आ करणनो अने उपशम समिकतनो काळ अंतर्ग्रहूर्त्तनो छे. त्रण करणने पांते जीव उपश्रम समकित पामे छे. उपशम समकितनो काळ पूर्ण थया पछी जो एकटाणीचा रसनो उदय थाय तो तेनं नाम समकित मोहनीय जाणवं, ते वहे क्षयो-पश्म समकित प्राप्त थाय छे. वे अथवा त्रण ठाणीया रसनो उदय थाय तो मिश्रमोहनीय जाणवी. ते वडे मिश्रसमित पामे छे, तेनाथी जीवने धर्ममां उदासीन वृत्ति थाय अने चौठाणीया रसनो उदय थाय तो मि-थ्याच्य मोहनीय जाणवी ते वडे जीव मिथ्या-च्वने पामे छे. कर्मग्रंथना मते संसारचक्रमां

(१८८)

मथम उपशम समिकत माप्त थाय छे अने सि-द्धांतना मते प्रथम क्षयोपश्चम समिकत माप्त थाय छे.

॥ अथानिवृत्तिकरणादन्तरकरणेकृते । मिथ्यात्वंविरलंकुर्युर्वेदनीयंयद्यतः ॥९॥ आन्तर्मुहृत्तिकंसम्यग्—दर्शनंप्राप्नुवन्तियत् , निसर्गहेतुकमिदं । सम्यक्श्रद्धानमुच्यते
॥१०॥ गुरूपदेशमालम्ब्य सर्वेषामपि देहिनाम् । यत्तत्सम्यग्श्रद्धानं
स्याद्धिगमजंपरम् ॥११॥

उपशमसम्यक्तव जीव ज्यारे अनंतानु

(१८९)

बंधी चोकडी तथा समिकत मोहनीय मिश्र-मोहनीय अने मिथ्यान्वमोहनीय ए सात प्र-कृतिने उपश्चमावे छे (शान्त करे छे) त्यारे तेने उपश्चम सम्यक्तव प्राप्त थाय छे.

तचानादिमिथ्यादृष्टेः करणत्रयपूर्वकमान्तर्मुहूर्त्तिकं चतुर्गतिकस्याऽपिसंज्ञिपर्याप्तपश्चेन्द्रियस्यजन्तोर्प्रान्थिभेदानन्तरं भवतीत्युकप्रायम् ॥ उवसमसेढिगयस्सउ,
होइउवसा मियं तु सम्मत्तं। जोवाअकयतिपुंजो । अखविअमिच्छोलहइ सम्मं ॥

(१९०)

क्षयोपशमसम्यक्त्व = अनंतानुबंधीनी चोकडी, मिथ्याच्चमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने समिकतमोहनीय ए सात प्रकृतिनो प्र-देशोदय अने समिकत मोहनीयनो प्रदेशोदय अने रसोदय जेमां होय तेने क्षयोपशम स-म्यक्त्व कहे छे.

कम्मगंथेसुधुवं । पढमोवसमी करेइ तिपुंजं! तव्वडीओपुणगच्छ-इ। सम्मे मिसंमि मिच्छेवा॥ उपशम सम्यक्त्वथी च्युत थतां जो जीव सम्बत्व मोहनीयने पामे छे तो तेने क्षयोप-शम सम्यक्त्वनी पाप्ति थाय छे. कर्मग्रन्थना मत प्रमाणे एम जाणवुं. सिद्धांतना मत प्र-माणे औपश्चामिक सम्यक्त्वथी च्युत अवश्य

(१९१)

मिथ्यात्वने पामे छे. उक्तं च कल्पभा-ष्ये-आलंबण मलहंती, जहसठा-णं न मुंचए इलिआ, एवंअकयति पुंजी । मिच्छंचिअउवसभीएइ ॥ मिच्छत्तंजमुइन्नं, तंखीणंअणुइअं-चउवसंतं। मीसीभावपरिणयं। वे-इजंतं खओवसमं ॥ तच्च सत्कर्म-वेदकमप्युच्यते. औपशमिककं-त्रसत्कर्मवेदनारहिमित्यौपशमिक-क्षायोपशमिकयोर्भेदः ॥

सास्वादन सम्यक्त्व-अनंतानुंबंधी क-षायना उदये उपशम समकित वमतां मि-ध्यात्व गुणस्थानक पाम्या पहेलां आंतरे

(१९२)

जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ आवली-का सुधी क्षीर वमन स्वाद सरखों जे भाव रहे छे तेने सास्वादन सम्यक्त्व कहे छे. सास्वादनं च पूर्वोक्तौपशमिक सम्यक्त्वात् यततो जघन्यतः सः मय उत्कर्षतश्च षडावितकायाम वांशेष्टायामनन्तानुबन्ध्युदयात्तद्द--मनेतदाखादरूपं यतः ॥ उवसम सम्मत्ताओ चयओमिच्छं अपाव-माणस्स सासायणसम्मत्तं तयंत-रालं मि छावलियं॥

वेदक सम्यक्त्व-अनंतानुबंधीनी चो-कडी मिथ्चात्व मोहनीय मिश्रमोहनीयने तहः

(१९३)

न क्षय करी सातमा गुणस्थानकमा सम-कितमोहनीनो छेछो ग्रास (भाग) भोगवे छे, उपजे छे तेने वेदकसम्यक्त्व कहे छे.

क्षपकश्रोणि प्रपन्नस्य चतुरन-न्तानुबन्धिषु मिथ्यात्वामश्रपुञ्ज-द्रये च क्षपितेषु सत्सु क्षप्यमाण सम्यक्त्वपुञ्जे तत्सम्यक्त्वचरम-क्षपणोद्यतस्य तच्चरमपुद्गलवेदन रूपम्॥

क्षपकश्रेणि अंगीकार करेलाने अनन्ता नुबंधी चार कषाय मिध्यात्व अने मिश्र ए छ प्रकृति क्षय करे छते अने सम्यक्त्व मोहनीय पुंज क्षप्यमाण करे छते सम्यक्त्व

(१९४)

मोहनीयना चरम पुद्रल वेदनरूप एक साम-यिक वेदक सम्यक्त जाणवुं.

क्षायिकसम्यक्त्व-अनंतानुवंधीनी चोकडी-मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने समिकतमोहनीय ए सात प्रकृतिनो वंध-उद्य, उदीरणा अने सत्तानो सर्वथा जेमां क्षय थाय छे तेने क्षायिक सम्यक्त्व कहे छे. पश्चसम्यक्त्वानां कास्त्रनियममाह

ननु सप्तकक्षये क्षायिकमित्यु-क्तत्वात् सित क्षायिके श्रीकृष्णवा-सुदेवः कथं तृतीयनरकावनीं ज-गाम श्रेणिकश्च प्रथमामिति । उ-च्यते-क्षायिकं द्वेषा शुद्धमशुद्धं

(१९५)

चेति तत्र श्रीकृष्णश्रेणिकयोरशुद्धं क्षायिकं तस्य सादिसपर्यवसितत्वा दिति न विरोधः।यदुक्तं श्रीनवपद-प्रकरणवनौ तथाहि क्षायिकस्य शुद्धाशुद्धभेदेन द्विभेदःवात् तत्रा-पायसद्रव्यविकला भवस्थकेवलि-नां मुक्तानां च या सम्यग्द्धिस्तच्छ-द्धं क्षायिकं तस्य च साद्यपर्यवसान-त्वान्नास्त्येव भंगो यदाह 'गंधहस्ती' भवस्थकेवलिनो द्विविधस्य सयो-गायोगभेदस्य सिद्धस्य वा दर्शनमोः हनीयसप्तकक्षयाविर्भृता सम्यग्ट-

(१९६)

ष्टिः सादिपर्यवसानेति या त्वपायस-हचारिणी श्रेणिकादेरिव सम्यगृह-ष्टिः तदशुद्धं क्षायिकं तस्य च सा-दिसपर्यवसानत्वादरित प्रतिपातो य-दुक्तं गंधहस्तिना तत्र या च अपाय सद्रव्यवर्तिनी अपायो मतिज्ञानांद्यः सद्रव्याणि शुद्धसम्यक्त्वदालिका-नि तद्वर्तिनी श्रेणिकादीनां च सद्र-भवत्यपायसहचारिणी ट्यापगमे 🏻 सा सादिः सपर्यवसाना चेति केवल-ज्ञानोत्पत्तौ अपायक्षये अपायः म-तिज्ञानांशः ततुक्षयेऽसौ भवति न

(१९७)

प्रथमकषायोदये तत्काले तदुद्या-भावात् तत्क्षये एव तस्योपपत्तिरि-त्यलं प्रसङ्गेन इति शुद्धाशुद्धं क्षा-यिकं द्विभेदं.

श्रीकृष्ण श्रेणिक वगेरेने शायिक सम्यक्तव हतुं. तेमने चारित्रनी क्रियाओपर अत्यंत राग होवाथी रोचक समिकत पण कहेवाय छे.

खीणे दंसणमोहे-तिविहंमि विभव-निआणभूअंमि ।

निपच्चवायमउलं-सम्मत्तं खाइयं होइ ॥१॥

कारक सम्यक्त तत्रकारकं सू-

(१९८)

त्राज्ञा शुद्धा क्रियेव, तस्या एव परगतसम्यक्त्वोत्पादकत्वेन सम्यक्त्वरूपत्वात् तदवच्छिन्नं वा सम्यक्त्वं कारकसम्यक्त्वं। एतच्च विद्युद्वचारित्रिणामेव ॥१॥

सत्राज्ञा शुद्धिकया तेज कारक सम्यक्त्व छे ते क्रियानेज परगत सम्यक्त्वोत्पादकपणावडे सम्यक्रूपत्व छे, ए हेतु
थकी तदविक्छिनसम्यक्त्वने कारकसम्यक्त्व कहे छे. विशुद्ध चारित्रवंतोने कारकसम्यक्त्व होय छे.

रोचक सम्यक्त-रोचयाति स-

(१९९)

म्यगनुष्ठानप्रवृत्तिं, नतु कारयती-ति रोचकम्, अविरतसम्यग्दृशां क्र-ष्णश्रेणिकादीनां ॥१॥

सम्यक् अनुष्ठाननी प्रवृत्तिनी रुचि क-रावे पण चारित्रनी प्रद्यात्ति करावी शके निह तेने रोचक सम्यक्त्व कहे छे देशवि-रत्यादि धर्मनी क्रियाओं रुचे पण ते करी शकाय निह कृष्ण श्रेणिकादिकनी पेठे.

दीपक सम्यक्त —दीपकं टयझ-किमत्यनर्थान्तरम् , एतच्च यः स्वयं मिथ्यादृष्टिरपि परेभ्यो जीवाजी-वादिपदार्थान् यथावस्थितान् टयन-क्ति,तस्याङ्गारमईकादेईष्टट्यम् ॥१॥

(२°0)

दीपकने व्यंजक सम्यक्त्व कहे छे पोते स्वयं जे मिथ्यादृष्टि जीव होय अने अन्योने यथावस्थित जीवाजीवादि पदार्थ समजावे छे तेने अंगारमईकनी पेठे दीपक सम्यक्त्व होय छे.

द्रव्यसम्यक्त्व—तत्र जिनोक्ततः त्वेषु सामान्येन रुचिद्रव्यसम्यक्-त्वेम्—त्यां जिनोक्ततःचोमां सामान्यथी जे रुचि थाय छे तेने द्रव्यसम्यक्त्व कहे छे-द्रव्यसम्यक्त्व ते भावसम्यक्त्वनुं कारण छे. कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी. द्रव्यसम्यक्त्व विना भावसम्यक्त्वनी माप्ति थती नथी. नामसम्यक्त्व, स्था-पनासम्यक्त्व, द्रव्यसम्यक्त्व अने

(२०१)

भावसम्यक्तव ए चार निक्षेपथी सम्य-क्त्व अवबोधवुं-द्रव्यसम्यक्त्वनी प्राप्ति बाद भावसम्यकत्वनी शाप्ति थाय छे, माटे द्र-व्यसम्यक्त्वना जे जे हेतुओ होय तेओनं अवलंबन करतां सर्व जीवोने साहाय्य आ-पर्वी. तथा सामान्यतः जेने सटवाइं जिणे सरभासिआई, वयणाई नन्नहा हुंति **इय बुद्धि जस्स मणे–सम्मत्तं निञ्च**लं तस्स ॥ एवी श्रद्धा होय तेने द्रव्यसम्यक्त जाणवुं.

भावसम्यक्त्व—नयनिक्षेपप्रमा-णादिभिरधिगमोपायो जीवाजीवा-दिसकळतत्त्वपरिशोधनरूपज्ञानात्म-

(२०२)

कं भावसम्यकत्वम्—परीक्षाजन्यः मितज्ञानतृतीयांशस्वरूपस्येव तस्यः शास्त्रे व्यवस्थापितत्वात्। तदाहुः सि-द्धसेनदिवाकरपादाः एवं जिणपन्नः ते, सदद्धमाणस्य भावओ भावे। पुरिसस्साभिणिबोहे—दंसणसहो ह-वइ वच्चो॥

नयनिक्षेपप्रमाणोवडे सर्वज्ञतत्त्वोनो अ-पायरूप जे बोध थाय छे. जीवाजीवा दिसकलतत्त्व परिशोधनरूप जे ज्ञान तेने भावसम्यक्त्व कथे छे. परीक्षाजन्य मित-ज्ञाननो त्रीजो अपायरूप जे भेद तेने भाव-सम्यक्त्व रूपे व्यवस्थापवामां आव्यो छे.

(२०३)

नयनिक्षेप प्रमाणोवडे पदार्थोना ज्ञान पूर्वक भावथी जिनेश्वरतत्त्वोनी जे श्रद्धा थाय छे तेने भावसम्यक्त्व कहे छे.

श्री हरिभद्रस्रि नीचे प्रमाणे कहे छे. जीवाइ नव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं, भावेण सद्दहंते अयाण-माणेवि सम्मत्तं ॥ १ ॥ अरिहं देवो-ग्रुरुणो, सुसाहुणो जिणमयं पमाणंच इच्चाइ सुहो भावो, सम्मत्तं बिंति जग-ग्रुरुणो । जिणवयणमेव तत्तं इत्य रुई होइ द्व्वसम्मत्तं । जह भावणाण स-खा, परिसुद्धं भावसम्मत्तं ॥

जिनवचन तेज तत्त्व छे**. सच्चमेव**-

(२०४)

जिणेहिं परणां जिनेश्वरे जे मरूप्युं छे तेज सत्य छे. एवी सामान्यरुचिने द्रव्यसम्यक्त्व कहे छे. नयानिक्षेप प्रमाण परिष्कृत विस्तार रुचिनुं भावसम्यक्त्व रूपे स्फ्रटपणुं छे. भा-वज्ञान श्रद्धा परिश्रद्धने भावसम्यक्तव जा-णवं. जे ज्ञानी नवतत्त्वोने नयनिक्षेप प्रमाण पूर्वक समजी शके छे तेने भावसम्यक्त्व प्रकटे **छे. सातनय चार निक्षेप** अने चार प्रमाणोथी षड्द्रव्य-नवतत्त्व आदिनुं विस्तार पूर्वक स्वरूप अवबोधी जे तत्त्वोनो निश्रय करवो तेने भावसम्यक्तव कथे छे.

व्यवहारसम्यक्त्व—ज्ञानश्रद्धाः नचरणैः सप्तषष्ठिभेदशींलनं च व्य-वहारसम्यक्त्वम्

(২০५)

ज्ञान श्रद्धा अने चरणथी सम्यक्त्वना सडसठ भेदनुं जे शीलन करवुं तेने व्यवहार सम्यक्त्व कथे छे. सम्यक्त्वना सडसठ बो-लनी सझायथी तेनुं विशेष स्वरूप अवलो-कवं. शुद्ध देवगुरु धर्मनी आराधना करवी, सिद्धान्तोनुं श्रवण करवुं, अने देवगुरुनुं पूज-न करवं वगेरे व्यवहारनो व्यवहारसम्य-क्त्वमां समावेश थाय छे. जैन थवानां जे जे व्यवहार वडे कारणो छे तेओनी प्रवृत्ति वडे प्रवृत्त थवं तेने व्यवहारसम्यक्त्व कथ-वामां आवे छे. देवगुरु धर्मनी श्रद्धाने व्य-वहारथी जे धारण करवी तेने व्यवहार स-म्यक्त्व कहेवामां आवे छे-व्यवहारसम्य-क्तवथी जैन शासननी सेवा कराय छे. व्य-वहारसम्यक्त्वनुं शीलन करतां निश्चयस-

(२०६)

म्यक्त्व प्राप्त थाय छे माटे व्यवहार सम्य-क्त्व प्रदृत्तिनो आदर करवो. निश्चयसम्य-क्त्वना जे जे व्यवहारहेतुओं छे तेनी रुचि प्रदृत्तिने व्यवहारसम्यक्त्व कहे छे.

निश्चयसम्यक्त-

निच्छयओ सम्मत्तं, नाणाइ मय-प्पशुद्धपरिणामो, इअरं पुण तुह स-मए, भणिअं सम्मत्तहेन्रहिं॥

निश्चयतो ज्ञानादिमयात्मशुद्ध-परिणामः निश्चयसम्यक्त्वम् ॥

निश्चयथी ज्ञानदर्शन चारित्रमय आत्म ग्रुद्धपरिणामने निश्चयसम्यक्तव कहे छे. ज्ञानदर्शन अने चारित्रसंछालितपरिणामने

(২০৬)

निश्रयसम्यक्त्व कहे छे तथा एने भावचारि-त्र कहे छे. भावचारित्रने निश्चयसम्यक्त्व के-वी रीते कहेवाय ? तेना उत्तरमां जणाववा-मां आवे छे के भावचारित्रस्येव नि-श्चयसम्यक्त्वरूपत्वात् निश्चयसम्यक्त्वरूपत्व छे. अतएव मिथ्या-चारानिष्टात्तिरूप कार्यनो तेथी सदभाव छे. जो आ प्रमाणे निश्चयसम्यक्त्वनं स्वरूप कहेतां श्रेणिक कृष्ण वगेरेने निश्रयसम्य-क्त्व घटी शके नहि ? उत्तरमां कहेवानुं के श्रेणिककृष्णादिकने निश्चयसम्यक्त्व नथी. अप्रमत्तसंयतानामेव तद्व्यवस्थितेः सातमा गुणस्थानकवर्ति अममत्त साधुओने निश्चयसम्यक्त्व होय छे. कारण के सातमा गुणस्थानकवर्ति अपमत साधुओने शुद्धात्म

(२०८)

शानदर्शन चारित्र परिणति होय छे.आचा-रांगसूत्रमां अप्रमत्त साधुओने निश्चयसम्य-क्त्व कथ्युं छे. तस्पाठः—

जं सम्मंति पासह, तं मोणंति पासह, जं मोणंति पासह, तं सम्मंति-पासह ॥१॥ ण इमं सकं सिढिले-हिं अदिज्ञमाणेहिं गुणासाएहिं वं-कसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसं-तेहिं मुणी मोणं समादाय, धुणे क-म्मसरीरगं, पंतलूहं च सेवंति धीरा सम्मत्त दंसिणोत्ति ॥ १॥

जे सम्यक्त्व छे ते चारित्र छे, अने जे चारित्र छे ते सम्यक्त्व छे. आ सू-

(२०९)

त्रनी टीका श्रीशीलांगाचार्ये करी छे तेमां अ-प्रमत्त साधुने निश्चयसम्यक्त्व कथ्युं छे. जे निश्चयसम्यक्त्व छे तेने भावचारित्र कथ्युं छे अने ते सातमा गुणस्थानकवर्ति साधु-ओने होय छे. ज्ञानी ध्यानी समाधिवंत सा-धुने निश्चयसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे.

विशुद्धचारित्रीयोने कारकसम्यक्त्व क-ध्युं छे पण ते बाह्य चारित्र क्रियारूप छे अने निश्चयसम्यक्त्व तो आत्मानी शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र परिणति रूप छे माटे कारकसम्यक्त्व अने निश्चयसम्यक्त्वमां ए प्रमाणे भेद जाणवो. निश्चयसम्यक्त्वने आश्रयी सिद्धान्तोमां प्रश्मादिनुं स्रक्षणपणुं कथ्युं छे. अप्रमत्त साधुओने जेवुं अत्यंत ज्ञानादि शुद्धात्मपरिणाम वडे निश्चय सम्य-

(२१०)

क्त्व प्राप्त थाय छे तेवुं कृष्ण अने श्रेणिक वगेरेने निश्चयसम्यक्त्व घटतुं नथी. कारणके तेओमां निश्चयसम्यक्त्व लक्षणोनी उत्पत्तिनो अभा-व छे. चोथागुणस्थानकमां क्षायिकसम्यक्त्व प्राप्त थड शके छे परंत भाव चारित्ररुप निश्रय सम्यक्त्व के जे भावचारित्र स्वरूप छे तेज चो-था ग्रुणस्थानकमां प्राप्त थइ शकतं नथी. दीक्षा-चारित्र लेवानो जे हृदयमां भाव थाय छे तेने भावचारित्र कहेवामां आवतुं नथी, परंतु आत्मा ज्यारे दीक्षा अंगीकार करी साधुनां त्र-तो पाळतो छतो सातमा अप्रमत्त गुणटाणाना विश्रद्ध ज्ञान दर्शन चारित्रपरिणाम वडे प-रिणमे छे त्यारे तेने भावचारित्रनी पाप्ति कथवामां आवे छे अने ते भावचारित्र रूप मौनने निश्चय सम्यक्त्व कथवामां आवे छे.

(२११)

श्री हरिभद्रसूरिए एज प्रमाणे कहुं छे. निच्छयसम्मत्तं वाहिगिच सुत्तभ-णिअनिउणरूवं तु । एवं विहो णि-ओगो--होइ इमो हंत वण्णुत्ति ॥

ज्ञानादिमय इत्यस्यायमर्थः ज्ञा-ननये ज्ञानस्य दशाविशेष एव स-म्यक्त्वं क्रियानये च चारित्ररूपं, द-र्शननये तु स्वतन्त्रं व्यवस्थितमेव. इति ॥ शुद्धात्मपरिणामग्राहिनिश्च-यनये तु

आत्मैव दर्शनज्ञानचारित्राण्य-थवायतेः यत्तदात्मक एवेष-शरीर-

(२१२)

मधितिष्ठति ॥

आ प्रमाणे निश्चयनय सम्यक्त्वतुं स्व-रूप अवबोधवुं. शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र प-रिणति रूप आत्मा तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. बाह्य रागादि संकल्प विकल्प रहित निरुपा-धिमय शुद्धात्म बोध स्थिरता, लीनता तन्मय परिणति तेज निश्चय सम्यक्त्व अवबोधवुं.

आगमसारकर्ता देव-गुरु अने धर्मनी
श्रद्धाने व्यवहारसम्यक्त्व कहे छे अने आत्मा तेज देव, आत्मा तेज गुरु अने आत्मा
तेज धर्म एवी श्रद्धाने निश्चयनय सम्यक्त्व
कथे छे. पश्चोत्तररत्निंतामणिमां शेठ अनुपचंद मछुकचंद जण।वे छे के उपश्चम सम्यक्त्व-क्षयोपश्चम सम्यक्त्व अने क्षायिक
सम्यक्त्व तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. आ प्र-

(२१३)

माणे तेओ निश्चयसम्यक्त्वनी व्याख्या करे छे पण तेनो भवचनसारोद्धारवृत्ति-नव-पट प्रकरणवृत्ति-धर्मसंग्रहवृत्ति-आचारांगसूत्र टीका वगेरेमां कथेला निश्चय सम्यक्त्वनी साथे मतभेद देखाय छे. नवपदनकरणदृत्ति. धर्मसंग्रह वगेरेमां शायिक समकितने निश्रय समकितथी भिन्न गण्युं छे अने श्रेणिकने क्षा-यिक सम्यक्त्व छतां निश्चय सम्यक्त्व नथी एम स्पष्ट कथ्युं छे. आगमसारना कत्तीनी जे निश्चय सम्यक्त्वनी व्याख्या करी छे ते पण उपरनी व्याख्याथी भिन्न पडे छे तो पण अनुभवनी अपेक्षाए अप्रमत्त साधुओने जे निश्चय सम्यक्त्व कथ्युं छे तेनी साथे सं-बंध कथंचित वंधवेसतो आवे छे. अप्रमत्त साधुओ, निश्चयनयनी अपेक्षाए पोताना आ-

(२१४)

त्माने देव-गुरु मानीने अने तेने ग्रद्ध धर्म-रूप मानीने ते सत्ताए तेनुं ध्यान करे छे तेथी तेओने शुद्धात्मज्ञानपरिणतियोगे निश्चय सम्यक्त होय छे. मारो आत्मा तेज देव गुरु धर्मरूप छे एवं वर्तनमां मुकीने तेनो वास्तवि-क ग्रुद्धात्म अनुभव निश्चय करवो ते अपमत्त दशा विना अन्य के जे नीचेना गुणस्थानकोमां रहेला जीवो छे तेओने आवी शके नहि एम अनुभवनिश्रय शुद्धात्मा परिणतिए तेनो भावार्थ समजी निश्चय सम्यक्त्वमां ते व्या-च्या समावेश करी मतभेद दूर करी शकाय छे. श्रीमद् देवचंद्रजीए जे दृष्टिथी निश्चयनय सम्यक्तवनं लक्षण कथ्यं छे तेनो सत्य भा-वार्थ तो तेओ जाणे. परंतु सापेक्ष दृष्टिए सिद्धान्त शैलीए ए प्रमाणे घटावतां तेमना कथनमां विरोध जणातो नथी. देव गुरु अने

(२१५)

धर्मरूप जेनो आत्मा परिणम्यो छे अने तेनो छुद्धानुभव करीने आत्मानी छुद्ध इा-नादि परिणतिने सेवे छे तेने निश्चय सम्य-क्त्व प्रगटे छे एवो वास्तविक अनुभवार्थ प्रहतां सापेक्षत्व व्याख्याए निश्चय सम्यक्त्व प्रहाय छे.

सम्यक्त्व.

संख्यात वर्षायुष्क संज्ञि पंचेन्द्रिय ति-यँचो तथा स्त्रीओ तथा भवनपति व्यंतर ज्योतिषोने क्षायिक समिकत नथी। तेओ-ने ते भवमां क्षायिक सम्यक्त्व उप्तन्न थतुं नथी। संख्याता वर्षायुष्कवाळा मनु-च्यने क्षायिक सम्यक्त्वनो आरंभ थाय छे माटे संख्याता वर्षायुष्कवाळा संज्ञिपंचे-

(२१६)

न्द्रिय तिर्यंच स्त्रीओ अने उपर्युक्त त्रण प्र-कारना देवताओने पारभविक क्षायिक स-म्यक्त्व पण होतं नथी. कारणके क्षायिक सम्यक्द्षष्टिनो तेओमां उत्पाद थतो नथी. उपर्युक्त संख्यातायुष्कसांज्ञिपंचेन्द्रिय तिर्येच स्त्रीओ तथा त्रण प्रकारना देवताओने उपश्रम अने क्षयोपश्रम सम्यक्त्व थाय छे. एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अने असंज्ञिपश्चोन्द्रिय जीवोने ते भव वा परभवनी अपेक्षाए त्रण सम्यक्त्वमांथी एक पण सम्यक्त्व होतुं नथी. बादर, ए-थ्वी. जल, वनस्पति, द्वित्रिचतुरिन्द्रय जीवो अने असंज्ञिपंचेन्द्रियोमां पर्याप्ताव-स्थामां पारभविक सास्वादन सम्यक्त्व अने पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रियमां ताद्भविक पमाय

(२१७)

छे. सुक्ष्म एकेन्द्रिय बादर तेज वायुमां स-म्यक्त्वलेक्यावंतीना उत्पादनो अभाव माटे सास्वादन तेओमां नथी ए कार्मग्रन्थि-क अभिपाय छे. सुत्राभिप्रायवडे तो पृथि-वी आदि एकेन्द्रियोने सास्वादन ^{नथी} यदुक्तं प्रज्ञापनायाम्, पुढ काश्याणं पुच्छा गोयमा इया नो सम्मदिद्वी नो सम्मामि-च्छिदिही एवं जावणप्पइकाइया-॥ इति प्रवचनसारोद्धारे १४९ द्वारे॥ पश्च सम्यक्त्वानां कालानियममाह-

अंतमुहूत्तोवसमो, छावछिसासा-णवेयगोसमओ, साहियतित्तींसायर-खझ्यो दुग्रणो खओवसमे ॥

(२१८)

उपशमनो अन्तर्भुहूर्त काल छे सास्वादन-नो उत्कृष्ट छ आविलका मात्र, समय मात्र वेदक क्षायिकनो तेत्रीस सागरोपम अने क्षयोप-शमनो सासठ सागरोपमनो काल जाणवो. सर्वार्थसिद्धादिनी अपेक्षाए क्षायिक सम्य-क्त्वनी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति जाणवी. बावीस सागरोपम स्थितिवाला देवपणे त्रण वार उत्पन्न थवाथी क्षयोपशम सम्यक्त्वनो छासठ सागरोपमनो काल सिद्ध थाय छे अने तेमां नरभवनुं आयुष्य अधिक जाणवुं.

उक्कोसं सासायण-उवसमिया हुंति पंचवाराओ, वेयग खयगा इ-क्किस-असंखवारा खओवसमो ॥ आखा भवचक्रमां जीवने सास्त्रादन

(२१९)

अने उपशम सम्यक्त्व पांच वार उत्पन्न थाय छे. वेदक अने क्षायिक सम्यक्त्व एक-वार उत्पन्न थाय छे अने क्षयोपशम सम्य-क्त्व असंख्यवार उत्पन्न थाय छे.

बीयग्रुणे सासाणो–तुरियाइसु-अद्विगार चउचउसु, उवसमगखय-गवेयग–खाओवसमा कमा हुंति ॥

वीजा गुणस्थानकमां सास्वादन सम्य-क्तव छे. चोथाथी अगियारमा सुधी उपशम सम्यक्तव छे. चोथाथी सातमा सुधी वेदक अने क्षयोपश्चम सम्यक्तव छे तथा चोथाथी अयोगी पर्यंत क्षायिक सम्यक्तव छे.

वेदकं चैव सम्यक्त्वं क्षायोपश-मिकं तथा, इति पौद्गछिकान्याहुः

(२२०)

पीडानुमहशाक्तितः॥

वेदक अने क्षायोपश्चिमक सम्यक्त्वने पौद्गलिक कहेवामां आवे छे अने उपश्चम अने क्षायिकने अपौद्गलिक कहेवामां आवे छे उपशमक्षायिकसम्यक्त्वयोः पु-द्गलवेदनस्य सर्वथैवाभावात्.

चार गतिमां संज्ञिपर्याप्त पंचेन्द्रिय जी-वने प्रथम सम्यक्तवनो लाभ थाय छे.

उपश्चम सम्यक्त्वथी च्युत जीव क्षयोप-श्चम दृष्टि-मिश्रदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि थाय छे. सिद्धांतना मत ममाणे अनादि मिथ्यादृष्टि जीव, तथाविधसामग्री सद्भावे अपूर्व क-रण वडे त्रण पुंज करीने शुद्ध पुद्गलोने वेद-तो छतो उपश्चम सम्यक्त्व पाम्या विनाज

(२२१)

क्षायोपशमसम्यग्दष्टि थाय छे. ते प्रथम क्षयोपश्चम सम्यक्तवने पामे छे. अन्य तो एम अन्यस्तु यथाप्रवृत्ति करणत्रयक्रमेणाः तरकरणे उपशम-सम्यक्त्वं लभते पुञ्जत्रयं त्वसी न करोत्येव ततश्चौपशमिकसम्यक्-त्वाच्च्युतोऽवइयं मिथ्यात्वमेव याति यथाप्रहत्तिकरणादि त्रणना अनुक्रमे अन्तरकः रणमां उपशम सम्यक्त्व पामे छे अने जीव. त्रण पुंजने नथी करतो ततः पश्चात उपश्चम सम्यक्त्वथी चवेलो अवश्य मिथ्यात्वने पामेछे.

प्रथम सम्यक्त्व पामे छे तो कोइ जीव सम्यक्त्वनी साथे देशविरति वा सर्वविरति-पणुं पामे छे. सास्वादन सम्यक्त्वी कंइ पण **(२**२२)

पामतो नथी.

उक्तं च शतकबृहचूर्णी—

उवसमसम्मदिद्वी-अंतरकरण-ठिओ कोइ देसविरयंपि लंभइ कोइ पमत्तभावांपि ॥ सासाइणो न किंपि लहे इति ॥

पुंजत्रयसंक्रमश्च कल्पभाष्ये ए-वमुक्तः मिथ्यात्वद्किकान् पुद्गला-नाकृष्य सम्यग्दिष्टः प्रवर्धमानपरि-णामः सम्यक्त्वे मिश्रे च संक्रमयित। मिश्रपुद्गलांश्च सम्यग्दिष्टः सम्यक्-त्वे मिथ्यादृष्टिश्च मिथ्यात्वे सम्यक्-

(२२३)

त्वपुद्गलांस्तु मिथ्यात्वे संक्रमयति न तु मिश्रे ॥

पवर्धमानपरिणामी सम्यग्दृष्टिजीव, मिथ्यात्व पुद्रलोने आकर्षी सम्यक्त्वमां अने
मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे. सम्यग्दृष्टि जीव,
मिश्र पुद्रलोने सम्यक्त्वमां संक्रमावे छे अने
मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे
तथा मिथ्यादृष्टि, सम्यक्त्व पुद्रलोने मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे पण मिश्रमां नहीं.

मिच्छत्तंमि अर्खीणे—तिपुंजा सम्म-विट्ठिणो नियमा खीणंमि उमिच्छ-त्ते—दुएगपुंजी व खवगोवा ॥ भिथ्यात्व अक्षीण थये छते सम्यग् दः-

(२२४)

ष्टियो, नियमा त्रिपुंजवाळा होय छे. मिथ्या-त्व क्षीण थये छते बे पुंजी होय छे अने मिश्र क्षीण थये छते एक पुंजी होय छे अने सम्यक्त्व मोहनीय क्षीण थये छते क्षायिक सम्यक्तवंत थाय छे.

सम्यक्त्वपुद्रला अशोधितमदनको द्रवस्थानीया विरुद्धतेलादिद्रव्यक-हपेन कुतीर्थिकसंसर्गकुशास्त्रश्रवणा-दिमिथ्यात्वेन मिश्रिताः सन्तः तत्क्ष-ण एव मिथ्यात्वं स्युः यदापि प्रपतित सम्यक्त्वः पुनः सम्यक्त्वं लभते तदापि अपूर्वकरणेन पुञ्जत्रयं कृत्वा अनिवृत्तिकरणेन सम्यक्त्वं पुञ्ज एव

(२२५)

गमना दृष्टवयं । न तु तदा अपूर्व-करणस्य पूर्वलब्धस्यैव लाभात् कथं अपूर्वतेति चेदुच्यते अपूर्वमिवाऽपूर्व स्तोकवारमेव लाभादिति बद्धाःसेष्ठा-न्तिकमतं चैतत्-सम्यक्त्वप्राप्तावि-व देशविरतिसर्वविरत्योः प्राप्ताविष यथाप्रवृत्तापूर्वकरणे भवतो नत्वनि-वृत्तिकरणं,अपूर्वकरणाद्वासमाप्तावन-न्तर्समये एव तयोभीवात् । देशस र्वविरत्योः प्रतिपत्तेरनन्तरमन्तर्भुहुर्त्तं यावदवइयं जीवः प्रवर्धमानपरिणा-मस्तत अर्ध्वं त्वनियमः कोऽपि प्रव-

(२२६)

र्धमानपरिणाम एव कोऽपि स्वभाव-स्थः कोऽपि हीनपरिणामः ये चाभो-गं विनैव कथंचित परिणामहासाद्दे-शविरतेः सर्वेविरतेर्वा प्रतिपताते ता-स्ते अकृतकरणा एव पुनस्तां सभन्ते। ये त्वाभोगतः प्रतिपतिता आभोगे-नैव मिथ्यात्वं गतास्ते जघन्यतोंऽत-र्मुद्धर्तेनोत्कर्षतः प्रभूतकाले यथोक्त-करणपूर्वकमेव पुनस्तां ते लभनते इत्युक्तं कर्मप्रकृतिवृत्ती-॥

सैद्धान्तिक मत प्रमाणे विराधित सम्य-क्त्ववाळो जीव ग्रहण करेल सम्यक्त्वनी

(२२७)

साथे छट्टी नरक सुधी कोइ उप्तन्न थाय छे अने कार्मग्रन्थिक मतमां तो वैमानिकथकी अन्यत्र उत्पन्न थतो नथी. तेन गृहितेने-त्युक्तम्॥

मवचनसारोद्धारमां प्राप्त समकीति जीव तेना त्यागथी कर्मग्रन्थ मत प्रमाणे उत्कृष्ट स्थितिवाळी कर्मपकृतियोने बांधे छे अने सैद्धान्तिकमताभिप्रायथी भिन्न ग्रन्थीने उ-त्कृष्ट स्थितिबंध थतो नथी.

ग्रन्थि भेद करनारने अने उपशम श्रे-णिना पारंभकने उपशम सम्यक्त्व थाय छे.

क्षायिकसम्यक्त्वदृष्टि तृतीयभवमां चतुर्थ भवमां वा ते भवमां सिद्ध थाय छे. पूर्व भवनुं आयुष्य बांधीने जे क्षायिक स-

(२२८)

म्यक्त्वी थयो छे ते देवगति वा नरकगतिमां जाय छे तो त्यारे ते जीव तद्भवांतरित त्रीजा भवमां सिद्ध थाय छे अने पूर्व बद्धा-युष्क क्षायिक सम्यक्त्वी तिर्येच वा नरकग-तिमां जाय छे तो ते अवझ्याऽसंख्य-वर्षायुष्केष्वेव नतु संख्येयवर्षायुष्के-षु तद्भवानन्तरं च देवभवे ततो नृ-भवे सिद्ध्यतीति चर्तुथभवे मोक्षः अ-वश्य असंख्याता वर्षायुष्कोमां उपने छे पण असंख्याता वर्षायुष्कवाळाओमां नहि. ते भव पश्चात देवभवे अने त्यांथी मनुष्य भ-वमां सिद्ध थाय छे. जेणे पूर्व भवनुं आयुष्य बांध्युं नथी, एवो कोइ मनुष्य क्षायिक सम्य-क्त्व पामे छे तो ते तद्भवमां क्षपकश्रीण

(२२९)

आरोही सिद्ध थाय छे.

एक जीव अने नाना जीवनी अपेक्षाइ सम्यक्तवनो उपयोग जघन्यथी अने उत्कृ-ष्ट्रथी अन्तर्भुहूर्तनो जाणवो अने क्षायोपशम रूप तेनी लब्धितो एक जीवने जघन्यथी अन्तर्भुहूर्त अने उत्कृष्टतो नृभव अधिक छा-सठ सागरोपमनी होय छे. तेना उपर स-म्यकत्वथी अमच्युत जीव सिद्ध थाय छे. नाना जीवोने आश्रयी तो सर्वकाल जाणवो.

कोइ सम्यक्त्वनो त्याग करे छते पुनः तेना आवरणना क्षयोपश्चमथी अन्तर्ग्रहूर्च मात्रमां पुनः सम्यक्त्वने पामे छे माटे स-म्यक्त्वनुं अन्तर् जघन्यथीतो अन्तर्ग्रहूर्त छे अने आश्वातनामचुर जीवनी अपेक्षाए तो उन

(२३७)

त्क्रष्टथी अपार्ध पुद्रलपरावर्त जाणवुं. क-ह्यं छे के—

तिथ्थयरपवयणे सुअं आयरिअं गणहरं महहीअं आसायंतो बहुसो—— अणंतसंसारिओ होइ ॥

नाना जीवोनी अपेक्षाए तो सम्यक्त्वना आंतरानो अभाव छे.

परिपूर्ण चतुर्दश पूर्व वा दशपूर्वतुं परि-पूर्ण जेने ज्ञान छे तेने नियमाए सम्यक्त्व होय छे. बाकीना के जे किश्चिन्त्यून दश्च पूर्वधरो होय छे तेओने सम्यक्त्वनी भज-ना जाणवी. तेओने सम्यक्त्व होयवा मि- (२३१)

ध्यात पण होयः यदुक्तम् चोइसदसयअभिन्ने नियमासम्मं तु सेसए भयणा मतिओही विवचासोवि होंति भिच्छे नंउणसेसे ॥

अभिन्नदशपूर्वी अने अभिन्न चतु-र्दश पूर्वीने नियमाए सम्यक्त्व कह्युं छे, पण कयुं सम्यक्त्व ते स्पष्ट जणाव्युं नथी। अन्य ते थकी न्यूनपूर्वीओने भजना जाणवी। अभव्य दशपूर्व भिन्न द्रव्यश्चतनो चारित्र अंगीकार करी अम्यास करे छे, पण तेने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थती नथी। बाह्यचारित्र क्रियावळे अभव्यजीव नव ग्रैवेयक सुधी

(२३२)

जाय छे---

आ काळमां सम्यक्त्वनी प्राप्तिजेने थाय छे, तेने उत्तम भव्य जीव जाणवी. ॥ संमत्तंमि उ लखे, पलिअपुहुत्तेण सावओ हुज्जा । चरणोवसमख-याणं, सागरसंखंतरा हुंति ॥ सम्य-नत्व प्राप्त थया बाद उत्तर देशविरत्यादि ग्रणोनी प्राप्ति थाय छे, गुरुनी विनय भ-क्तिवडे जे आराधना करे छे, तेने सम्यक्त्व-नी प्राप्ति थाय छे. क्षयोपश्रमादि सम्यक्त्व योगे तीर्थंकर नाम बांधी शकाय छे. वीश स्यानकनी आराधना करनार जीव तीर्थ-कर नाम कमें बांधे छे. सम्यक्त प्राप्त थया पश्चात धर्मक्रियानी सफळता थाय छे.देव,गुरू,

(२३३)

धर्मनो रागी अने मध्यस्थ मन्दकषायी जीव सम्यक्त्वनी प्राप्तिनो अधिकारी बने छे. मा-गीनसारी जीव सम्यक्तवनी पाप्ति करवाने अधिकारी बने छे. जेना मनमां सम्यक्त्वनी पाप्ति माटे अत्यंत तीत्र जिज्ञासा होय, तेणे मार्गानुसारी प्रथम थवुं जोइए. मार्गानुसारी-पणुं आव्या बाद सम्यक्तवनी प्राप्ति थाय छे. आत्मज्ञानी आत्माना स्वरूपने अवबोधी आत्मानी ग्रद्ध गुण पर्यायमां रमणता करी समाधिवंत बनी अत्यंत अतीन्द्रिय आन-न्दना अनुभवे सम्यक्त्वनी प्राप्ति करे छे. आत्माना सहजानन्दनो ओघ ज्यां छे त्यां सम्यक्त्व छे. देशविरति अने सर्वविरति-ग्रण प्राप्त करवाने माटे जेने खास काळजी होय. तेणे प्रथम सम्यक्त्वनी पाप्ति कर-

(२३४)

वी. गीतार्थ आत्मज्ञानी ध्यानी सद्गुरुनां चरणकम्ल सेववाथी सम्यवत्वनी प्राप्ति थाय छे.

उपर प्रमाणे सम्यक्त्वना जे जे भेदों कहा छे, तेनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो एज उत्तम पुरुषोत्तुं कर्तव्य छे. आगमोनो नय निक्षेप प्रमाणोथी अनुभव करीने राग द्वेष रहित आत्माना समभाव स्वरूपमांपरिणमवुं एज परमसाध्य कर्तव्य छे.समभावे परिणमतां आत्मा केवल ज्ञान प्राप्त करी मोक्ष पामे छे.

सेयंवरो वा आसंवरो वा. बुद्धो वा अहव अन्नो वा समभावभावी अप्पा— लहइ मुकं न संदेहो॥

(२३५)

श्वेतांबर वा दिगंबर, बुद्ध अथवा अथवा वेदांती, वैदिक धर्मी, ग्रुसल्मान, स्त्रीस्ति व-गेरे गमे ते होयः परंत समभावे आत्माने भावी समभावे निश्चयतः परिणमी समभावी थाय छे ते मोक्ष पामे छे. ते कर्मावरणनो क्षय करी सम्यक्त्वादिने प्राप्त करी परिपूर्ण ग्रुण-मयी बनी सिद्ध बुद्ध परमात्मा थाय छे. सर्व सिद्धांतनो सार ए छे के सम्यक्त्वादिनी पाप्ति करी आत्माने समभावे भाववो. सम-भावे परिणमतां कषायनी मन्दताए अने क्षीणताए निसर्ग सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे सकल कर्मने निवारी परिपूर्ण श्चद्ध बने छे. समभावे परिणमतां सहजानन्दयोगे सम्मक्त्वनी पाप्तिनो अनु-भव करी शकाय छे.

(२३६)

आगमसार, नयचक्र आदि ग्रंथोनी सहायताथी ते ग्रंथोना अनुसारे भव्यजीवो-ना उपकारार्थ पड्द्रव्यविचारग्रन्थ व्यो छे. तेमां कांइ वीतरागनी आङ्गा विरुद्ध भाषण थयुं होय, लख्युं होय. ते त्रिविधे करी मिन्छामि दुक्दं दुउं छुं, आ ग्रंथमां विभ्रम चित्तथी कोइ दोष थयो होय तो ते सुधारवा पंडितपुरुषोए कृपा करवी. शुभे यथाशक्ति यतनीयं ए न्यायने अनुसरी में उद्यम कर्यों छे, तेथी हुं मारी महेनत परोपकार थये छते. सफल मानुं छुं, आ ग्रंथ पाडित पुरुषोने योग्य छे. आ ग्रंथ वांची व्यवहार मार्गे चाली हृदयमां निश्चय दृष्टि राखशे ते आत्मस्रख पामशे.

(२३७)

दुहा.

अध्यातमरस झीलवा, ए षड् द्रव्य विचारः जे भवी प्राणी धारको. ते लहेको स्रखसार १ जन्म मरणथी आतमा, रझळ्यो काळ अनंत; जिनवाणी षड् द्रव्यनी, स्रुणतां होवे संत. २ सात नयोथी आतमा, सप्तभंगीए धार; आत्मस्वरूप विचारशे, ते लहेशे भवपार, ३ ओगणीश अद्वावननी, विक्रम साल रसाल: फागुण मासनी पंचमी, रुडो शुकरवार. पादरा नगरे शोभता, शांतिनाथ भगवंत; पादपद्म तेना नभी, ग्रंथ कर्यो गणवंत. विनयवंत विवेकवंत श्रावक मोहनभाइ; हीमचंद स्रुत कारणे, ग्रंथ कर्यो सुखदायी. तपगच्छ गगन दिवाकरु, हीरविजय सुरिराय; सहेजसागर तासशिष्य, पदवी उपाध्याय. ७

(२३८)

पाट परंपर तेहनी, रिवसागर गुरुरायः सुखसागर शिष्य तेहना, विनयवंत कहाय.८ तास चरणने सेवतो, बुद्धि कहे छे एमः भणेगणे जे धारशे, ते पामे सुखक्षेम. ९ ज्यां लगे शशी भानु रहे, जगमां करे प्रकाशः तावत् भविजन भानुसम, थइने करो सुवास.१० ए षद् द्रव्य विचार ग्रन्थ, जिनवाणीथी रसालः भणशे गणशे ते भवी, लहेशे मङ्गलमाल.॥११॥

संपूर्णम्.

अ शान्तिः ३